हिन्दुस्थानका स्वातंत्र्य-संघर्ष

दाहर-पतनसे लेकर महात्मा गांधी-बलिदान तक

१२५ भागोंमें

प्रत्येक प्रमुख वीरके जीवनपर एक स्वतंत्र पुस्तक

राजस्थानी वीरोंका संघर्ष

पन्ना धाय

(ऐतिहासिक नाटक)

लेखकः—

श्री शिवप्रसाद 'चारण' एम. ए.

"Our immediate past must be studied with accuracy of detail as to facts and penetrating analysis as to causes if we wish to find out the true solutions of the problems of modern India and avoid the pit-falls of the past. The light of our fathers' experience is indispensably necessary for guiding aright the steps of those who would rule the destinies of our people in the present.

—Sir Jadunath Sarkar

प्रकाशकः—

महर्षि मालवीय इतिहास-परिषद्

उपासना-मंदिर, दुगड्डा (गढ़वाल)

मूल्य १।)

भूमिका

पातिव्रत, देशभक्ति, वीरत्व और त्यागकी दृष्टिसे हिन्दुनारियां संसारकी समस्त नारियोंमें अग्रगण्य रहीहैं। यूरोपियन साहित्यमें नारीकी सबसे विशद कल्पना हेलन और लूक्रेशी हैं। इनमें हेलन तो अपने पतिको त्यागकर अपने प्रेमीके साथ भागजातीहै और लूक्रेशी अतिथि द्वारा अपना सतीत्वहरण किएजानेपर छुरी-द्वारा आत्महत्या करलेतीहै। इस प्रकार हेलन और लूक्रेशी हिन्दुनारीके आदर्शके सन्मुख नहीं पहुंचपाती। पतिके प्राणोंकी रक्षाकेलिए सूर्योदयको रोकदेनेवाली शांडिली, यमराजके पाशसे पतिके प्राणको छुड़ालेआनेवाली सावित्री, प्रेमालाप करनेका साहसकरनेवाले परपुरुषोंको पक्षी बनादेनेवाली महाश्वेता जैसी देवियोंका वर्णन विश्वके अन्य किसी साहित्यमें नहीं मिलता। आजका अविश्वासी मनुष्य इसे कल्पनामात्र समझे, तो भी है यह विशद कल्पना मानवीको देवी-पदपर पहुचानेवाली कल्पना !

आजभी हिन्दुनारी अपने उच्च आदर्शपर स्थिर है। देश-धर्म की रक्षाकेलिये रणांगनमें जाकर युद्ध करनेवाली कर्मवती, दुर्गा और लक्ष्मीबाई, बलात्कारकेलिए प्रस्तुत अकबरके मस्तक पर लातमारनेवाली वीणा, और भीषण युद्धको रोकनेके लए हलाहल पानकरनेवाली कृष्णाकुमारी हिन्दु समाजनेही उत्पन्न कीहैं। महान् शिशोदियाकुलके वंशधरकी रक्षाकेलिए अपने पुत्रकी बलि अर्पित करदेनेवाली पन्ना धायके त्यागका उदाहरण विश्वके इतिहासमें दूसरा नहीं है।

इस नाटकमें जिस कथानकका वर्णन है, उसे लेकर लिखेहुए हिंदीमें दो अति उत्तम नाटक और हैं, 'राजमुकुट' और 'रक्षा-बन्धन'। रक्षा-बन्धन" में टाडके "राजस्थान"के आधारपर यह दिखायागयाहै कि चित्तौड़पर सुल्तानबहादुरका आक्रमण होनेपर

कर्मवतीने हुमायूंकेलिये राखी भेजीथी। वर्तमान ऐतिहासिक अन्वेषणोंसे यह असत्य सिद्ध होचुकाहै। हुमायूंने अपने विद्रोही सरदार मु० जमानमिर्जाको आश्रय देनेके कारण सुल्तान बहादुर पर आक्रमण कियाथा न कि कर्मवतीकी राखीसे प्रेरित होकर। कर्मवतीने हुमायूंकेलिए राखी नहीं भेजी। हुमायूंने जब यह सुना कि सुल्तान बहादुर काफिरोंके विरुद्ध जिहाद में संलग्न है, तो उसने जिहादमें संलग्न मुसलमान नरेशके ऊपर आक्रमण करना इस्लामके विरुद्ध समझा, और दो मास तक ग्वालियरमें रुककर जिहादकी समाप्तिकी प्रतीक्षा करतारहा।

यदि हुमायूं धार्मिक भावनाको भुलाकर राजनैतिक दृष्टिसे अपने हितका ध्यान रखकर चित्तौड़की सहायता करता तो चित्तौड़का उदार राजवंश सदाकेलिए मुगलोंका हितचिंतक रहता, विरोधी नहीं।

इस सम्बन्धमें अधिक जाननेकी इच्छा रखनेवाले पाठक श्री एस० के० बनर्जी लिखित "हुमायूं पादशाह" नामक ग्रंथ देखें।

भगवान करे हिन्दू जातिकी पुत्रियाँ अपने प्राचीन आदर्श पर स्थिर रहें।

शुद्धि-पत्र

प्रस्तुत पुस्तकमें कुछ अशुद्धियाँ रहगईहैं। विज्ञ पाठक कृपया शुद्ध करलें। साधारण अशुद्धियाँ स्वयं शुद्ध करनेकी कृपा करें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८१	१२	उदयसिंहका	चन्द्रका
१०३	२	पन्नाकी सन्देह या और	शीतलसेनीका संदेह या
११०	१४	शत्रुसे जा········	शत्रुसे न जा·····
११७	५	दुर्गमें; सुदृढ़ दुर्गममें	सुदृढ़, दुर्गम दुर्गमें

पात्र-परिचय

पन्ना धाय—उदयसिंहकी धाय माँ

जवाहरबाई—मेवाड़की महाराणी

कर्णवती—उदयसिंहकी माता

रुक्मणी—आशाशाहकी माता

शीतलसेनी—बनबीरकी माता

राधा—अर्जुनरावकी स्त्री

मालिनी—एक हिन्दू नारी

विक्रमादित्य—मेवाड़-सम्राट

बनवीर—विक्रमादित्यका चचेरा भ्राता (दासी पुत्र)

उदयसिंह—विक्रमादित्यका कनिष्ठ भ्राता

आशाशाह—कमलनेर-अधिपति

बाघजीरावल—देवल-अधिपति

कर्मसिंह परमार, कर्णसिंह,
अखिलराव शोनगड़े, साहीदास,
मालोजी, हरिसिंह सोलंकी } मेवाड़के सामन्त

रूद्र—मेवाड़का चारण

अर्जुनराव—हाड़ा वीर

चूकासेन ढुंढेरा—एक सैनिक

सुलतानबहादुर—गुजरातका बादशाह

आसफअली (सुप्तानन्द), रफीअहमद (गुप्तानन्द)—दो मुसलमान गुप्तचर

रूमीखाँ, सदरखाँ, लाबीखाँ (फिरंगी)—गुजरातके सेनापति

पृथ्वीराजका प्रेतात्मा, सूर्यमल्लका प्रेतात्मा

सेवक, दूत, सैनिक, नागरिक, द्वारपाल आदि।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पन्ना धाय

अङ्क १

दृश्य १

स्थान—चित्तौड़, रजमार्ग

[*पेड़के नीचे आंख मूदंकर लेटाहुआ आसफअली (स्वामीसुप्तानन्द)। एक ओर जलतीहुई धूनीके पास चिलम, कमंडल, चिमटा और खड्ग; दूसरी ओर फूल, फल, बतासे रुपए-पैसोंके ढेर।*]

नेपथ्यमें—कोलाहल,'लूटडाला, लूटडाला'। 'पीछाकरो''पीछाकरो' 'बचाओ' बचाओ' आदिका तुमुल नाद।

(*भाले, खड्ग, लट्ठ आदि लेकर नागरिकोंका प्रवेश*)

प्र० नागरिक—माहीर लुटेरे दिन-दहाड़े मेरी चार गाएं छीनकर लेगएहैं, अब मेरे परिवारको दूध कहांसे मिलेगा ?

द्वि० नागरिक—मेरी तो साठ बकरियां हांकलेगए। उन्हींपर मेरा निर्वाह था, अब मैं क्या करूंगा ?

तृ० नागरिक—मेरे तो बर्तन-वस्त्र, अन्न-आभूषण, सर्वस्व उठालेगए। मैं तो लुटगया। मेरे स्त्री-बच्चे भूखसे तड़प-तड़पकर भोजन मांगेंगे, मैं क्या दूंगा ?

(*हरिसिंह सोलंकी, मालोजी और तीन सैनिकोंका प्रवेश*)

मालोजी—उन्हें चाहे दोगे या न दोगे, किन्तु राज्यकर तो देनाही पड़ेगा।

हरिसिंह—कहां भागेजारहेहो ? लाओ,पहले राज्यकर देदो !

प्र० नागरिक—राज्यकर ? हरिसिंह जी ! राज्यकर हमारे पास कहांसे आया ? अन्नकालके कारण पहलेही हम लोग अपने बर्तन-भांडे बेचकर बड़ी कठनाईसे अपने परिवारका पालन कररहेहैं ।

मालोजी—तो गाय-बकरियाँ बेचकर दो ।

प्र०नागरिक—उन्हें तो मालोजी ! पहलेही लुटेरे बाहीर हाँकलेगएहैं ।

मालोजी—तो अपनी स्त्रियोंके आभूषण बेचकर दो । कमा कर लाओ, उधार निकालो, चोरी करो, ठगी करो, अपने स्त्री-बच्चोंको बेचकर दो। जहाँसे मिलताहै राज्यकर लाकरदो ।

द्वि०नागरिक—एक तो महाभयंकर अन्नकाल है,दूसरे अभी-अभी हमारा सर्वस्व लुटेरे लूटलेगएहैं ।

मालोजी—इसीसे तो हम अभी तुमसे वह छीनने आएहैं जिसे लुटेरे तुमसे नहीं छीनसकेहैं !

द्वि०नागरिक—क्यों ?

मालोजी—क्योंकि अन्नकालके कारण, जो कुछ तुम्हारे पास शेष है, उसे तुम अल्पकालमें ही खर्च करदोगे; फिर तुम्हारे पास राज्यकर कहांसे निकलेगा ?

हरिसिंह—सैनिको ! इनके पास जो कुछ है,वह सब छीनलो ।

(*सैनिक नागरिकोंकी जेबोंसे बलपूर्वक धन निकालतेहैं ।*)

तृ०नागरिक—हाय ! अब तो हम भूखसे मरजाएंगे ।

प्र०सैनिक—मरनेसे इतना क्यों डरतेहो ? अगर हम तुमसे राज्यकर न लेंगे तो तुम अमर बनजाओगे ?

द्वि०सैनिक—मरजाओगे तो क्या मेवाड़का राज्य शून्य होजाएगा ?

तृ०सैनिक—मरजाओगे ? तब तो राज्यकर अभी देदो। तुम्हारे मरजानेपर क्या हम राज्यकर लेने तुम्हारे पीछे-पीछे नरकमें आएंगे ?

प्र०सैनिक—नरकमें ? उतनी दूर चलते-चलते तो पैर थक-जाएंगे, जूते घिसजाएंगे !

द्वि०सैनिक—तब तो राज्यकरके अतिरिक्त जूतोंकी घिसाई भी देनीपड़ेगी !

(मालोजी, हरिसिंह सोलंकी और सैनिकोंका नागरिकों का धन छीनकर प्रस्थान)

प्र०नागरिक—यह अच्छा न्याय है ! लुटेरोंसे प्रजाकी रक्षा करना और उसकी क्षतिपूर्तिकरना तो दूर रहा उलटा उसे और भी लूटाजारहाहै !

द्वि०नागरिक—राणा संग्रामसिंहके सिंहासनपर अत्याचारी बेन बैठाहै। यह तो फिरसे पपाबाईका राज्य आगया !

तृ० नागरिक—अत्याचारीका नाश हो ! इस दम्भी कंसके विरुद्ध विद्रोह करनेकेलिये मेवाड़की प्रजा उत्सुक है। केवल किसी योग्य नेताकी प्रतीक्षा है ।

प्र० नागरिक—यह,वहां कौन सोयाहुआहै ?

तृ०नागरिक—यह स्वामी सुप्तानन्द हैं। सदा सोतेही रहतेहैं। न कभी उठतेहैं, न चलते-फिरतेहैं, न बोलतेहैं,न खाते-पीतेहैं !

प्र० नागरिक—तब तो भाई ! ये बड़े तपस्वी हैं। इन्होंने बड़ा कठोर व्रत लियाहै।

तृ० नागरिक—ये महासिद्ध पुरुष हैं। सतयुगमें इन्होंने एक लाख वर्ष तक एक अंगूठेपर खड़े रहकर बड़ी उग्र तपस्या कीथी, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शंकरने इन्हें प्रत्यक्ष दर्शन

दिएथे। उस दिनसे ये विश्राम ही कररहेहैं ! ये त्रिकालदर्शी हैं, साक्षात् भगवत्स्वरूप हैं !

द्वि० नागरिक—किन्तु इनकी न शिखा है, न सूत्र, ये कैसे हिन्दु हैं ?

तृ० नागरिक—ये संन्यासी हैं। मैंने इनके शिष्य स्वामी गुप्तानन्दके दर्शन किएथे। उन्होंने बतलाया कि शिखा-सूत्र रखना मूर्तिपूजा करना, अवतारों और देवी-देवताओंमें विश्वास करना, तीर्थ-व्रत करना और जाति-बन्धनको मानना तो क्षुद्रकोटिके साधकोंकेलिए है। महापुरुष तो इनसे दूरही रहतेहैं।

प्र० नागरिक—फिर, हिन्दुधर्म तो विशाल क्षीरसागरके समान अपार और अथाह है। उसमें श्रद्धालु आस्तिक और अश्रद्धालु चार्वाक, मूर्तिपूजक सगुणोपासक और मूर्तिनिंदक निर्गुणोपासक, शिखा-सूत्रधारी त्रैवर्ण्य और शिखासूत्ररहित परिब्राजक सन्यासी, श्रुति-स्मृति-पुराणागम-पालक सनातनी और स्मृतिपुराणागम - विरोधी सुधारवादी, गोपूजक चातुर्वर्ण्य और गोभक्षक कापालिक, मद्यमांसादिविरोधी वैष्णव, और मधुमांस लोलुप शाक्त, शवदाह करनेवाले गृहस्थ और शव गाड़नेवाले वैरागी गुसांई, सबकेलिए स्थान है। ऐसा कोई सिद्धान्त नहीं जो हिन्दूधर्मद्वारा प्रतिपादित न होसके। चलो स्वामीजीके दर्शन करें !

द्वि० नागरिक—अब तो संध्या होचलीहै, कल प्रातः आकर इनके दर्शन करेंगे। रिक्तपाणि महात्माओंके पास जाना उचित नहीं। *(नागरिकोंका प्रस्थान)*

(साहीदास, कर्णसिंह और अखिलरावका प्रवेश)

साहीदास—एक ओर तो कई दिनोंसे नित्य लुटेरे माहीर नगररक्षकोंको गोवर-गणेश समझकर निर्भयतासे नगर और

राज्यको लूटरहेहैं और दूसरी ओर हमारे महाराणा प्रजा-रक्षाकी ओरसे नेत्र मूंदकर मल्ल-पहलवानोंके कौशल देखनेमेंही मस्त हैं।

अखिलराव- —साहीदास ! आज दरबारमें जिन बीस मल्लोंमें से प्रत्येकको पांच-पाँच सहस्र पुरष्कार दियागयाहै, उनमें सत्रह यवन थे और तीन हिंदु। निर्धन हिन्दु प्रजाके रुधिरको चूस कर इसप्रकार जिन यवनोंको खिला-पिलाकर मुस्तण्डा बनाया-जारहाहै, समय आनेपर वही हमलोगोंकी ग्रीवापर छुरिका चलाएंगे। जब मैंने महाराणासे निवेदन किया कि अश्वारोही हिन्दुओंकोभी कुछ हस्तकौशल दिखानेकेलिए अवसर दिया जानाचाहिए तो उन्होंने झट फणि-सा फुफुकारतेहुए कहा—— 'वर्तमान कालमें अश्वरोहियोंको पूंछताही कौन है ?'

साहीदास——महाराणा यवनोंके अनुकरणपर पदातिकोंका सीमासे अधिक सम्मान और अश्वरोहियोंसे अत्यधिक घृणा करनेलगेहैं। अखिलराव ! वे यह नहीं सोचते कि केवल दुर्ग घेरनेके समय अथवा जब अश्वरोही सेना घोड़ोंसे उतरकर विश्राम करतीहै, इन दो अवसरोंके अतिरिक्त पदातिक सेनाका उपयोग और किस समय होताहै ?

अखिलराव——इस पदातिक सेनामें भी यवनोंकी संख्या और वेतन हिंदु सैनिकोंकी संख्या और वेतनसे अधिक रखेगएहैं। और महाराणाकी तो यह धारणा होचलीहै कि यवन पदातिक हिन्दु अश्वारोहियोंसे अधिक वीर हुआकरतेहैं।

कर्णसिंह--बात-बातमें अश्वारोही हिन्दुसामन्तोंका अपमान और पदातिक यवनोंकी प्रशंसा सहनकरना अब कठिन होगयाहै। साधारण प्रजा अन्नकाल, करभार, लूटमार और अव्यवस्थाके कारण त्राहि-त्राहिके निःश्वास लेरहीहै। और सामन्तोंका तिरष्कार करके महाराणाने अभिजातवर्गकी क्रोधाग्नि भड़कादीहै।

दीन प्रजाके निःश्वास हम लोगोंकी क्रोधाग्निसे मिलकर मेवाड़में ऐसी प्रबल ज्वाला भड़कादेंगे जिसमें महाराणा और उनके परामर्शदाता शलभोंके समान भस्म होजाएंगे।

(बनवीरका प्रवेश)

बनवीर—वीर सामन्तो! श्री महाराणाने आपलोगोंको आदेश दियाहै कि अपने अश्वारोहियोंको लेकर शीघ्र नगरसे लुटेरे माहिरोंको मारभगादें।

कर्णसिंह—जाकर महाराणासे कहदो बनवीर! कि "कायर अश्वारोहियोंसे लुटेरे माहीर न भगाएजासकेंगे। उनके दमन केलिए महाराणा अपने प्यारे पदातिकोंको भेजें।"

बनवीर—आजके दरबारमें महाराणाने जो पदातिक सेनाकी प्रशंसा कीथी, संभवतः उससे आपलोग रुष्टहोगएहैं। महाराणाका तात्पर्य तो केवल यह कहनेका था कि जबसे संग्राममें तोपोंका प्रयोग होनेलगाहै तबसे पदातिक सेनाका महत्व बढ़गयाहै। क्योंकि तोपें चलानेकेलिए अश्वारोहियोंकी आवश्यकता नहीं होती, पदातिकोंकी होतीहै।

कर्णसिंह—तो क्या हुआ? तोपोंके प्रयोग करनेमें क्या कहीं बाहुबलका परिचय मिलताहै? छल-द्रोह और प्रवंचनाको अपना अमोघ अस्त्र समझनेवाले यवन चाहे तोपोंकीही विरुदावलि गातेरहें, धर्मयुद्धके प्रेमी हिन्दु अपने अश्व, खड्ग और भालेका तिरस्कार नहीं करसकते।

(साहीदास, कर्णसिंह और अखिलरावका प्रस्थान)

बनवीर—मेवाड़के दुर्भाग्यकी इस अमावस्यामें अभिजातवर्गके संतोष-सूर्यको महाराणाकी अदूरदर्शिता—राहुने ग्रसितकर लियाहै और निरीह प्रजाके शान्ति-सुखका शशांक पहलेही लुप्त

है। फिर बनवीरकी राजभक्तिका क्षुद्र दीपक कब तक टिमटिमा सकेगा ? (*प्रस्थान*)

(*रफीअहमदका प्रवेश*)

रफीअहमद—(*इधर-उधर देखकर*) रात होचलीहै। दुकानदार लुटेरोंके भयसे अपनी-अपनी दुकानोंको बन्द करके चलेगएहैं। निकट कोई नहीं दिखाईदेता! लो, चाचा आसफ-अली! हलुवा खालो। (*वस्त्रके नीचेसे पोटली निकालकर आसफ-अलीके सन्मुख रखताहै।*)

आसफअली—(*उठकर*) रफीअहमद! तुम चारों, ओर देखतेरहो, मैं खाताहूँ।

रफीअहमद—इस मूर्ख हिन्दुजातिको छल-कपटसे जीतना जितना सरल है, उससेभी अधिक सरल उससे रुपया ऐंठना है। जो एक बार धेलेका गेरू लेकर कफनी रंगालेताहै, वह हिन्दुओं का पीर बनजाताहै। फिर तो खानेके लिए हलुवा-पूरी मिलतीहैं, चढ़नेकेलिए पालकियां मिलतीहैं, सेवाकरनेकेलिए बड़े-बड़े रईस मिलतेहैं और चरण दबानेकेलिए बड़े-बड़े घरोंकी छोकरियां!

आसफअली—(*इधर-उधर देखकर*) तभी तो कहतेहैं, बेटा।

"मूंड मुंडाए तीन गुण, शिरसे मिटती खाज।
खानेको हलुवा मिले, लोग कहें 'महाराज'॥"

रफीअहमद—रङ्गीहुई कफनी पहनकर हिन्दुओंके आगे जितना पाखंड रचो, उतनीही पूजा होतीहै, जितना झूठ बोलो उतनीही भेंट चढ़तीहै, जितनी आयु अधिक बताओ, उतनीही सेवा होतीहै, जितना हलुवा-पूरी उड़ाओ, उतनीही नौजवान छोकरियां मिलतीहैं! तुम यहां मौजसे लेटेरहतेहो, रातको जो कुछ करतेहो, मुझे पता है। फिर-भी हिन्दु भगत कहतेहैं—'बड़े तपस्वी हैं, महान् त्यागी हैं, साक्षात् परमात्मा हैं।' देखतेहो रोज

सौ-दो सौ रुपया भेंट चढ़तीहै। अबतक पांच-छः हजार रुपया चढ़चुकाहै।

आसफअली—उन्हें यह ध्यान नहीं कि उनका यह धन गायोंका मांस-कबाब उड़ानेवालोंकी जेबमें जारहाहै। किसीके पैरोंकी आहट आरहीहै! (*चटपट लेटकर आंखे मूंदलेताहै* ।)

रफीअहमद—वह आदमी तो पासकी गलीमें चलागयाहै।

आसफअली—(*बैठकर, आंखें खोलकर*) अब अंधेरा बढ़ चलाहै। शीघ्र राजपूत सामन्तके वेशमें घोड़ेपर सुलतान सलामत के पास गुजरात चलेजाओ। उन्हें मेरा पत्र देकर कहना कि मेवाड़में प्रजा और सरदार राणा विक्रमादित्यके विरोधी हो गएहैं। राज्यमें बड़ी गड़बड़ है। विद्रोह होनेवाला है। पुराने वैर का बदला लेनेका अति उत्तम अवसर है। शीघ्र चित्तौड़पर चढ़ाई करदें।

रफीअहमद—बहुत अच्छा।

(पट)

दृश्य २

स्थान—गुजरात (*माडू*)सुलतान बहादुरका दरबार

सुलतान बहादुर—जाओ, अपने बादशाहसे कहदो कि दिल्लीके गीदड़की भभकियोंसे गुजरातके शेर नहीं डराकरते। हुमांयूं जो चाहे करले, मैं मुहम्मदजमानमिर्जाको उसके हवाले नहीं कर-सकता।

दूत—विद्रोही सरदार मुहम्मदजमानमिर्जाको शरणदेकर सुलतान आपने मौतसे खिलवाड़कियाहै, अपने विनाशका बीज आप बोयाहै। जब शाहँशाह हुमांयूंकी विशाल वाहिनी अग्नि धधकाती और रुधिरकी नदियां बहातीहुई गुजरातकी ओर प्रस्थान

करेगी तो समुद्रका गहरा जल भी आपको हुमायूं के कोपसे न बचा-सकेगा। अब भी संभलजाओ, बादशाह सलामतसे बैर बढ़ाकर अपना सत्यानाश न करो। जब तातारी वीरोंके खड्गसे कटकर आपका शिर बालुकापर तड़पेगा तब आपको मेरे कथनकी सत्यता प्रतीतहोगी।

सुलतानबहादुर—बढ़-बढ़कर बातें न बना। जा, अपनी राहले। तुझे ध्यान नहीं कि तू उस सुलतानबहादुरके सन्मुख खड़ाहै जिसके दादा मुहम्मद बेगढाके नामसे सारा हिन्दुस्थान थर-थर कांपताथा, जिसके खड्गप्रहारसे मालवाके मुहम्मदखिलजी के कई सहस्र सैनिक कट-कटकर गिरपड़ेथे।

दूत—ज्ञात है, जिसके शरीरके स्पर्शमात्रसे सहस्र-सहस्र मक्खी-मच्छर—खटमल मर-मरकर गिरपड़तेथे!

सुलतानबहादुर—जिसके खड्गने कच्छके सुमरा और सोधा वीरोंको अपनी करनीका मजा चखायाथा।

दूत—हां जो, प्रतिदिन प्रात: उठतेही सेर पक्का शहद, आधा सेर घी और डेढ सेर कन्धारी केलोंका मजा चखताथा!

सुलतानबहादुर—जिसकी प्रचंड क्रोधाग्निमें पड़कर द्वारका-का राजा भीम सपरिवार भस्म होगयाथा।

दूत—हां, और प्रतिदिन जिसकी जठराग्निमें मन पक्के भोजनको भस्महोते देर न लगतीथी, और जो रात्रिको सोते-सोते ही पांच सेर पक्का भात चाटदियाकरताथा!

सुलतानबहादुर—जिसने एक सहस्र सेना लेकर चम्पानेर-के रावलकी दस सहस्र सेनाको खेतकी मूलीकी भांति टुकड़े-टुकड़े करदियाथा।

दूत—हां, और जो अपनी मूछोंको साधुओंकी जटाकी भांति

शिरपर लपेटताथा और जिसकी दाढ़ी उसके पैरोंतक चंवर डुलातीथी !

सुलतानबहादुर— जिसने मालवामें इतनी प्रबल रुधिरधारा बहाईथी कि सारे हिन्दुस्थानके काफिर थर-थर कांपनेलगेथे ।

दूत — हां,और अल्लाह यदि ऐसे पेटूको गुजरातका सुलतान न बनाता तो वह सर्पकी भांति अपनी संतानकोही निगलजाता । उसी पेटूका पोता होकर आप दिल्लीके शाहंशाहका विरोध करनेकी सोचरहेहैं । बलिहारी है मोटे पेटवालोंकी मोटी बुद्धिकी !

(*प्रस्थान*)

[*राजपूत वेशमें रफीअहमदका प्रवेश*]

रफीअहमद–(*सलाम करके*) सुलतान सलामत ! चितौड़से गुप्तचर आसफअलीने, जो वहाँ सुप्रानन्द साधुके वेशमें रहताहै, जहांपनाहकी सेवामें यह पत्र भेजाहै । (*पत्र देताहै*)

सुलतान बहादुर—(*पत्र पढ़कर*) रफीअहमद ! तुमने राजपूत सरदारोंका विद्रोह अपने नेत्रोंसे देखाहै ?

रफीअहमद—हां,जहांपनाह ! सभी राजपूत सरदार विक्रमादित्यके विरोधी होगएहैं । नित्य माहीर लुटेरे नगरपर आक्रमण करके लूटमार मचातेहैं । किन्तु सरदार लोग विक्रमादित्यके दुर्व्यवहारके कारण कुछ नहीं कहते । विक्रमादित्यको अपने पदातिकोंको साथ लेकर आखेटखेलना और मल्लोंकी पहलवानी इतनी प्रिय है कि वह अश्वारोहियोंका तिरस्कार करताहै और अश्वारोही प्रकट रूपमें विक्रमादित्यका विरोध करतेहैं ।

सुलतानबहादुर--विक्रमादित्य उन्हें दण्ड क्यों नहीं देता ?

रफीअहमद—वह तो आखेट खेलनेमेंही मस्त रहताहै । कर-भारसे प्रजा हाय-हाय कररहीहै, अन्नकालसे निर्धन प्रजा प्रति दिन सैकड़ोंकी संख्यामें मररहीहै, माहीर लुटेरे प्रजाकी

संपत्ति दिनदहाड़े लूटरहेहैं। सामन्तगण मेवाड़का सिंहासन पलटनेकेलिए गुप्त षडयंत्र रचरहेहैं, किन्तु विक्रमादित्यको अपने आखेटकीही सूझतीहै। इन विप्लवके भीषण दिनोंमेंभी वह अपने साथियोंको लेकर बूंदीराज्यके अन्तर्गत लैचा स्थानमें आखेट खेलनेगयाहै।

सुलतानबहादुर—तबतो चित्तौड़पर आक्रमण करके पिछले वैरका बदला लेनेका अति उत्तम अवसर है।

रूमीखां—सुलतान सलामत! एक लाख सेना लेकर लैचामें विक्रमादित्यको घेरलेनाचाहिए और उसे पराजित करलेनेपर चित्तौड़को मिट्टीमें मिलादेनाचाहिए।

सदरखाँ—नहीं जहांपनाह! उचित तो यह है कि एकसाथ ही लैचा और चित्तौड़पर आक्रमण करदियाजाए जिससे दोनों स्थानोंकी हिन्दु सेना आपसमें न मिलसके।

लाखीखां—सुलतान सलामत! दस सहस्र सेना रूमीखांके साथ लैचामें विक्रमादित्यको घेरनेकेलिए भेजदें और नव्वे हजार सेनाकसाथ जहांपनाह चित्तौड़पर आक्रमण करदें। मेरा तोपखाना जिसके जोड़का रूमके बादशाहके अतिरिक्त संसारमें और किसीके पास नहीं है आपकेसाथ चलेगा और चित्तौड़की धज्जियाँ उड़ादेगा।

सुलतानबहादुर—आजही तय्यारी करके कल लैचा और चित्तौड़पर आक्रमण करनेकेलिए प्रस्थान करदेनाचाहिए। पृथ्वीराजने सुलतान मुहम्मदको बन्दी बनाकर जिस चित्तौड़की गली-गलीमें फिरायाथा, सुलतान बहादुरका खड्ग उस चित्तौड़के बच्चे बच्चेकी बोटी बनाकर रुधिरकी ऐसी नदियाँ बहादेगा कि भविष्यमें सहस्रों वर्षों तक उसका वर्णन सुनकर हिन्दुस्थानके रोंगटे खड़ेहोतेरहेंगे। (पट)

दृश्य ३

स्थान—बनवीरका प्रासाद

शीतलसेनी—महत्वाकांक्षाही उन्नतिका सोपान है, बनवीर! राजमार्गपर गोबर एकत्रितकरतेहुए एक दिवस राजदासी दुर्गाके भव्य वस्त्रालंकारोंको देखकर मेरे हृदयमें राजदासी बननेकी आकांक्षा उठी। आकाँक्षाने प्रयत्नको जन्मदिया, प्रयत्नने सफलता को। राजदासी बनजानेपर मैंने प्रधान परिचारिका बननेका दृढ संकल्प किया। और शीघ्रही मेरी यह महत्वाकांक्षाभी पूर्णहुई। मैंने दरिद्रगृहमें जन्म लेकरभी महाराणा पृथ्वीराजके हृदयपर शासन किया और सपत्नियोंको ईर्ष्याग्निमें भस्म करतीहुई तुम्हें जन्म दिया। अब मेरे हृदयमें केवल एकही आकांक्षा शेष है, जिसकी पूर्तिकी अभिलाषाने मुझे राणाजीके साथ सहगमन न करनेदिया।

बनवीर—वह क्या है माँ?

शीतलसेनी—वह है मेरे जीवनका चरमलक्ष्य, राजमाताके महान पदपर प्रतिष्ठित होना। शीतलसेनीकी अभिलाषाएं उसके पतिके जीवनमें जिसप्रकार सफलताका मुकुट प्राप्तकरतीरहीहैं, उसीप्रकार उसके पुत्र बनवीरके जीवनमेंभी प्राप्तकरेंगी। मेरी यह अभिलाषा पूर्णहोगी, अवश्य पूर्ण होगी, शीघ्र पूर्ण होगी, मेरे जीवनकालमेंही पूर्ण होगी।

बनवीर—असम्भव है, मां! जबसे राज्यमें अव्यवस्था बढ़ने-लगीहै, मैंने कई बार तुम्हें रात्रिके एकांतमें कई घड़ियोंतक अनेक विचारधाराओंमें मग्न होते पायाहै। मैंने सहमकर धीरे-धीरे तुम्हारे गृहमें प्रवेशकरके देखा कि दीपके मन्द प्रकाशमें तुम भित्तिपर एकटक देखतीहुई अदृष्टके लेखोंको समझनेका प्रयत्न

कररहीहो। आवेशमें आनेसे क्षण-क्षणमें तुम्हारी मुखाकृति परिवर्तित होरहीहै और किसी विशेष संकल्पके उठतेही तुम्हारी दक्षिण मुष्टि तनकर भित्तिपर छाया-घनके प्रहार करके उसे भग्न करदेना चाहतीहै। कई दण्ड बीतगए, मैं गृहमें प्रवेश करके लौट भी गया, तुम्हें आभास तक न मिला। कई बार मैंने तुम्हें मालोजी और हरिसिंह सोलंकीके साथ आधी-आधी रात्रितक गुप्त परामर्शकरते देखाहै। आज ज्ञातहुआ कि इसी असम्भव महत्वाकांक्षाकी मृगतृष्णामें तुम इतने दिनोंसे भटकरहीहो।

शीतलसेनी—असम्भव कैसे, बनवीर? महत्वाकांक्षा-सरोवरमें प्रयत्नमृणालके उगआनेपर एक न एक दिन साफल्य-कमल अवश्य प्रफुल्लितहोताहै। जो अपनी निष्कर्मण्यताको असम्भव वर्मसे आच्छादित कियाकरतेहैं उन आत्मवंचकोंकेलिए इस वीर भोग्या वसुन्धरामें कोई स्थान नहीं। मैंने राजमाता बननेका संकल्प कियाहै और राजमाता बनकर रहूँगी।

बनवीर—राजमाता तो, माँ! तुम आजभी हो! महाराणा विक्रमादित्य तो तुम्हारा राजमातासेभी अधिक आदर करतेहैं। राजमाता बननेकी माया-मरीचिकामें पड़कर तुम अपने पुत्र, महावीर पृथ्वीराजके अग्नितेजको ऐसा अनुचित पथ पदर्शित करोगी, मुझे स्वप्नमेंभी आशा न थी!

शीतलसेनी—आज राज्यमें अव्यवस्था और विप्लव है। प्रजा और सामन्तगण विक्रमके विरोधी हैं। सुलतान बहादुर विक्रमादित्यके विनाशकेलिए प्रबल सैन्य लेकर चित्तौड़की ओर अग्रसर है, यह सब तुम्हारे सौभाग्यसूर्योदयके सूचक हैं!

बनवीर—जिस समय प्रजा और सामन्तगण महाराणासे रुष्ट होगएहैं, जब राज्यमें अव्यवस्था और विप्लव है, उस समय तुम्हें मुझे चित्तौड़के महाराणाके हितार्थ अपने प्राणों की आहुति

देनेकेलिए प्रतिकरनाचाहिए न कि उनका विरोधकरके सिंहासन हस्तगतकरनेकेलिए। मां! मैं तुम्हारा तिरस्कार नहीं करता, किंतु इतना कहदेना आवश्यक समझताहूं कि कुटिल मन्थराने अपनी दुरभिसन्धिसे जिसप्रकार त्रेतामें इस पवित्र सूर्यवंशके विनाशका अनुष्ठानकियाथा उसीप्रकार कलियुगमें तुमभी न करो। स्मरण रखना जिसप्रकार भरत मंथराके कुचक्रसे प्रभावित नहीं हुआ था, उसीप्रकार मैंभी न हूँगा। मेरा यह खड्ग महाराणाका रक्षक है, उसका विरोधी नहीं। मैं अभी लैचा जाकर महाराणाको यहांकी परिस्थितिका परिचय देताहूँ। (प्रस्थान)

शीतलसेनी—(क्रुद्ध होकर) मेरे उदरसे जन्मलेकरभी, बनवीर! तुमने मन्थराका उदाहरण देकर मुझे सामान्य दासी ठहरायाहै। शीतलसेनी मन्थरा बनेगी और मन्थरासे भी घोरतर कार्य कर दिखाएगी। मेरे रुधिरसे पलकर मेरा तिरस्कार करनेवाले मूर्ख भरत! तेरा यही खड्ग, जिसे तू विक्रमका रक्षक कहताहै, विक्रम का भक्षक बनेगा!

(*पन्ना धायका प्रवेश*)

पन्ना धाय—विक्रमका भक्षक किसे बनानाचाहतीहो, शीतल सेनी? महत्वाकांक्षाकी मदिरासे मतवाली बनकर महान् शिशोदियाकुलके पवित्र यश-मयंकके विनाशकेलिए राहु उत्पन्न करने का संकल्प छोड़दो! वीर पृथ्वीराजके अग्नितेजको अपनी कालिमासे कलुषित न करो। नारीका महत्व मातृत्वकी करुणामें है। उसका सौन्दर्य भगिनीत्वकी उदारतामें है और उसकी प्रतिष्ठा त्यागकी तपस्यामें है!

शीतलसेनी—(*पन्ना धायके मुखपर देखतीहुई*) हैं?

पन्ना धाय—यह न समझो कि चित्तौड़दुर्गके अन्तःपुरके एक कोनेमें बैठकर तुम जिन गुप्तमंत्रणाओंमें संलग्न रहतीहो,

एकान्तताका पटल उन्हें प्रकाशमें आनेसे सदा रोकसकेगा। जब पन्ना धाय और शीतलसेनी-जैसी सहस्रों परिचारिकाओंके शरीर मृत्तिकामें विलीन होचुकेहोंगे और उनके स्थानपर सहस्रों नवीन परिचारिकाएं चित्तौड़के अन्तःपुरको अपनी खिलखिलाहटसे गुंजातीहोंगी, उस समयभी भारतके अदृष्ट प्रान्तों और अश्रुत भाषाओंके साहित्यकारोंकी लेखनीको समस्त आवरणोंको छिन्नभिन्न करके सत्यतक पहुंचनेमें विलम्ब न लगेगा। उस समय भारतकी भावी संतान हम लोगोंके उज्ज्वल कार्योंसे पुलकितहोगी और कलुषित षड़यंत्रोंसे नासिका सिकोड़ेगी। सावधान! (प्रस्थान)

शीतलसेनी—आजीवन दूसरोंकी सन्तानके मल-मूत्रको धोनेवाली तथा उनके उच्छिष्टपर पलनेवाली तुच्छ धाय! तू क्या समझेगी कि महत्वाकांक्षा किसे कहतेहैं और राजमाता बननेका सौभाग्य कैसे प्राप्तहोताहै? मेरा पुत्र पंचमपुत्र न रहकर मेवाड़का महाराणा बनेगा और मैं मेवाड़की राजमाता! मेरे इस संकल्पको विधाताभी न पलटसकेगा।

(पट)

दृश्य ४

स्थान—चित्तौड़, राजमार्ग

(पेड़के नीचे आंख मूंदकर स्वामी सुखानन्दके वेशमें आसफअली। एक ओर जलतीहुई धूनीके पास चिलम कमंडलु, चिमटा और खड्ग; दूसरी ओर फूल-फल बतासे और रुपए-पैसोंके ढेर।)

आसफअली—(*आंख खोलकर, इधर-उधर देखतेहुए*) तब तो सुलतान सलामत विक्रमादित्यकी चटनी बनाडालेंगे और चित्तौड़की ईंटसे ईंट बजादेंगे।

रफीअहमद—निःसन्देह ! एक लाख सेना, जिसके साथ सदरखां और रूमीखाँ-जैसे वीर हों और लाब्रीखाँ-जैसे गोलंदाज हों, वह लैचा और चित्तौड़ क्या सारे हिन्दुस्थानको मिट्टीमें मिलादेगी ।

आसफअली—यह लाब्रीखाँ कौन है ?

रफीअहमद—सुनाहै यह फिरंगी गोलन्दाज है और फिरंगी देशमें अनेकों युद्धोंमें विजय प्राप्तकरचुकाहै। इसके जोड़का गोलन्दाज सारे संसारमें नहीं है। उसका नाम सुनतेही शत्रु थर-थर कांपतेहैं। वह अग्निमें छलाँग लगादेताहै। काँच चबा डालताहै। शत्रुकी दुर्बलताको झटताड़लेताहै। उसने भूत-प्रेत-जिन वशीभूत किएहुएहैं।

आसफअली—तब तो सुलतान सलामतको पिछले वैरका पूरा-पूरा बदला निकालनेका अच्छा अवसर मिलेगा।

रफीअहमद—हाँ, अवश्य। चाचाजान ! कुछ भगत स्त्रियां आरहीहैं।

(आसफअली चटपट लेटकर आँखें बन्दकरलेताहै।

कई हिन्दुस्त्रियोंका बच्चोंको लेकर प्रवेश)

हिन्दुस्त्रियां—*(पुष्प-फल, बतासे, रुपए-पैसे और आभूषण चढ़ाकर)* महात्मा सुभानन्द महाराजकी जय ! *(आसफअलीके चरण छूतीहैं और उसके चरणोंपर बच्चोंके शिर रखतीहैं ।)*

रफीअहमद—लो, प्रसाद लो। *(पुष्प-बतासे देताहै और स्त्रियोंको घूरताहै। हिन्दुस्त्रियोंका बच्चोंको लेकर प्रस्थान)*

(मालिनीका प्रवेश)

मालिनी—*(अपनी सुवर्ण चूड़ियाँ चढ़ाकर)* महाराज ! मेरे बच्चे गर्भमेंही मरजातेहैं। अबतक तीन मरचुकेहैं। अपने गुरु

महाराजसे कहकर मुझे आशीर्वाद दिलादें जिससे मेरे बच्चे टिकजाएं। इसकेलिए आप जितना रुपया कहेंगे, मैं देदूंगी।

रफीअहमद—हमारे गुरुजी महाराज पैसा नहीं छूते। माया मोहसे दूर रहतेहैं। तुम्हारी जो श्रद्धा हो चढ़ाओ, सब यहीं पड़ा रहेगा। तुमपर किसी बुरी स्त्रीकी नजर लगगईहै। उसका उपाय अमावस्याकी रात्रिमें होसकताहै। तुम्हें थोड़ा कष्ट उठानापड़ेगा।

मालिनी—महाराज! मैं सब प्रकारके कष्ट उठानेको प्रस्तुत हूं। बस, किसी भाँति मेरी संतान टिकजाए।

रफीअहमद—अमावस्याकी रात्रिको अच्छे-अच्छे वस्त्र और अपने समस्त आभूषण पहनकर तुम्हें ऐसे समय यहाँ आनाहोगा जिस समय तुम्हें आतेजाते कोई न देखे। यदि कोई देखलेगा तो तुम्हारा कार्य सिद्ध न होगा।

मालिनी—महाराज! मैं अमावस्याकी अर्द्ध रात्रिमें जब सारा संसार निद्रामें मग्नहोगा आपकी सेवामें उपस्थित हूंगी।

रफीअहमद—उससमय गुरुजी महाराजके चरण धोकर पीनेसे अवश्य तुम्हारा दीर्घजीवी पुत्र होगा। जाओ।

मालिनी—बहुत, अच्छा महाराज! (दोनोंके चरण छूकर प्रस्थान)

रफीअहमद—चाचाजान! यह तो किसी बड़े घरानेकी स्त्री प्रतीतहोती है। बड़ी सुन्दर है। बीस वर्षसे अधिक नहीं है। फिरभी इसे बच्चोंकेलिए कितनी तड़फन है।

आसफअली—अरे, न पूछो! इन हिन्दु औरतोंको बच्चोंकेलिए इतनी तड़फन होतीहै कि ये उनकेलिए अपना रुपया-पैसा दीन-ईमान, सब कुछ देनेको प्रस्तुत होजातीहैं और साधुओंको तो ये अपना परमात्माही समझतीहैं। जब मैं मालवामें गुप्तचर बनकर साधुके वेशमें रहताथा तो एक दिन एक सामन्तकी स्त्री

बच्चेकी इच्छासे मेरे पास आई। मैंने उसे एक गोलीदेतेहुए कहा इसे काली गायके मांसके साथ खाओ तो अवश्य तुम्हारा पुत्र पैदाहोगा। उसने एक मुसलमानसे गायका मांस मगाकर गोलीके साथ उसे खालिया!

रफीअहमद—गजब!

आसफअली—इससे भी गजब एक और हुआ। एक दिन एक हिन्दु औरत जब बच्चेकी इच्छासे मेरे पास आई तो मैंने उससे कहा कि अगर तुम किसी हिन्दु बच्चेके रुधिरसे स्नानकरो तो अवश्य तुम्हारा पुत्र होगा। उसने मेरे कथनपर विश्वास करके अपनी सौतके दो वर्षके बच्चेको मारडाला और उसके रुधिरसे स्नान किया। रात्रिको उसने आकर मेरी धूनीपर पांच सौ रुपए चढ़ाए।

रफीअहमद—जिसने आनन्दका जीवन बितानाहो उसे चाहिए कि धेलेके गेरूसे कफनी रंगाकर महात्मा बनजाए और मौज उड़ाए, ऐशकरे, मूर्ख हिन्दुओंको लूटकर खाए।

(पट)

दृश्य ५

स्थान—चित्तौड़, राजप्रासाद

पन्ना धाय—यदि महाराणा नहीं हैं तो क्या हुआ, महाराणी? चित्तौड़की रक्षाकेलिए प्रत्येक हिन्दू कटमरेगा। चित्तौड़ हिन्दु-स्थानका मुकुट है, हिन्दुजातिका तीर्थ है वीरत्वका प्रतीक है, । हिन्दुसभ्यता और हिन्दुसंस्कृतिकी लज्जा है। चित्तौड़की एक-एक अंगुल भूमिकेलिए शत-शत वीर अपना रुधिर बहादेंगे। और तो क्या हम अबलाएंभी रणचंडी बनकर चित्तौड़के शत्रुओंका मानमर्दन करेंगी। जबतक एकभी हिन्दुके शरीरमें प्राण है तब

तक चित्तौड़ शत्रुसे पददलित न होगा। सुलतान बहादुरका एक लक्ष सैन्य खेतकी घासके समान काटडालाजाएगा।

कर्णवती—ठीक है, पन्ना! किन्तु महाराणा संग्रामसिंहके साथ जो अगणित वीर विदेशी मुगलोंके हाथसे हिन्दुस्थानकी स्वतंत्रताकी रक्षाकेलिए समरभूमिमें धराशायी हुएथे, उनके अभाव से चित्तौड़पुरी वीरशून्य होगईहै।

(कर्मसिंहका प्रवेश)

कर्मसिंह— एकलिंग भगवानकी जय। वीरप्रसू चित्तौड़पुरी कभी वीरशून्य नहीं होसकती, महाराणी! धराशायी वीरोंकी चिताभस्मसे फिर अगणित वीर उत्पन्नहोगएहैं। और जो अब तक अनेक कारणों तथा पारस्परिक वैमनस्यसे चित्तौड़से विमुख भी रहतेरहेहैं वे सब आज शत्रुभावको त्यागकर आत्मोत्सर्गकी पवित्रभावनाके साथ चित्तौड़की रक्षाकरने आरहेहैं। जिस वीर सूर्यमल्लने चित्तौड़के विरोधमें देवलनगर बसायाथा, उसका ही वंशधर बाघाजी अपने पितृपुरुषोंके वासस्थान चित्तौड़की रक्षा करनेकेलिए अपने हृदयका रुधिर दानकरने आयाहै। शौनगड़े, देवर इत्यादि सहस्रों क्षत्रिय चित्तौड़की रक्षाकरने आरहेहैं। ब्राह्मणसे लेकर शूद्रतक सबने हिन्दु जातिके गौरव चित्तौड़की रक्षाकेलिए खड्ग उठायाहै। मीणा-माहीर, भील-जैसी अपनेही कार्योंमें मस्त रहनेवाली जातियाँ भी आज भाले, खड्ग और धनुषबाण लेकर चित्तौड़की रक्षाकरने आईहैं।

(अर्जुनरावका प्रवेश)

अर्जुनराव—एकलिंग भगवानकी जय हो! यवनोंके अत्या-चारोंकी पराकाष्टा होगईहै। राजस्थानमें सैकड़ों मीलों तक हिन्दुओंके घरोंपर अग्नि धधकादीगईहै। लूटमार, अत्याचार और बलात्कारका नग्न नृत्य होरहाहै। हिन्दुनारियोंके नग्न जलूस

निकालकर यवन निलर्ज्जतापूर्वक बलात्कार करहेहैं ! बच्चोंके शिरों और हाथोंकी माला बनाकर उनके पिताके गलेमें पहनारहेहैं ! हिन्दुओंकी खोपड़ियोंकी मीनारें बनाईगईहैं ! ऐसा प्रतीतहोताहै कि पुनः दैत्यों और राक्षसोंका भयंकर युग आगयाहै ।

कर्मसिंह—विक्रमादित्य कहाँ है ?

अर्जुनराव—सुलतानबहादुरकी असंख्य सेनाके सहसा आक्रमण करदेनेसे जब महाराणाके प्राण संकटमें पड़गए और जब महाराणाके प्यारे यवन पदातिक कृतघ्नतापूर्वक शत्रुसेमिलगए तो मेरे दो सहस्र हाडा वीरोंने उनकी रक्षाकेलिए अपने प्राणोंकी बाजीलगादी । बड़ी कठिनाईसे मेरे सैनिकोंने महाराणा और बन-वीरको शत्रु-समुद्रसे बाहर निकालकर उन्हें सुरक्षित स्थानपर पहुंचायाहै। महाराणा और बनवीर दोनों बड़ी वीरतासे लड़े और बुरी तरह घायलहुएहैं । दोनोंकी अवस्था चिंताजनक है। युद्ध उस समयभी चलरहाथा ; किन्तु सुलतान बहादुर एक लक्ष्य सैन्यके साथ चित्तौड़की ओर आरहाहै । और अल्पकालमेंही यहां पहुंचनेवाला है। मेरे पाँच सौ हाड़ा वीर भारतकेमुकुट चित्तौड़की रक्षाकेलिए अपनी प्राणवलि चढ़ानेआयेहैं । भारतका नगर-नगर गांव-गांव, पापी यवनोंसे पददलित होचुकाहै । किन्तु चित्तौड़की रक्षाकेलिए हिन्दु बच्चा-बच्चा अपने रुधिरकी नदी बहादेगा । और जबतक एक भी हिन्दु जीवितरहेगा तब तक चित्तौड़पर हिन्दुजातिका गौरव हिन्दुध्वज लहरातारहेगा ।

जवाहरबाई—धन्य हो हाड़ावीर ! तुम्हें जन्मदेकर तुम्हारी माता और बूंदीराज्यही धन्य नहीं हुए वरन् समस्त हिन्दुजाति और हिन्दुस्थानका मस्तक उच्चहुआहै । हम नारियाँभी चित्तौड़ की रक्षाकेलिए रणचंडी बनकर शत्रुरुधिरका पानकरेंगी ।

(चूकासेन ढुंडेराका प्रवेश)

चूकासेन ढुंढेरा—एकलिंग भगवानकी जय! मंत्रीजी! सुलतानबहादुरकी एक लक्ष सेनाने दुर्गको तीन ओरसे घेरलियाहै। दुर्गकी तीनों ओर बीस मीलकी परिधि तक सर्वत्र यवनही यवन फैलगये हैं। अत्याचार, लूटमार, अग्निदाह और बलात्कारका तांडवनृत्य होरहाहै। गोलन्दाज फिरंगी लाब्रीखाँने अपनी तोपें गाड़दीहैं। उठो, सुनो तोपोंका भीषण गर्जन सुनाईदेरहाहै।

कर्मसिंह—वीर अर्जुनराव, चलो, दुर्ग-रक्षाका प्रयत्नकरो।

(कर्मसिंह, अर्जुनराव, चूकासेन ढुंडेराका बाह्यद्वारसे और पन्ना, जवाहरबाई तथा कर्णवतीका अन्तर्द्वारसे प्रस्थान।)

(पट)

दृश्य ६

स्थान—चित्तौड़, राजमार्ग

(पेड़के नीचे नेत्र मूंदकर पूर्वत् लेटाहुआ आसफअली (सुप्तानन्द)]

आसफअली—चित्तौड़के बाजार जिनपर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों की हरसमय भीड़ लगीरहतीथी आज श्मशानकी भांति सुनसान पड़ेहैं। बादशाह सलामतके बहादुर सिपाहियोंने चारों ओर आग ही आग लगादीहै। दूर-दूर-तक, मीलों तक, हिंदुओंकी दुकानों और मकानोंसे धुएंकी काली-काली लपटें उठरहीहैं। जगह-जगह लाशें ही लाशें पड़ीहुईहैं। बाजारमें गीदड़ोंके झुण्डके झुण्ड फिररहेहैं। और आकाशमें चीलें मण्डलारहीहैं।

(नेपथ्यमें तोपोंकी भीषणध्वनि और प्रचण्ड गड़गड़ाहट)

रफीअहमद—*(चौंककर)* बहादुर लाब्रीखाँकी तोपोंकी भयंकर आवाज मैं दिन-रात सुनतारहताहूं, किन्तु इतना भयंकर शब्द कभी नहीं सुना। मानों पहाड़का पहाड़ गिरपड़ाहो।

बाजारके मकानतक काँपतेहुए दिखाईदेरहेहैं। ओह! इस भयंकर शब्दको सुनकर तो मेरी छाती काँपउठीहै! कलेजा दहलगयाहै! (दूसरी ओर देखकर महाराज! वह औरत आगईहै।

(मालिनीका प्रवेश)

मालिनी—(आसफअलीके चरणछूकर और पुष्प, फल, मिष्ठान्न और द्रव्य चढ़ाकर) महात्मा सुप्तानन्द महाराजकी जय हो! महाराज! मैं आज अमावस्याको आपके चरणोंमें आईहूँ। मुझे मार्गमें किसीने नहीं देखाहै। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरी संतान टिकजाए। आपकी महान् कृपा होगी। मुझ अभागिनीका जीवन सफलहोजाएगा। संतानका मुख देखकर मैं नरकसे बचजाऊंगी।

रफीअहमद—गुरुजी महाराजके चरण धोकर पीओगी तो अवश्य तुम्हारी इच्छा पूर्णहोगी। किन्तु अभी थोड़ी देर वहाँ बैठो।

(मालिनीका प्रस्थान)

आसफअली—या अल्लाह! कितना अच्छा शिकार फंसाहै! जवानीमें मस्त है। परियोंसी खूबसूरत है। ....

रफीअहमद—चाचासाहब! यह औरत यदि भण्डाफोड़ करदेगी तो क्या होगा?

आसफअली—होना क्या है? यह तो अपने पति और परिवारवालोंसे छिपकर आईहै। उनके पास कहेगी तो वे इसे घरसे, निकालदेंगे। इसका मुंह नहीं देखेंगे। इसका छुआहुआ पानी तक न पिएंगे। फिर यह ऐसी बात कहकर अपने पैरोंपर आपही कुल्हाड़ी क्यों मारेगी? और यदि कहभीदेगी तो आज चित्तौड़वालोंको जानके लाले पड़ेहैं, वे हमारा क्या बिगाड़लेंगे?

रफीअहमद—है तो ठीक। मेरी राय तो यह है कि इसे

बाजारके मकानतक काँपतेहुए दिखाईदेरहेहैं। ओह! इस भयंकर शब्दको सुनकर तो मेरी छाती काँपउठीहै! कलेजा दहलगयाहै! (दूसरी ओर देखकर महाराज! वह औरत आगईहै।

(मालिनीका प्रवेश)

मालिनी—(आसफ़अलीके चरणछूकर और पुष्प, फल, मिष्ठान्न और द्रव्य चढ़ाकर) महात्मा सुप्तानन्द महाराजकी जय हो! महाराज! मैं आज अमावस्याको आपके चरणोंमें आईहूँ। मुझे मार्गमें किसीने नहीं देखाहै। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरी संतान टिकजाए। आपकी महान् कृपा होगी। मुझ अभागिनीका जीवन सफलहोजाएगा। संतानका मुख देखकर मैं नरकसे बचजाऊंगी।

रफीअहमद—गुरुजी महाराजके चरण धोकर पीओगी तो अवश्य तुम्हारी इच्छा पूर्णहोगी। किन्तु अभी थोड़ी देर वहाँ बैठो।

(मालिनीका प्रस्थान)

आसफअली—या अल्लाह! कितना अच्छा शिकार फंसाहै! जवानीमें मस्त है। परियोंसी खूबसूरत है। ....

रफीअहमद—चाचासाहब! यह औरत यदि भण्डाफोड़ कर-देगी तो क्या होगा?

आसफअली—होना क्या है? यह तो अपने पति और परिवारवालोंसे छिपकर आईहै। उनके पास कहेगी तो वे इसे घरसे, निकालदेंगे। इसका मुंह नहीं देखेंगे। इसका छुआहुआ पानी तक न पिएंगे। फिर यह ऐसी बात कहकर अपने पैरोंपर आपही कुल्हाड़ी क्यों मारेगी? और यदि कहभीदेगी तो आज चित्तौड़वालोंको जानके लाले पड़ेहैं, वे हमारा क्या बिगाड़लेंगे?

रफीअहमद—है तो ठीक। मेरी राय तो यह है कि इसे

डरायाजाए कि अब तो कोई हिंदू तुझे घरमें रख नहीं सकता, इसलिए हमारेही पास चेली बनकर रह। मैं उसे बुरका पहिना कर रातही रात सलीमके पास पहुँचादूंगा।

आसफअली—ठीक है। अब उसे बुलालो। उससे मिलनेके लिए मेरी छाती तड़परहीहै!

रफीअहमद—बहुत अच्छा! माई! आजाओ।

(*मालिनीका प्रवेश*)

तुम गुरुजीके चरण धोकर पिओ। मैं अभी आताहूँ। (*प्रस्थान*)

[*मालिनी आसफअलीके निकट जाकर चरण धोनेलगतीहै।*]

(पट)
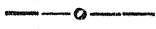
दृश्य ७

स्थान—चित्तौड़, दुर्गके बाहर, सुलतानबहादुरका शिविर

सुलतानबहादुर—लाखीखां! तुम्हारी बहादुरीसे मैं बहुत प्रसन्नहूँ। तुमने आज बहुत बड़ा कार्य कियाहै। किलेकी दीवार के उड़जानेसे अब हमारी जीतमें अधिक विलम्ब न होगा। तुम्हारी वीरताकेलिए मैं तुम्हें यह पुरस्कार देताहूँ। (*मोतियोंका हार उतारकर देताहै।*)

लाखीखाँ—(*हार लेकर*) सुलतान सलामतका कितना धन्यवाद करूं? किन्तु सेवकने जितनी वीरता दिखाईहै उससे करोड़ों गुनी अधिक वीरता अर्जुनराव और उसके पाँच सौ हाड़ावीरोंने दिखाईहै। अर्जुनराव और उसके हाड़ावीरोंको ज्ञात होगयाथा कि बीका पहाड़ीके नीचे सुरंग खोदकर बारूद भरदियागयाहै, और अल्प समयमेंही उनके शरीरोंकी धज्जियां उड़कर चारों ओर बिखरजाएंगी। किन्तु मृत्युका तिरस्कार करनेवाले हाड़ा

वीरोंने अपने शरीरकी रक्षाकी अपेक्षा दुर्गकी रक्षाको अधिक महत्व दिया। ४५ हाथ किलेकी दीवार गिरनेसे आज जिन परम पराक्रमी पाँच सौ हाड़ा वीरोंको वीरगति प्राप्तहुईहै उनके जोड़के वीरपुरुष सदियोंमेंभी न पैदाहोसकेगें। यूरोपके भीषण युद्धोंमें मैंने अनेकों विकट वीरोंसे लोहालियाहै किन्तु इन पाँच सौ हाड़ा वीरोंके समान मृत्युका तिरस्कारकरके अग्निमुखमें प्रवेशकरने वाले दुर्दान्त वीरपुरुषोंको नहीं देखा।

सुलतानबहादुर—सचमुच राजपूतोंके समान वीर जाति इस धरातलपर नहीं है।

(*रूमीखांका प्रवेश*)

रूमीखां—(*सलाम करके*) सुलतान सलामत ! लैचामें महाराणा विक्रमादित्य बड़ी वीरतासे लड़ा। यद्यपि उसकी सेना दो हजारसे अधिक नहीं थी फिरभी उसने और बनवीरने दो दिन तक हमारी दस हजार सेनाके साथ बड़ा भयंकर युद्ध किया एक भी हिन्दू सैनिकने पीठ फेरकर और भागकर अपने प्राण नहीं बचाए। समस्त सेनाके नष्टहोजानेपर विक्रमादित्य और बनवीर रात्रिके अंधकारमें न जाने किधर चलेगए। हमारे सैनिकोंको उनका पीछा करनेका साहस न होसका। यहाँके युद्ध का क्या समाचार है ?

सुलतानबहादुर—लाब्रीखाँने चतुरतापूर्वक किलेकी दीवारका एक बहुत बड़ा भाग गिराकर किलेमें प्रवेश करनेका मार्ग सरल बनादियाहै। कल रातको जिससमय किलेकी दीवार गिरी हमारी सेनाने बड़े तीव्र वेगसे किलेमें प्रवेशकरनेका प्रयत्न किया किन्तु राजपूतोंने सबके छक्के छुड़ादिए।

लाब्रीखाँ—न जाने इस राजपूतजातिमें प्रबल पराक्रमी असंख्य वीर सहसा कैसे उत्पन्न होजातेहैं ? दीवारके उड़तेही जो

च सौ हाड़ा वीर धराशायी हुए, उनके रिक्तस्थानकी पूर्तिकेलिए सहसा एक सहस्र राजपूत अपने प्राणोंकी आहुति देनेकेलिए वहाँ पहुंचगए।

रूमीखाँ——यह इस चित्तौड़दुर्गका अद्भुत प्रभाव है कि इसकी रज-रजसे वीर पुरुष उत्पन्न होतेहैं, जो इस दुर्गकी रक्षाकेलिए अपने प्राणोंको हथेलीपर लेकर युद्ध करतेहैं। दूर-दूरके हिन्दु, जिनका चित्तौड़से कोई संबंध नहीं, जिन्होंने चित्तौड़को अपने जीवनमें पहले कभी नहीं देखा, चित्तौड़पर विपत्ति आई देखकर अपने प्राणोंकी बलि चढ़ानेकेलिए प्रस्तुत रहतेहैं। चित्तौड़ हिन्दुओंका मस्तकमणिहै, हिन्दुस्थानका उज्ज्वल किरीट है।

सुलतानबहादुर——मैं काफिर हिन्दुओंके इस मस्तकमणिको ठोकर मारकर चूर-चूर करदूंगा। अलाउद्दीनखिलजीकी भांति मेरा नामभी हिन्दुस्थानके इतिहासमें चित्तौड़दुर्गके विनाशकके रूपमें सदा अमर रहेगा। कल जब मेरे सैनिक चित्तौड़दुर्गके भग्न प्राचीरसे दुर्गमें प्रवेशकरेंगे तो कोईभी उनकी गतिको न रोकसकेगा, और सर्वत्र हाहाकार, बलात्कार और हत्याका नग्ननृत्य प्रारंभ होगा। काफिरोंके बच्चे-बच्चेको काटकर मैं रुधिरकी इतनी विशाल सरिता बहादूंगा कि चित्तौड़ और उसके चारों ओर बीस मीलकी परिधिमें रुधिरही रुधिर दिखाईदेगा।

(*गुप्तचरका प्रवेश*)

गुप्तचर——(*सलाम करके*) सुलतान सलामत! बादशाह हुमांयूं अपार सेना लेकर गुजरातपर चढ़ाईकरने मालवातक पहुंचचुकाहै। उसने सुलतान सलामतकी सलतनतको तबाह करनेका प्रण कियाहै। शीघ्र यहां युद्ध बंद करके हुमाँयूंका सामना करिए। कहीं ऐसा न हो कि इस पहाड़ी मेवाड़में फंसे रहनेके कारण सुलतान सलामत गुजरातका स्वर्णप्रदेश खोबैठें।

सुलतानबहादुर--तुम जैसे विश्वासी गुप्तचरके कथनमें सन्देहकेलिए स्थान नहीं। किन्तु इधर चित्तौड़का पतन आज या कल अवश्यंभावी है। इतना परिश्रम करनेके पश्चात् इस कायको अधूरा छोड़कर चलेजानेकी इच्छा नहीं होती और उधर साम्राज्यके विनाशका भय है।

रूमीखाँ—सुलतान सलामत! अगर साम्राज्य रहेगा तो जहाँ-पनाह फिर भी चितौड़को जीतकर अपनी प्रतिहिंसा शांतकरसकेंगे। किन्तु यदि साम्राज्यही चलागया तो चितौड़पर विजय प्राप्तकरके भी क्या मिलेगा? संभव है बादशाह हुमाँयूंके आगमनसे उत्साहितहोकर हिन्दु हमारे साथ भयंकर युद्ध करें और हम लोग गुजरात और चित्तोड़ दोनों खोबैठें। अस्तु चित्तौड़का घेरा उठाकर साम्राज्यकी रक्षाका प्रयत्नकियाजाए।

सदरखाँ—इतनी कायरता! इतना परिश्रम करलेनेपर, सहस्त्रों मुसलमानोंके प्राणोंकी बलि चढ़ालेनेके पश्चात, जब कि विजय-प्रसाद हमारे हस्तगत होनेवालाहै, सहसा अनागत भयसे भीतहोकर भागजाना वीरत्वको कलंक लगानाहै। काफिरोंके विरुद्ध जिहाद करनेमें संलग्नहोनेपर यदि हुमाँयूं मुसलमान बदशाह होताहुआ भी हमारे ऊपर आक्रमणकरके काफिरोंके विनाशकी घड़ीको रोकताहै तो आजसे लेकर कयामतके दिन तक मुसलमान उसके नीच नामपर थूकेंगे। और उस दीन-विरोधीको दोजखकी अग्नि में भस्महोनापड़ेगा। अस्तु सुलतान सलामत हुमाँयूंके पास संदेशा भेजदें कि यदि उसे अपनी वीरतापर गर्व है तो हमारे जिहादके अंतमें आकर हमसे लड़े।

सुलतानबहादुर—सदरखाँ! तुम्हारा कथन सत्य है। हुमाँयूंके पास यही संदेशा भेजदो और कल चित्तौड़पर अधिकारकरनेके लिए तय्यारी करो।

सदरखाँ—बहुत अच्छा, जहांपनाह। (पट)

दृश्य ८

स्थान—चित्तौड़के राजप्रासादका एक भाग

मालोजी—नहीं शीतलसेनी! बनवीरका पक्षपाती होनेपर भी मालोजी इतना नीच नहीं कि इस विपत्तिकालमें राजकोषसे द्रव्य चुराकर विधर्मी यवनराजसे तुम्हारे पुत्रकेलिए सिंहासन खरीदनेका प्रस्तुत होजाय। मैं बनवीरकेलिये प्राणदेनेको प्रस्तुतहूं किन्तु चित्तौड़के पवित्र राजकोषको स्पर्षकरनेका साहस मुझमें नहीं।

शीतलसेनी—मेरे प्रेमका मूल्य केवल कोरी बातोंसे नहीं चुकायाजासकता, मालोजी! तुम तन-मन-धन, सब प्रकारसे बनवीरकेलिए मेवाड़का सिंहासन प्राप्तकरने केलिए प्रतिश्रुत हो। स्मरणरखना, शीतलसेनी ज्वालामुखी बनकर तप्तांगारभी बरसा सकतीहै।

(*हरिसिंह सोलंकीका प्रवेश*)

हरिसिंह—शीतलसेनी! मैं अभी लैचासे आरहाहूँ। बूंदी और मेवाड़में चारों ओर सैकड़ों वर्ग मीलमें सहस्त्रों गृहोंपर अग्नि धधकरहीहै। सहस्त्रों गृहोंके अर्द्ध दग्ध ध्वंशावशेष आततायियोंके अत्याचारोंके स्मारकस्वरूप खड़ेहैं। मार्ग स्त्री-पुरुष तथा बच्चों और गायोंके शवोंसे भरेपड़ेहैं। जलतेहुए गृहोंके धुंऐ, अधसड़े शवोंकी दुर्गन्धि तथा चील-गिद्ध-कौवोंकी काँव-काँवमें मार्ग चलना अत्यन्त कठिन होगयाहै!

शीतलसेनी—ओह!

हरिसिंह—सहस्रों वर्गमील तक कहीं कोई जीवित मनुष्य नहीं दिखाईदेता। सहस्रोंको गुलाम बनाकर बेचडालागयाहै। सहस्रों नारियोंपर उनके पति, पिता और पुत्रों के सन्मुख बलात्कार कियागयाहै। यवनोंकी विजयका कारण उनका शौर्य और

युद्धकुशलता नहीं, उनकी शर्वता और अत्याचारकुशलता है जिससे भीत होकर हिन्दु अपने स्त्री बच्चोंकी रक्षाकेलिए उनके आगमन का समाचार सुनतेही भागखड़ेहोजातेहैं।

शीतलसेनी—ठीक है। बनवीर और विक्रमादित्य कहां हैं ?

हरिसिंह—विक्रमादित्यके दो सहस्त्र सैनिकोंने रूमीखाँके दस सहस्त्र यवनोंके साथ बड़ी वीरतापूर्वक युद्धकिया। और चार सहस्त्र शत्रुओंको मूलीसा काट डाला। एकभी हिन्दुसैनिक पीठ दिखाकर रणस्थलसे नहीं भागा। सारी रणभूमि शवोंसे आच्छन्न होगई। विक्रमादित्यके यवन पदातिक धोखा देकर रूमीखांके साथ मिलगए। घायल और मूर्छित बनवीर और विक्रमादित्यको हाथी रणस्थलसे बनकी ओर लेभागा। सुलतान बहादुरके सैनिक और गुप्त-चर सारे राज्यमें उनकी ढूंढ़ कररहेहैं। वे एक ग्राममें गुप्तरूपसे अपनी चिकित्सा करवारहेहैं।

शीतलसेनी—चलो, मेरे प्रासादमें चलो। वहां कुछ अत्यावश्यक बातोंपर विचार-विनिमय करेंगे। (*तीनोंका प्रस्थान*)

दृश्य—९

स्थान—चित्तौड़, दुर्ग का एक भाग

कर्मसिंह—अखिलराव ! यह उस प्रबल प्रतापी अर्जुनरावका शिर है जिसने अपने पांच सौ हाड़ा वीरोंके साथ घटोत्कच और और उसके विकट गणोंके समान शत्रुसैन्यको मत्त-मात्तंगों—सा रौंदतेहुए प्राण विसर्जितकिएहैं। उन्होंने देवता, दैत्यों या अवतारों का-सा कार्य करतेहुए शत्रुओंका मानमर्दन कियाहै। माताके दूधकी लज्जा रखीहै। हिन्दुजातिका मुख उज्ज्वलकियाहै। ऐसे प्रबल पराक्रमी देशभक्त और धर्मरक्षक वीर हिंदुस्थानमें फिर कब जन्म लेंगे ?

(राधाका प्रवेश)

राधा—(अर्जुनरावके शिरको गोदमें लेकर) चारण! कहो, मेरे वीर पतिने रणप्रांगणमें किस प्रकार क्षात्रधर्मका पालनकरते हुए हिन्दुजाति, हिन्दुधर्म और चित्तौड़की रक्षाकेलिए प्राण विसर्जितकिए ?

रुद्र—कैसे कह सकेगा रुद्र हाड़ा वीरकी कथा ?
कार्तिकेय-वत् कराल, वीरभद्र हो यथा !
गूंजतेहैं भूमि-व्योम, काँपते दिगंत हैं !
अस्त-व्यस्त-त्रस्त भागरहे जीव-जन्तु हैं !
गर्जताहै हाड़ावीर बज्र-सा निनाद है !
आयाहै प्रचण्ड दैत्य किंवा मनुजाद है !
अर्जुनावतारहै या अंतक दुरन्त है !
भागरहे यवन विकल, आया कालदन्त है !

सब—साधु ! साधु !

रुद्र—मेष-अजा-यूथपर सिंहका प्रहार है !
रुधिर-नदी उमड़पड़ी, शत्रु-हाहाकार है ?
कब उठा प्रचण्ड खड्ग ? कब गिराहै शीशपर ?
रुंड-मुंड बिखरपड़े हस्त-पाद भूमिपर !
रक्त वस्त्र, रक्त अस्त्र, बक्त्र रक्तपूर्ण है !
यवन-दर्प-धैर्य-मान हुआ चूर्ण-चूर्ण है !
सुमन वीरता विलोक, सुमन हैं बखेरते !
मर्त्य भीत-विस्मित हो, धैर्य धार, देखते !

सब—धन्य ! धन्य !!

राधा—हिन्दु वीरांगना आजीवन जिस पुण्य-पर्वकी प्रतीक्षामें रहतीहै, वह आज आ उपस्थितहुआहै । आर्यपुत्रको गौरव-गाथाको श्रवणकरके मेरा रोम-रोम पुलकितहोउठाहै। अब मैं

विलम्बकरके वीरलोककी देवांगनाओंको प्राणनाथकी सेवाकरनेके कारण पुण्य-भाजन नहीं बनने दूंगी। चारण! चलो, चितापर अंतिम बार मुझे आर्यपुत्रकी गौरवगाथा सुनाओ।

(रुद्र और अर्जुनरावका शिर लेकर राधाका प्रस्थान)

अखिलराव—वीर अर्जुनराव और उसके दुर्दान्त पांच सौ हाड़ा वीरोंने अपना कर्त्तव्य पूराकरदियाहै। भग्न प्राचीरकी रक्षा केलिए वीरवर दुर्गाराव, अन्न और दद्दू चंदावत सरदार तथा उनके दो सहस्र वीरोंने अपना जीवन उत्सर्गकरदियाहै। रात्रि ही रात्रिमें प्राचीरका पुनर्निर्माण नहीं कियाजासकता। यदि इसी रात्रिमें ही शत्रु आक्रमण करदे तो दुर्ग-रक्षाका क्या उपाय हो सकताहै?

(*नेपथ्यमें*—मैं भूखोहूँ, मैं भूखोहूँ राजवलि प्रस्तुत करो"।)

अखिलराव—दिग्दिगन्तको कपातेहुए यह भयंकर वज्रघोष कहांसे आया?

कर्मसिंह—सुनतेहो, कालिकाका यह भीषण वज्रनाद? जब चित्तौड़का विनाश सन्निकट होताहै, जब लक्ष-लक्ष वीर रुंड-मुंडों से भी कालिकाकी क्षुधा-निवृत्ति नहीं होती, तब चित्तौड़के उद्धार केलिए, पवित्र शिशोदियाकुलके वंशधरकी रक्षाकेलिए तथा मानवमात्रके कल्याणकेहेतु राजवलि देनेकी परम्परा है।

साहीदास—किन्तु राजवलि कहांसे प्राप्तहो? विक्रमादित्य और बनवीर या तो युद्धमें मृत्युको प्राप्तहोचुकेहैं, अथवा कहीं आहतहोकर पड़ेहैं। चित्तौड़के एक-एक रज-कणकेलिए सहस्र-सहस्र हिन्दु अपने प्राण अर्पितकरनेको प्रस्तुतहैं, किंतु राजवलि कहाँसे आवे?

कर्मसिंह—हां, है तो विकट समस्या।

(सब चिन्ताग्रस्त होकर सोचतेहैं । उदयसिंहको गोदमें लेकर कर्णवती प्रवेश)

कर्णवती—यह लो यह है राजवलि ! मेरे इस दुधमुहे बालक को छत्र-चामर और राजकीय वस्त्र—भूषासे सुसज्जित करके पालकीमें रखकर रण-प्रांगणमें लेजाओ । इसे छोटा न समझो । यह हिन्दुकुलमें हिमालयके समान उस महाराणा संग्रामसिंहका अग्नि-तेज है, जिसने स्वतंत्रताकी बलिवेदीपर अपने एक-एक शोणित-चर्चित अंग-पुष्पको वीर भावसे अर्पितकियाथा, जिसके प्रबल पराक्रमसे दिल्लीके यवननरेश भी थरथर कंपितहोतेथे । हिन्दुजाति के सैनिक क्षत्राणी-पुत्रका जीवन धर्म, संस्कृत सभ्यता और स्वतंत्रताकी रक्षाकेलिए, दुर्बल, दीन, बालक, वृद्ध, वनिताके परित्राणके लिए होताहै । उसके जीवनका एक-एक क्षण विजय-मदिरा या पराभव-हालाहल पानकरनेकेलिए प्रस्तुतरहताहै । मारण और मरण तो उसकेलिए वर्म-खड्गकी भांति चिरसाथी हैं ।

साहादास—सत्य है ।

कर्णवती—उसका शरीर, उसका जीवन, उसका सर्वस्व, उसका नहीं, समस्त जाति और देशका होताहै । लो, इसे रणभूमि में लेजाओ । जिससे कालान्तर तक भारत भूमिके दुधमुंहे बालक भी इसके त्यागसे हिन्दुसभ्यता और स्वतंत्रताके लिए प्राणोत्सर्ग करनेका मंत्र सीखसकें ।

(युद्धवेशमें जवाहरबाईका प्रवेश)

जवाहरबाई—दुधमुंहे बालककी राजबलि देनेकी आवश्यकता नहीं है, महारानी राजबलिके लिए राठौर पुत्री जवाहरबाई उप-स्थित है ! आज रण-प्रांगणमें उपस्थित होकर मैं सुलतानबहादुर को दिखादूंगी कि हिन्दुनारियाँ भी हिन्दु-वीरोंके समान अपने धर्म, जाति और देशकी प्रतिष्ठाकी रक्षाकेलिए शत्रुओंका मान-

मर्दनकरना और जीवनउत्सर्गकरना जानतीहैं। उनके त्याग,शौर्य, पराक्रम, धैर्य, तेज, सतीत्व और देशप्रेममें संसारमें किसी भी जातिकी नारी उसके समकक्ष नहीं पहुंचसकती। तुम जौहरकेलिए नगर-नारियोंको प्रस्तुतकरो, मैं राजबलिकेलिए समरांगणमें उतरतीहूँ।

(बाघजीरावलका प्रवेश)

बाघजीरावल—देवता स्त्री-बलि स्वीकार नहीं करते, महाराणी! अस्तु राजबलिके नामपर अपने जीवनकी भेंट चढ़ाकर मुझसे यह सौभाग्य न छीनो। राजबलि मैं दूंगा। क्या मेरी बाहुओंमें बप्पा रावलका पवित्र रुधिर नहीं है? क्या हुआ यदि मेरे पिता सूर्य-मल्लने पृथ्वीराजसे आजीवन युद्ध किया और देवल नगरी बसाई? महाबली युधिष्ठिरने कहाथा कि आपसके कलहमें हम पांच हैं और वे सौ, किन्तु बाह्य शत्रुकी उपस्थितिमें हम एक सौ पांच हैं। जहां मातृभूमिकी स्वतंत्रताका प्रश्न हो, चित्तौड़का मान संकटमें हो, हिन्दु जाति और हिन्दुसभ्यताके जीवन-मरणका प्रश्न हो, उस समय कौन हिन्दु अपने क्षुद्र वैमनस्योंका रोना रोतेहुए शत्रुका साहस बढ़ाएगा? सामन्तो! चिन्ता न करो। जौहरका आयोजन करो। बाघजीरावल आज राजबलि देकर अपना जीवन सार्थक करेगा।

सामन्तगण—धन्य! धन्य!!

जवाहरबाई—वीर बाघजी! तुम्हें धन्य है! जबतक हिन्दु जातिकी कुक्षिमें इस प्रकारके वीरपुरुष उत्पन्नहोतेरहेंगे, तबतक उसे आततायी यवनोंकी लक्ष-लक्ष-चेष्टाएंभी विनष्ट न करसकेंगी जबतक गंगा-यमुनामें सलिल है, जबतक आकाशमें सूर्य-चन्द्र हैं, तब-तक बाघजी! वीरगण तुम्हारा गुणगान करतेरहेंगे। मैंभी तुम्हारे साथ-साथ वीरगतिको प्राप्तहूँगी। मैं तुम्हारा यश न

छीनाचाहती केवल क्षत्राणीका धर्म निभाना चाहतीहूं। महा-राणी ! जाओ, जौहरकी तय्यारी करो।

कर्णवती—ठीक है। मैं नगर-नारियोंको सतीकुंडमें भस्महोने के लए प्रस्तुतकरतीहूं। किन्तु उदयसिंहकी रक्षा अब कौन करेगा ? चित्तौड़का पतन अब निश्चित है। यदि कोई वीर प्राणोंकी बाजी लगाकर यवन- दलको चीरताहुआ उदयसिंहको बूंदीके विश्वस्त नरेश वीर शूरस्थाणु के पास पहुंचासकता तो …

चूकासेन दुढेरा—चिन्ता न करिए महादेवी ! मैं सुलतानबहा-दुरकी तोपोंके गोलोंकी चिंता न करताहुआ बड़े यत्नसे रातही रात बालक उदयसिंहको बूंदी पहुंचादूंगा, और अपने प्राणोंके रहते उसके जीवनपर आंच न आने दूंगा।

पन्नाधाय—देवि ! मेरी प्रबल इच्छा थी कि मैं महाराणीके नारीसैन्यके साथ युद्धमें शत्रुओंका मानमर्दन करती, और अपने पतिदेवके समान चित्तौड़की रक्षाकेलिए प्राण विसर्जितकरदेती। किन्तु अब मैं वीरलोक-प्राप्तिकी लालसा संवरणकरके उदयसिंहकी रक्षा- और पालनमेंही अपना जीवन लगादूंगी।

कर्णदेवी [*उदयसिंहको पन्ना धायकी गोदमें देकर*] ठीक है। तुम्हारा चन्द्र भी उदयसिंहके समान आयुवाला है। तुम्हें उदयसिंहको पालनेमें कोई कठिनाई न होगी। लो, महाराणा संग्रामसिंहके अंतिम स्मारकको संभालो। चूकासेन दुढेरा जैसे वीर और पन्नाधाय जैसी स्वामिभक्तिपूर्ण वीरांगना के हाथोंमें उदयसिंहको सौंपदेनेपर अब मुझे कोई चिंता नहीं रही। मैं शान्तिसे प्रज्वलित चितापर बैठसकूंगी। जाओ, जिस प्रकारसे होसके उदयसिंहको सुरक्षित स्थानपर पहुंचाओ (*उदय-सिंहका मुंह चूमकर*) जाओ, अपने पूज्य पिताके समान देश-धर्म

की रक्षाकेलिए अपने प्राणोंकी आहुति देदेना। (*उदयसिंहको लेकर चूकासेन दूदेरा और पन्नाधायका प्रस्थान*) मैं नागरिक-नारियोंको जौहरकेलिए प्रस्तुतकरने जातीहूँ। (*प्रस्थान*)

बाघजीरावल—अब बिलम्बकरनेका समय नहीं। कर्मसिंह! लाओ, छत्र-चामर और किरण, पीत वस्त्र, विजय–वैजयन्ती और उज्ज्वल छेंगी। (*सामन्तगण बाघजीको पीतवस्त्र पहनाकर राजवेशमें सजातेहैं। सामन्तगण भी पीत वस्त्र पहनकर युद्धके लिये सुसज्जितहोतेहैं।*)

रुद्र—

जीवनकी भेंट चढ़ादेंगे, माताकी लाज बचालेंगे !
जिन वीरोंने सिंधुवक्षपर अद्भुत सेतु रचायाथा।
जिन वीरोंने अंगुली ऊपर पर्वत विपुल उठायाथा॥
उन वीरोंकी संतति हैं हम, अरिगणमें त्राहि मचादेंगे ॥जी०॥
जिन वीरोंने वीर सिकन्दरका अभिमान मिटायाथा।
जिन वीरों ने शक–शिथियनको भारतसे मारभगायाथा॥
उन वीरोंकी संतति हैं हम, अरिगणको मारमिटादेंगे। जी०॥
जिन वीरोंने कंधहार तक हिंदूध्वज लहरायाथा।
जिन वीरोंने वालिद्वीप तक हिन्दू-गान करायाथा॥
उन वीरोंकी सन्तति हैं हम; हम साका घोर रचादेंगे।
जीवनकी भेंट चढ़ादेंगे माताकी लाज बचालेंगे॥

सामंतगण—*एकलिंग भगवानकी जय! महाराणा बाघजीरावलकी जय*

(*सामन्तगणोंके साथ बाघजीका प्रस्थान*)

[*अपने बालकोंको गोदमें लेकर जौहरकेलिए प्रस्तुत कुछ नारियोंके साथ कर्णवतीका पुनः प्रवेश*]

कर्णवती— तेरह सहस्त्र हिन्दु नारियां अपने रूप–लावण्य और यौवनको, अपने कुसुम शरीरोंको, और कमल-कलियोंके

समान अपने दुधमुंहे बालकोंको अग्निमें होमकरनेको प्रस्तुतहो चुकीहैं। एक मुहूर्तमें सब अपने मानकी रक्षाकेलिए वीरगतिको प्राप्तहोजाएंगी।

रुद्र—वन्य पशुओंके समान वर्बर इन यवनोंके हस्तगत होकर जीवन धारणकरना हिन्दुनारिकेलिए नरकसे भी अधिक दुःखप्रद है। ये हृदयशून्य आततायी केवल धर्मभ्रष्टकरके बलपूर्वक सतीत्वहरणही नहीं करते, वरन् अल्पकाल तक अपनी वासना शान्तकरनेके पश्चात् अभागिनी अबलाओंको अपने हरमके असह्य कारागारमें वन्दिनी बनाकर उन्हें ऐसे दारुण यातनामय जीवन व्यतीत करनेकेलिए बाध्यकरतेहैं जिसमें उन्हें न पत्नीका-सा आदर प्राप्तहोताहै न माताका-सा गौरव।

कर्णवती—ऐसे बर्बरोंके हाथोंमें पड़नेकी अपेक्षा, जिन्होंने न पराजितपर दयाकरना सीखाहै न अबलाओंसे सद्व्यहार, मृत्यु, दारुणसे दारुण यतनाओंसे युक्त मृत्यु, अति उत्तम है।

जवाहरबाई—भारतपर चिपकेहुए इस यवन-कंलकको धोनेके लिए अब तक न जाने कितनी लक्ष हिन्दुनारियोंने अपने यौवनको इसीप्रकार अग्निकी भेंट करदियाहै। न जाने कितनी लक्ष हिन्दुनारियोंका वर्बरोंने बलपूर्वक सतीत्व हरणकियाहै, और उनको दो-दो रुपएमें अरब, ईराक, ईरान, अफगानिस्तानके वबरोंके पास बेचाहै। न जाने कितनी लक्ष हिन्दुनारियां इन नर-राक्षसोंके हरमोंमें पड़कर दारुण बंदीजीवन व्यतीतकररहीहैं। और कितनी लक्ष नारियोंने जलमें डूबकर या विष खाकर अपनी लज्जा बचाईहै।

रुद्र—भारतभूमि! यदि तुझे स्वतन्त्र रहनाहै, अपनी सभ्यता और संस्कृतिकी रक्षा करनीहै, अपनी प्यारी पुत्रियों और पुत्रों को इन नरदानवोंके दारुण अत्याचारोंसे बचानाहै तो तुझे एक

बार अपने करोड़ों पुत्रोंकी रुधिर-सरिता बहाकर इस कलंकको धोनाहीहोगा

कर्णवती—अकारण चितौड़पर आक्रमण करके उसका विनाश करनेवाले आततायी यवन! आजसे एक मासके समाप्तहोते ही तेरे विनाशकी घड़ी आरम्भहोगी, जब तू अपने जातिभाईद्वारा पराजितहोकर अपना सर्वस्व खोबैठेगा। शरणार्थियोंकी भांति इधर-उधर मारा-मारा फिरेगा, किन्तु कहीं तुझे शिर छिपानेको स्थान न मिलेगा। (*जवाहरबाईके साथ प्रस्थान*)

(*सामन्तगणोंके साथ रुधिरसे लथपथ बाघजीका प्रवेश*)

बाघजीरावल— (*हुँकारकर*) अब किसीके मुंह देखनेकी आवश्यकता नहीं रही। अब किसीकेलिए अश्रुपात नहीं करने होंगे। जिनकेलिए हृदय रोताथा, जो यत्नकी धन थी, व्यथाकी सामग्री थी, वह प्रीतिदायिनी आनन्दमयी कन्याएं, बहनें, स्त्रियां, और माताएं अग्निमें प्रवेशकरचुकीहैं। शिशु राजकुमार उदयसिंह सुरक्षित होचुकाहै। खोलो, दुर्गके द्वार खोलदो। खड्ग लेकर आततायियों पर आक्रमणकरदो। (*हुँकारताहै।*)

सामन्तगण— एकलिंगभगवानकी जय! शिशोदियाकुलकी जय! महाराणा बाघजीरावलकी जय!

(*सबका प्रस्थान*)

दृश्य १०

स्थान— चत्तौड़, दुर्ग का द्वार

अखिलराव—भयंकर युद्ध होरहाहै । वीर हिन्दुओंके भीषण खड्गप्रहारसे घबराकर यवनोंकी वाहिनी उत्तरद्वारसे भागउठीहै । इस पूर्व द्वारके बाहर असंख्य यवनसैनिक डटेपड़ेहैं । दूर हाथीरप सुलतानबहादुर एक-एक करके हिन्दुवीरोंको कटताहुआ देखरहा है । ओह ! दिग्दिगन्तको कंपादेनेवाला यह कितना भीषण शब्द हुआ ! लाखीखांकी तोपोंके गोले दुर्गकी प्राचीरको कंपा कर निकटही गिररहेहैं । समर-सागरमें प्रबल लहरें उठरहीहैं । यह लो, यह यवनसैनिक आगए ! आओ, भेड़ो ! यह भूखा सिंह तुम्हारीही प्रतीक्षामें है ।

(दो-तीन यवनोंका प्रवेश । उनके पीछे युद्धकरतेहुए अखिलरावका प्रस्थान । रुधिरसे लथपथ बाघजीरावलका प्रवेश)

बघजीरावल —चितौड़की मानरक्षाकेलिए एक-एक हिन्दुवीर बीस-बीस यवनोंको मारकर वीरगतिको प्राप्तहोगयाहै । चारों ओर शवही शव दिखाईदेरहेहैं । रुधिरसरितामें सैनिकोंके कटेहुए शिर, हस्त और बिखरेहुए अस्त्र जलजन्तुओंकी भांति तैररहेहैं ;

(रुधिरसे लथपथ जवाहरबाईका प्रवेश)

जवाहरबाई—पापी सुलतानबहादुरकी खोजमें मैंने चारों ओर रणांगण छानडाला, किन्तु उसका कहीं पता न लगा । कायर उल्लूकी भाँति कहीं छिपाहुआहै । इच्छा थी कि उसे एक बार हिन्दुनारियोंका पराक्रम दिखातीहुई उसे उसकी करनीका फल चखाती ।

(रूमीखां और सदरखांका प्रवेश)

रूमीखां—सुलतान सलामतके पास पहुंचना किसी भाग्यशालिनी स्त्रीका ही काम होताहै, महारानी ! यदि तुम्हें अपनी वीरता पर गर्व है तो, आओ । सुलतानसलातके सिपहसालार रूमीखाँ से युद्धकरो ।

सदरखाँ—यदि तुम्हें सुलतानसलामतके हरममें पहुँचनेकी अभिलाषा है तो आओ, मेरे साथ चलो ।

जवाहरबाई—नीच यवन ! तुझे ऐसे शब्द मुखसे निकालते लज्जा नहीं आती (*सदरखांपर आक्रमणकरतीहै ।*)

बाघजीरावल—अपनी वीरतापर गर्व करनेवाले यवनो ! स्मरण रखो तुम्हें भारतभूमिपर अपनी वीरताके कारण नहीं, अपनी निर्दयता, बर्बरता और पाशविकताके कारण सफलता मिलरहीहै । ले, अपनी करनी-का फल चखनेकेलिए सावधान होजा । (*रूमीखांपर आक्रमण करताहै ।*)

(थोड़ी देर युद्धकरनेके पश्चात् रूमीखां और सदरखां घायल होकर भागतेहैं । अखिलराव और कर्मसिंहका प्रवेश)

बाघजीरावल—कर्मसिंह ! अब चित्तौड़के विनाशकी अंतिम घड़ी आ-पहुंचीहै । तत्काल अखिलराव, कर्णसिंह, साहीदास आदि पांच सांमतोंको लेकर दुर्गसे बाहर निकलजाओ । बालक उदयसिंहकी रक्षाकरना और उचित समयपर उसे चित्तौड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरदेना । विश्वास रखो—अति शीघ्र चित्तौड़का उद्धार होगा । शिशोदियाकुल पुनः मेवाड़के सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगा और चित्तौड़दुर्ग पर पुनःहिन्दुध्वज लहराएगा । जाओ, विलम्ब न करो ।

कर्मसिंह—हम लोगोंकी इच्छा इसी समय चित्तौड़की

रक्षा करतेहुए अपने प्राण विसर्जितकरदेनेकी थी। किन्तु महाराणाकी आज्ञा शिरोधार्य है। (*सामन्तोंका प्रस्थान,*)

लाब्रीखाँके साथ अनेक यवनोंका प्रवेश)

लाब्रीखाँ—इन वीरोंको जीवित वन्दी बनालो।

बाघजीरावल—सिंहोंको वन्दी बनाना सरल नहीं है, फिरंगी वीर! हिन्दु युद्ध करना जानतेहैं, प्राण देना जानतेहैं वन्दी बनना नहीं। आओ महाराणी! अब उस नर-लीलाको शान्तकरें जिसे स्मरणकर युग-युगान्ततक हिन्दुयुवक-युवतियाँ देश-धर्मऔर जातिकी रक्षाके लिए हंसते-हंसते जीवन-उत्सर्ग करतेरहेंगे।

(*बाघजी और जवाहरबाई एक-दूसरेका बध करतेहैं।*)

लाब्रीखाँ—मैंने यूरोपके युद्धोंमें भागलेते समय अनेक साहसी वीरोंको देखाहै। अरब, ईरान और हिन्दुस्थानके भी कई युद्धों में मैं सम्मिलित हुआहूँ। किन्तु इस वीर नारी और इस वीर पुरुष के समान साहसीजनोंको मैंने अभीतक नहीं देखा। इस वीरप्रसू चित्तौड़को धन्य है जहाँ ऐसे वीरपुरुष पैदाहोतेहैं। (*मृतिका उठाकर मस्तकपर मलताहै।*) यदि सुलतान सलामत इस वीर हिन्दुजाति-को शत्रु न बनाकर इससे मित्रताके संबंध स्थापितकरते तो ये वीरपुरुष उसके साम्राज्यकी रक्षाकेलिए वज्रस्तंभ सिद्धहोते।

(*सुलतान बहादुरका प्रवेश*)

सुलतान बहादुर—आज काफिरोंका विनाश देखकर हृदय शांत हुआहै। सारे दुर्गमें प्राचीरके अन्दर-बाहर सर्वत्र मृत शरीरोंका ढेर लगाहै। रुधिरकी सरिताएं बहरहीहैं। सहस्रों अधमरे छटपटारहेहैं। घावोंकी विषम यातना न सह सकने के कारण अनेकों विषपान कररहेहैं, अनेकों छुरिकासे अपना गला काटरहेहैं। चीलोंने अभीसे छीना-झपटी आरंभकरदीहै। ३२०००

काफिर कालके घाट उतारेजाचुकेहैं। और सामन्तकुल नष्ट होचुकेहैं।

लाब्रीखाँ--निस्सन्देह।

सुलतान बहादुर—मेरे वीरों! तुम्हारे जिहादके सन्मुख काफिरों की वीर-से वीरजाति पराजितहोजातीहै। तुम वीरपुत्र हो। वसुधा विजयकेलिये उत्पन्नहुएहो। जिसने तुम्हारे विरुद्ध शिर उठाया उसीका विनाशहुआ। जहाँ तुम्हारे पैर पड़े वहीं तुम्हारा राज्य हुआ। काफिरोंकी धन-सम्पत्तिका सृजन तुम्हारेलिए हुआहै। उनके पुत्र तुम्हारे गुलाम हैं, उनकी स्त्रियां और लड़कियाँ तुम्हारी दासियाँ हैं। जाओ, किलेमें लूटमचाओ, मौजकरो। सदरखां! जाओ, नर्तकियोंको बुलाओ। रूमीखां! जाओ, दुर्गशिखर पर इस्लामका झन्डा गाड़दो।

(सदरखां, औररूमीखांका प्रस्थान)

लाब्रीखां! देखी तुमने इस्लामके वीरपुत्रोंकी वीरता?

लाब्रीखां—देखीहै सुलतान सलामत! किन्तु चित्तौड़में आकर हिन्दूवीरों और वीरांगनाओंकी जो वीरता देखी, उसके जोड़की संसारमें कहीं नहीं देखी। चित्तौड़ नष्टहोनेपरभी अमर है, महान् वीरभूमि है।

(सदरखांका नर्तकियों और मदिराके साथ प्रवेश। सुलतान बहादुर मदिरापान करताहै। नर्तकियां नृत्य करतीहुई गातीहैं।)

गीत

साकी! एसा जाम पिलादे।
भूलजाऊं दुनियाके सब दुख,
भूलजाऊं दुनियाके सब सुख,
सुपनेमें मुझे सुलादे। साकी! ऐसा जाम पिलादे॥

बीतजाए जीवनकी तड़फन,
मिलजावे तन-मन से तन-मन,
अपनेमें मुझे मिलादे ॥ साकी ! ऐसा जाम पिलादे ॥

(रफ़ीअहमदका प्रवेश)

रफीअहमद—सुलतान सलामत ! मैंने सारंगपुर पहुंचकर बादशाह हुमांयूं से आपका संदेशा कहा ! उसने कुछ सोच-विचारने के पश्चात् मदिराका प्याला खालीकरतेहुए कहा- "जबतक जिहाद पूर्णहोनाहै तबतक मैं गुजरातपर आक्रमण नहीं करूंगा। किन्तु ज्योंही मुझे समाचार मिला कि जिहाद पूर्ण होगयाहै, मैं तत्काल माँडूपर आक्रमण करदूंगा और सुलतान बहादुरको इतना कठोर दंड दूंगा कि फिर किसीको हुमांयूंके बागी सरदारों को शरणदेनेका साहस न होगा "।

सुलतान बहादुर--चिंता नहीं।

(पट)

अंक २

दृश्य १

स्थान—चित्तौड़, राजप्रासाद

साहीदास—चित्तौड़के ध्वंशावशेषपर पन्द्रह दिनतक रंगरलियाँ करके हुमायूं के भयसे सुलतान बहादुर भागगयाहै। अलाउद्दीन द्वारा प्राचीन चित्तौड़के विनाश किएजानेपर जिस नवीन चित्तौड़ का निर्माणकियागयाथा, वह सुल्तान बहादुरकी बर्बरतासे नष्ट-भ्रष्टहोचुकाहै। अर्द्धभस्म प्रासादोंकी काली-काली भयंकर दीवारें इधर-उधर खड़ीहैं। स्थान-स्थानपर मिट्टी-पत्थरोंके ढेर के ढेर लगे हैं। चारों ओर दूर-दूर तक शवही शव पड़ेहुएहैं। जिनसे ऐसी भयंकर दुर्गन्धि आरहीहै कि साँस लेना कठिन होरहाहै। मानव शरीरोंपर काक-गृद्ध—शृगाल झपटरहेहैं।

अखिलराव—मातृभूमि चित्तौड़! तेरी यह दुर्दशा! मां, तेरी रक्षाकेलिए तेरे सहस्र-सहस्र वीरपुत्र मृत्युका तिरस्कार करते हुए कटमरेहैं। तेरी सहस्र-सहस्र पुत्रियां तेरी लज्जाकी रक्षाके लिए अपने यौवन और सौन्दर्य की अवहेलनाकरके जीवित अग्निमें जल मरीहैं। तेरे एक-एक रजकण को सहस्र-सहस्र वीरोंने अपने रुधिरसे सींचाहै। फिर भी हे महाश्मशान! तुझे यह दिवस देखना पड़ा? (*रोताहै*)

कर्मसिंह—अखिलराव! चित्तौड़ महाश्मशान बनाहुआहै। इसे पुनः बसानाहोगा। शीघ्र श्रमिकोंद्वारा समस्त मृतशरीरोंको दुर्गके बाहर एक स्थानपर एकत्रित करवाकर उनका दाहसंस्कार करवादो। जबतक इन स्थानोंको स्वच्छ नहीं कियाजाता तबतक यहां कोई निवास नहीं कर सकता।

अखिलराव—बहुत अच्छा। (*प्रस्थान*)

साहीदास—आज इस श्मशानका कोई अधिपति नहीं, कोई इसकी बात पूछनेवाला नहीं।

(*बनवीरका प्रवेश*)

बनवीर—अधिपति उपस्थित है, साहीदास! उज्जैनके महा-पराक्रमी विक्रमादित्यके समान महाराणा विक्रमादित्य जीवित हैं। यह हमलोगों और चित्तौड़का सौभाग्य है कि वे लैचासे सकुशल लौटआएहैं।

कर्मसिंह—हमारा और चित्तौड़का सौभाग्य नहीं, दुर्भाग्य है बनवीर! अपनी चाटुकारितासे तुम कायर शृगालको पराक्रमी सिंह नहीं बनासकते। जिसने चित्तौड़की विपत्तिके समय चित्तौड़का साथ नहीं दिया, महान् संकटके समयमें जब चित्तौड़के सिरपर यमदूत नृत्य कररहेथे, जब चित्तौड़-निवासियोंको नेताकी अत्यधिक आवश्यकता थी, उससमय जो चित्तौड़-नरेश होतेहुए भी मृगयामें संलग्न रहा, उसे किसप्रकार चित्तौड़के पवित्र सिंहासनका अधिकारी समझें ?

बनवीर—बस।

कर्मसिंह—अभी बस कैसे? जिसके कर-भारसे निर्धन जनता त्राहि-त्राहि कररहीहै, जिसे जनताके रुधिरको चूसकर रंगरलियाँ करनेकी सूझती है, जो नीच माहीर लुटेरासे प्रजाकी रक्षा नहीं करसकता उसे किसप्रकार चित्तौड़के पवित्र सिंहासनका अधिकारी समझें ? विक्रमादित्य चित्तौड़के सिंहासनका अधिकार उसी दिन खोचुकाहै जिस दिन उसने माहीर लुटेरोंसे प्रजाकी रक्षाकरना छोड़कर मृगयाकेलिए प्रस्थान कियाथा।

(*विक्रमादित्यका प्रवेश*)

विक्रमादित्य—सिंहासन इस प्रकार त्यागनेकी वस्तु नहीं है,

कर्मसिंह ! जिस सिंहासनपर बैठतेही सामान्य मनुष्यके अन्दर सहस्र हस्तियों और लक्ष सैनिकोंकी शक्ति आजातीहै, जिस सिंहासनपर बैठतेही सामान्य मनुष्यभी लक्ष-करोड़ मनुष्योंका भाग्यविधाता बनजाताहै, जिस सिंहासनपर बैठतेही मनुष्य यमराजकी विनाशशक्ति और विष्णुकी वरदशक्तिको प्राप्तकरलेता है, वह सिंहासन ऐसेही नहीं त्यागाजासकता। मेरी बाहुओंमें महाराणा संग्रामसिंहका रुधिर है। जिसे चित्तौड़का सिंहासन हस्तगत करनेकी इच्छा हो वह आवे मेरे साथ युद्ध करे। मेरे स्वामिभक्त सामंतो ! मेरा साथदो और आजही निश्चय करडालो कि इस सिंहासनका अधिकारी कौन है ?

कर्मसिंह—आपका साथ कौन देगा, विक्रमादित्य ? आपने असह्य कर-भार और अत्याचारसे सामान्य प्रजाको और अपने दुर्व्यवहारसे सामन्तवर्गको असन्तुष्ट करदियाहै। आपका साथ देनेवाला यहां कोई नहीं।

विक्रमादित्य—कर्मसिंह ! अबतक तुम्हें वृद्ध समझकर, तुम्हारे श्वेत केशोंकी लज्जा रखनेकेलिये मैंने तुम्हारी धृष्टतापर विचार न किया किन्तु अब मैं समझताहूँ कि लातोंके भूत बातोंसे नहीं मानते। (*कर्मसिंहको लात मारतेहुए*) चित्तौड़के महाराणाका तिरस्कारकरनेवाले मूर्ख वृद्ध ! यह खड्ग तेरा रुधिरपान करेगा।

साहीदास—यदि आपके खड्गमें रुधिरपानकरनेकी शक्ति थी, विक्रमादित्य ! तो इसे सुलतान बहादुरके विरुद्ध निकालते। इस वयोवृद्ध कर्मसिंहको—जिसने महाराणा संग्रामसिंहके साथ-साथ अनेक भीषण युद्धकिएहैं, जिसने कनुआके महासमरमें अपने प्राणोंको संकटमें डालकर महाराणा संग्रामसिंहके प्राणों-की रक्षा कीथी, पादप्रहारसे विताड़ितकरके आपने सामन्तवर्गकी रहीसही सहानुभूतिकोभी खोदियाहै।

कर्णसिंह—(क्रोधसे) भ्रातृगण ! अबतक तो हमलोग फूलकी गंध सूंघतेरहे, परन्तु इस समय उसके फलको चखेंगे।

कर्मसिंह—कलहो उस फलका स्वाद ज्ञातहोजाएगा। (*हरिसिंह सोलंकी और मालोजीके अतिरिक्त शेष सामन्तोंका प्रस्थान*)

विक्रमादित्य—क्या समस्त सामन्त विद्रोही होगए ? कोईभी मेरा साथी नहींरहा ? चिंता नहीं विक्रमके शरीरमें महाराणा संग्रामसिंहका रक्त है। वह अकेलाही इन सबके दमनकेलिये पर्याप्त है। सिंह अपने बाहुबलसे अकेलाही समस्त वनपर शासन करताहै। सामन्ताधम कर्णसिंह, और कर्मसिंह ! तुम्हारी धृष्टताका फल तुम्हें कलही चखायाजायगा।

बनवीर—मैं आपका साथी हूँ,महाराणा ! चाहे सारा संसार पलटजाए, चाहे गंगा यमुनाका साथ त्यागदे, और नक्षत्र चन्द्रमाका साथ छोड़दें किन्तु बनवीर महाराणाका साथदेगा, छायाकी भांति, अनुचरकी भांति, परम विश्वासी स्वजनकी भांति।

(*विक्रमादित्यके साथ प्रस्थान*)

हरिसिंह—मालोजी! बनवीरका सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरनेका अति उत्तम अवसर उपस्थितहै।

मालोजी—हाँ, है तो अति उत्तम ! किन्तु अभी हमें शान्तिपूर्वक देखनाचाहिए कि वायुकी गति किधरको है। उतावलीसे हम अपनाही अनिष्ट-साधन करबैठेंगे।

हरिसिंह—नहीं, विलम्बका अवसर नहीं। जिस समय लौहखंड अत्यन्त तप्त हो, उसी समय पूरा बल लगाकर प्रहारकरना चाहिए! समस्त सामन्त विक्रमादित्यके विरोधी होगएहैं। चित्तौड़के सिंहासनका बनवीरके अतिरिक्त अन्य कोई अधिकारी है नहीं। अस्तु समस्त सामन्त बनवीरकाही साथ देंगे।

मालोजी—इसमें तो सन्देह नहीं कि बनवीरही चित्तौड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठितहोगा।

हरिसिंह—इसीलिए तो मैं कहताहूँ कि यदि हम इस अवसर पर बनवीरकेलिए विशेष प्रयत्न करेंगे तो उसके सिंहासनपर आरूढ़ होजानेपर हमलोगोंको उन्नति करनेका विशेष अवसर प्राप्तहोसकेगा। यदि नहीं करेंगे तो कर्मसिंह आदि सामन्तोंका बनवीरके राज्यकालमेंभी उसी प्रकार बोलबाला रहेगा जैसा पहले था।

मालोजी—हाँ इसमें तो कोई सन्देह नहीं।

हरिसिंह—तो जाओ, शीतलसेनीको सूचना दो कि हमलोग आरहेहैं।

मालोजी—बहुत अच्छा! शीतलसेनी आजकी घटनासे बहुत प्रसन्न होगी।

(*प्रस्थान*)

हरिसिंह—शीतलसेनीका नाम लेतेही उसका मुख किसप्रकार प्रफुल्लित होगया! कितनी शीघ्रता और उत्सुकतासे उसने उसके प्रासादकी ओर पग बढ़ाए! मेरा यह अनुमान कि शीतलसेनी मालोजीकी प्रेमिकाहै, विश्वासमें परिणित होनेलगाहै। शीतल-सेनीके पुत्रकेलिए इतना प्रयत्नकरनेपरभी मैं जब उससे प्रेमकी ओर संकेत करताहूँ तो वह मुझे शब्दजालमें फंसाए रखकर अपना कार्य-साधन करतीरहतीहै। (*ठंडी साँसलेकर*) नारीके हृदयको जीतनेकेलिए, उसके शरीर और प्रेमपर अधिकार प्राप्तकरनेकेलिए, वीरत्व और सद्गुणोंकी उतनी आवश्यकता नहीं है, जितना गौरवर्ण, युवावस्था, वाचालता और बार-बार मिलनेकी। जो एकान्तमें किसी नारीसे मिलनेके कई अवसर ढूंढ-निकालसकताहै, वह चाहे दरिद्र हो, गुणहीन हो, हीनजाति हो,

सेवकमात्र हो, उसके शरीर और प्रेमपर अधिकार प्राप्तकरनेमें सफल होजाताहै। मुझसे कार्य सिद्ध करनेकेलिए शीतलसेनी मुझे तो दूर-दूर भेजदेतीहै और आप मालोजीको लेकर आनन्द किया करतीहै। चलूं, मैंभी पीछे-पीछे चलकर देखूं शीतलसेनी मालोजीका किसप्रकार स्वागत करतीहै।

(प्रस्थान)

दृश्य २

स्थान—शीतलसेनीका प्रासाद

(हरिसिंहका प्रवेश)

शीतलसेनी—हरिसिंह ! मैं मालोजीसे सब सुनचुकीहूँ। अब कार्यसाधनमें विलम्ब नहीं करनाचाहिए। आज रात्रिको ऐसा प्रयत्न करनाचाहिए कि कलका सूर्योदय मेवाड़के सिंहासनपर बनवीरको प्रतिष्ठित देखे।

मालोजी—सोचसमझकर पग उठानाचाहिए, शीतलसेनी !

शीतलसेनी—विलम्बकी शिथिलताके आवरणमें जो अपनी निष्कर्मण्यताको ढकनेका प्रयत्न करतेहैं, उनसे सफलता दूर भागतीहै। मालोजी ! जाओ, कर्णसिंह, अखिलराव, साहीदास आदि सामन्तोंको बुलालो।

मालोजी—बहुत अच्छा। *(प्रस्थान)*

हरिसिंह—शीतलसेनी ! एक कोषमें दो खड्ग नहीं रहसकते।

शीतलसेनी— तुम्हारा कथन सत्य है, हरिसिंह ! मेवाड़के सिंहासनपर या तो विक्रमादित्यही रहसकताहै या बनवीरही। बनवीरको सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरनेकेलिए विक्रमको उससे दूर हटानाहीहोगा।

हरिसिंह—ठीक इसी प्रकार, शीतलसेनी ! तुम्हें भी करना होगा ।

शीतलसेनी— क्या करनाहोगा, हरिसिंह ?

हरिसिंह— नहीं समझी ? शीतलसेनी ! मैं सैनिक हूँ । युद्धकरना जानताहूँ, बातोंके आवरणमें हृदयके भावोंको छिपाना नहीं जानता । तुम्हारा प्रेमी या तो मालोजीही होसकताहै या हरिसिंहही ।

शीतलसेनी— (*बनातीहुई*) कौन कहताहै कि मालोजी मेरा प्रेमी है ? उसे तो मैं अपना कार्य सिद्धकरनेकेलिए मूर्ख बनातीहूँ ।

हरिसिंह— और मुझे ?

शीतलसेनी— तुम्हें मूर्ख बाननेकी आवश्यकता नहीं ।

हरिसिंह— क्यों ? क्योंकि मैं पहलेहीसे मूर्ख हूँ ।

शीतलसेनी— यह क्या कहतेहो हरिसिंह ? तुम मेरे हृदय-सम्राट हो । कल बनवीरको सिंहासनपर प्रतिष्ठित करदो, बस फिर मैं तुम्हारी हूँ । समझे ?

हरिसिंह— कैसे विश्वास करूं शीतलसेनी ? तुम मुझसे प्रत्येक समय यही कहतीहो ।

शीतलसेनी— ऐसे । (*दोनों हाथोंसे हरिसिंहके गालोंको छूकर उसके मुखपर प्रेमभरी दृष्टि डालतीहै ।*) देखो, किसीके पैरोंकी आहट आरहीहै ।

(*हरिसिंहका प्रस्थान*)

शीतलसेनी—भीषण अस्त्र-शस्त्रोंको लेकर रण-प्रांगणमें पदार्पणकरनेवाले, मानवसे दानव बनकर रुधिरकी नदियाँ बहानेवाले पुरुषोंका हृदय नारीके सन्मुख कितना दुर्बल सिद्धहोताहै ! क्या

आलिंगनादिसे नारीके हृदयकीभी उतनीही संतुष्टि नहीं होती जितनी पुरुषके हृदयकी ? फिरभी क्यों पुरुषही कामातुर होकर नारीकी चरण-पूजा करनेलगताहै ? बाह्य जगतके सम्मुख लोक व्यवहारमें महान् सिद्ध तपस्वी, संयमी, वीर, विद्वान, राजनीतिज्ञ, छली, कपटी, डाकू, वधिक आदि अनेक रूपों और वेषभूषाओंमें विश्व वंचितकरनेवालोंकी एकान्तमें नारीके सन्मुख जातेही किस प्रकार कलई खुलजातीहै ! अबला ! तू सबलाही नहीं परम प्रबला है ! पुष्पधन्वाने तुझे कितनी महान् शक्ति दीहै ! तेरे इंगित मात्र पर पिता और पुत्र, भ्राता और भ्राता रुधिर-पिपासु बनसकतेहैं। और रुधिर-पिपासु शत्रु गले मिलकर मित्र बनसकतेहैं। असंभव को संभव करदेनेमें समर्थ विचित्र नारी ! तू पुरुषकी दासी बन कर भी उसे अपना दास बनालेतीहै !

(हरिसिंह, मालोजी, कर्मसिंह, अखिलराव, साहीदास, कर्णसिंहका मुंह ढाँपकर प्रवेश)

शीतलसेनी—ओ षड़यंत्र ! क्या रात्रिके अंधकारमेंभी तुझे मुंह दिखाते लज्जा आतीहै ! तब तो हत्या, षड़यंत्र राजद्रोह, बलात्कार और छलकेलिए सौ-सौ अमावस्याओंका आवरण चाहिए ! मेवाड़के सामन्तोंका मैं स्वागत करतीहूं।

कर्मसिंह—शीतलसेनी, हमें स्वागतकी उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी तुम्हारी सक्रिय सहायताकी आवश्कता है।

शीतलसेनी—शीतलसेनीसे यदि किसी प्रकारकी सहायता होनी सम्भवहै तो वह कभी पीछे न हटेगी, वीरशिरोमणि !

कर्मसिंह—मेवाड़का सिंहासन शून्यहै, शीतलसेनी ! उसके लिए.........

शीतलसेनी—कौन कहताहै कि मेवाड़का सिंहासन शून्यहै ?

परम प्रतापी महाराणा संग्रामसिंहके वीरपुत्र महाराणा विक्रमादित्य आजही लैचासे वापिस लौटेहैं। क्या आपको समाचार नहीं मिला ?

कर्मसिंह——मिलाहै, शीतलसेनी ! किन्तु विक्रमादित्य अयोग्य है, कायर है, अत्याचारी है। प्रजाका रुधिर चूसकर आनन्द उड़ानेवालाहै। उसे प्रजाके हितकी और अपने महान् वंशके गौरवकी तनिक भी चिन्ता नहीं है। उसे सिंहासनसे उतारकर·········

शीतलसेनी——कई वर्षोंसे सुचारू रूपसे मेवाड़की प्रजाका पालन करनेवाला महाराणा विक्रमादित्य आज सहसा इतना अयोग्य, कायर और अत्यारी कैसे बनगया जो उसे सिंहासनसे उतारनेकी आवश्यकता प्रतीत होनेलगीहै ?

कर्मसिंह——यह वादविवाद करनेका अवसर नहीं है, शीतलसेनी ! हम लोग विक्रमादित्यको सिंहासनसे उतारकर वीर पृथ्वीराजके वीर पुत्र बनवीरको मेवाड़का अधिपति बनाना चाहतेहैं। स्पष्ट शब्दोंमें उत्तरदो क्या तुम हमें सहयोग दोगी या हमें मेवाड़के सिंहासनकेलिए किसी अन्य व्यक्तिका अन्वेषण करनाहोगा ?

शीतलसेनी——अन्य व्यक्तिका अन्वेषण न करके विक्रमादित्य कोही मेवाड़के सिंहासनपर क्यों नहीं रहनेदेते ?

कर्मसिंह——नहीं, वह नहीं रहेगा।

समस्त सामंत——नहीं, वह नहीं रहेगा।

शीतलसेनी——यदि आप लोग मेवाड़के समस्त वीरमणि बनवीरकोही मेवाड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरनाचाहतेहैं, तो शीतलसेनी विरोध नहीं करसकती।

कर्मसिंह—नहीं, हमें सक्रिय सहयोग देनाहोगा, बनवीर को मेवाड़का सिंहासन स्वीकार करनेकेलिए प्रस्तुत करनाहोगा। शीतलसेनी !

(बनवीरका प्रवेश)

बनवीर—मानवी शीतलसेनी शेषकी सहस्र जिह्वाओंमें शारदा की वाचालशक्तिका संयोगकरकेभी बनवीरको मेवाड़का सिंहासन स्वीकारकरनेकेलिए प्रस्तुत नहीं करसकती। पितामह भीष्म ! मैं महाराणा विक्रमादित्यकी सब प्रकारसे सहायता करनेकेलिए प्रतिश्रुत हूँ। विशेषकर इस समय, जबकि समस्त मेवाड़ विक्रम का विरोधी बनबैठाहै। मैं स्वर्गके सिंहासनकेलिए भी महाराणा का साथ नहीं छोड़सकता।

कर्मसिंह—समस्त मेवाड़ जिसका विरोधी बनबैठाहो, उसे मेवाड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठितरहनेका कोई अधिकार नहीं है, बनवीर ! अपने ही समान साधारण मानवको सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरके जनता उसे इसलिए अपना अधिपति बनालेतीहै कि वह न्यायपूर्वक सबका पालन और संरक्षणकरे।

अखिलराव—किन्तु विक्रमने करभार और अत्याचारसे प्रजा का रक्त शोषणकरनेपरभी उसका पालन और संरक्षण नहीं कियाहै। दिनदहाड़े माहीरलुटेरे प्रजापर अत्याचार करतेरहे और विक्रमसे उनपर प्रतिबन्ध न लगायाजासका। विक्रमके गुप्तचर इतनाभी पता न लगासके कि मेवाड़पर शत्रुका आक्रमण होने वाला है। चित्तौड़के भयंकर विपत्तिकालमें महाराणा मृगया खेलने में मग्नरहे। इस प्रकार उन्होंने प्रजाका विश्वास खोदियाहै।

साहीदास—जिसने प्रजाका विश्वास खोदियाहो, उसे प्रजाका अधिपति रहनेका कोई अधिकार नहीं, बनवीर !

कर्णसिंह—जिसे प्रजाका अधिपति रहनेका अधिकार नहीं, उसकी सहायताकरना, उसे बलपूर्वक सिंहासनपर बिठाएरखना, देशद्रोह है, अन्यायका समर्थन है, अत्याचार और महान पातक है।

बनवीर—मैं आप सब सामन्तोंकी उक्तियोंका एकाकी कैसे प्रतिवाद करूं ?

कर्मसिंह—ठीक है ! प्रतिवाद करना त्यागकर हमारा प्रस्ताव स्वीकारकरो। मेवाड़के सिंहासनपर सुशोभित होकर प्रजाका पालनकरो ।

शीतलसेनी—पुत्र! इसीमें मेवाड़का कल्याण है, मातृभूमिका हित है। जनताका संरक्षण है, शिशोदियाकुलका मान है। कहो, स्वीकृति-सूचक वचन कहो। क्यों चुप हो ?

कर्मसिंह—हाँ, शीघ्र उत्तर दो ।

शीतलसेनी—(*कुछ क्षण पश्चात्*) उस महावीर पृथ्वीराज का, जिसने मेवाड़के सिंहासनकी प्राप्तिकेलिए आजीवन महाराणा संग्रामसिंह और सूर्यमल्लसे प्रबल युद्ध किएथे, तुझ जैसा कायर पुत्र उत्पन्न हुआहै जो अनायास प्राप्तहोनेवाले मेवाड़के सिंहासन को स्वीकारकरनेमें हिचकिचारहाहै। हे भगवान् ! सिंहपुत्र समझ कर मैंने किस गीदड़को अपने गर्भमें धारण किया ? जा कायर! चलाजा, मैं तेरा मुंह नहीं देखनाचाहती। जब वीर पृथ्वीराज मृत्युशय्यापर थे तो उन्होंने मुझे सहगमन न करनेका आदेश देते हुए कहाथा, "मैं चिरवांछित मेवाड़के सिंहासनको न प्राप्तकरसका किन्तु तेरा पुत्र एक दिन मेवाड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठितहोगा। उस शुभ दिनको देखनेकेलिए तू सहगमन न करना।" आह! उससमय वीर पृथ्वीराजको यह नहीं सूझताथा कि उनके औरससे ऐसे निष्कर्मण्य कायरने जन्म लियाहै जो सन्मुख परोसेहुए थालकोभी नहीं संभालसकता! (*रोतीहै* ।)

बनवीर—लज्जित न करो मां! मैं तुम्हारी आज्ञा नहीं टाल-सकता। किन्तु विक्रमको इस प्रकार·········

शीतलसेनी—जन्म-भूमिके कल्याणकेलिए कोई किन्तु, परन्तु नहीं। तुम्हें मेवाड़का सिंहासन स्वीकारकरनाहोगा। इन मेवाड़के परम हितैषी, जन्मभूमिकी सेवामें अनेकों युद्धोंमें अपना रुधिर बहादेनेवाले परम पराक्रमी वीर कर्मसिंह, साहीदास, अखिलराव, कर्णसिंह, मालोजी हरिसिंह, सोलंकीकी आज्ञाका पालन करनाहोगा। ये महापुरुष मातृभूमिकी हानिकेलिए—जिसे उन्होंने अपने रुधिरसे सींचाहै, ऐसा नहीं कररहे। वरन् देशके कल्याणकेलिए यह कार्य कररहेहैं। उठो, मेवाड़का सिंहासन स्वीकारकरके देशभक्तिका परिचयदो। अत्याचारी वेनको सिंहासनसे उतारकर फिरसे सुखशान्तिका विस्तार करो। सामन्तगण! आपलोग बनवीरकी सहायताकेलिए प्रतिश्रुत हैं?

कर्मसिंह—हाँ, हमलोग इस खड्गकी शपथ खाकर कहतेहैं कि विक्रमादित्यको सिंहासन-च्युत करके हम बनवीरको मेवाड़-नरेश बनाएंगे।

सब—(*शपथलेकर*) मेवाड़मुकुट महाराणा बनवीरकी जय!

कर्मसिंह—अखिलराव! राजकोष और शस्त्रागारपर पहरा बिठादो। नगर प्राचीरके समस्त फाटकोंको बन्दकरदो। सैनिकों को आज्ञादेदो कि ज्योंही विक्रमादित्य राजप्रासादको त्यागकर सभा-मंडपमें पधारें। उनके प्रासादपरभी कड़ा पहरा बिठादिया जाए।

अखिलराव—बहुत अच्छा। विक्रमादित्यके आनेके समय से पूर्व हमें बहुत कुछ करलेना है। चलो।

(*शीतलसेनी और हरिसिंहके अतिरिक्त शेषका प्रस्थान*)

हरिसिंह—शीतलसेनी ! अब तुम्हारा कार्य होगया, अब तुझे अपनी अभिलाषा········

शीतलसेनी—आज नहीं, हरिसिंहजी ! कल। कल जब बनवीर मेवाड़के सिंहासनपर सुशोभित होगा तो हरिसिंह सोलंकी शीतल-सेनीके हृदय-सिंहासन पर सुशोभित होंगे।

हरिसिंह—(*ठंडी साँस लेकर*) तेरे कथनानुसार, शीतल सेनी ! अब तक कितनेही कलोंकी प्रतीक्षा करचुकाहूं। एक और सही। (*प्रस्थान*)

शीतलसेनी—और वह कल कभी नहीं आएगा। उसकेलिए दिनों, महीनों, बरसों प्रतीक्षा करनीहोगा। बरसों शीतलसेनीकी कार्यसिद्धिका साधन बनानाहोगा। और अन्तमें जब शीतलसेनी के गाल पिचक जाएंगे, आंखें गड़जाएंगी, और दांत निकल चुकेंगे तब उसे भुलाभीदेनाहोगा। शीतलसेनी ! यदि तुझे भगवानने गौरवर्ण, गोल बड़े-बड़े नेत्र, काली-काली भौंहें, और मुसकराहटकी मदिरासे भरे हुए अरुण अधर नहीं दिएहोते तो तू आजभी राजमार्गसे गोबर चुन-चुनकर उपले बनानेवालीही रहती, तुझे राजमाता बननेका स्वप्नमेंभी ध्यान न आता। अहा, पुरुषकी दुर्बलताको छल-कटाक्षसे नचानेमें कितना आनन्द आताहै !

(*हंसतेहुए प्रस्थान*)

दृश्य ३

स्थान—चित्तौड़, वनवीरका प्रासाद

वनवीर—अहा ! हृदय-कलिकाको प्रफुल्लित करदेनेवाली मधुर ध्वनि, "महाराणा वनवीरकी जय !" अवभी मेरे कानोंमें गूंजरहीहै। इस अमृतसेभी मधुर ध्वनिकेलिए, इस वारुणीसे भी अधिक मादक संगीतकेलिए, इस तरुणीसेभी अधिक मोहक शब्दावलीकेलिए संसार तड़पताहै। पिता पुत्रका, पुत्र पिताका, भ्राता भ्राताका शिरोच्छेद करडालताहै। "महाराणा वनवीरकी जय !" केवल छः सामन्तोंके मुखसे निकलेहुए दबे स्वरमें इस मधुर शब्दावलीको सुनकरही मेरा रोम-रोम पुलकितहोरहाहै। शरीर रूईके समान हलका प्रतीतहोताहै। हृदय इतना प्रफुल्लित होगयाहै कि उसमें चिन्ता, दुःख, खेद, ग्लानि जैसे पुष्पकीटोंके लिए कोई स्थान नहीं रहा। कल, जब समस्त राजमंडप इस मधुर शब्दावलीसे बार-बार गुंजितहोउठेगा तो मेरे हृदय, मेरे मन, मेरे शरीरकी कैसी अवस्था होगी ! ओह ! महाराणा वनवीरकी जय !

प्रतिध्वनि— महाराणा वनवीरकी जय !

वनवीर—(खड्ग उठाकर) कलसे, यह खड्ग समस्त मेवाड़ का···अरे, यह तो वही खड्ग है जो मुझे महाराणा विक्रमादित्यने प्रेमपूर्वक दियाथा ! जिसे छूकर मैंने न जाने कितनी बार महाराणा विक्रमादित्यकेलिये अपने प्राणोंको अर्पित करदेनेकी शपथें लीहैं। वनवीर ! आज तुम उन सब शपथोंको भूलकर विक्रमसे विश्वासघात करनेचलेहो ? किसलिए ? क्षुद्र, क्षणभंगुर मेवाड़-सिंहासनकेलिए ! स्वल्प-स्वल्प कालमें अपने अधिपति परिवर्तित करनेवाले इस सिंहासनपर न जाने कितने पुरुष आज तक आरूढ़

हुए और चलेगए। फिर यह प्रवंचनाजाल रचकर बनवीर! कितने दिनकेलिए आनन्द-सागरमें मग्नहोनाचाहतेहो ?

" केनापि न गता वसुमति इमा मुंजस्त्वया यास्यति "

नहीं, बनवीर इतना विश्वासघातक, इतना कृतघ्न, इतना पतित न होगा। यह खड्ग विक्रमका रक्षक है उसका भक्षक न बनेगा। सारा संसार विक्रमका विरोधी बनजाए किन्तु बनवीर उसका साथ देगा।

(पृथ्वीराज और सूर्यमल्लके प्रेतात्माओंका युद्ध करतेहुए प्रवेश और गमन)

बनवीर—यह विचित्र दृश्य कैसा ? प्रासाद चारों ओरसे बन्द है! इस दीपकके मन्द प्रकाशमें यह प्रेतात्मा कैसे आए और कैसे चलेगए? इनमें बड़ी ढाल और दृढ़कायवाला मेरे पिता पृथ्वीराज का प्रेतात्मा है। और दूसरा संभवत उनके चाचा सूर्यमल्लका प्रेतात्मा है। पितृपुरुषोंने यह विचित्र दृश्य दिखाकर मुझे क्या संकेतकियाहै ? सिंहासन-प्राप्तिकी तृष्णा प्राणान्तपर भी शान्त नहीं होती। पिता! मेवाड़के जिस सिंहासनकी प्राप्तिके लिए तुम आजीवन संघर्ष करतेरहे। और प्राणान्त होनेपरभी जिसके लोभका संवरण नहीं करसके, उसे स्वीकारकरके मैं तुम्हारी लालसाकी पूर्तिकरूंगा। शान्त होजाओ। बनवीर क्षणिक दुर्बलतामें पड़कर करुणा-कायरता नहीं दिखाएगा। वह तुम्हारा चिरकांक्षित सिंहासन प्राप्तकरेगा। महाराणा बनवीरकी जयध्वनि श्रवण करेगा।

—पट—

दृश्य ४

स्थान—चित्तौड़, राज-प्रासाद

(*सिंहासनपर विक्रमादित्य*)

विक्रमादित्य—कहाँ गए वे विद्रोही सामंत ? कहाँ है वह वृद्ध भालू कर्मसिंह ? जो मेवाड़के सिंहासनको अपने हाथकी कठपुतली बनानाचाहताहै ? आज विद्रोहियोंको उनकी कृतघ्नताकेलिए कठोर दंड दियाजाएगा।

(*कर्मसिंह, अखिलराव, साहीदास, कर्णसिंहका प्रवेश*)

कर्मसिंह—विक्रमादित्य ! तुम अपने कर्त्तव्यको भुलादेनेके कारण इस पवित्र सिंहासनपर अपना अधिकार खोचुकेहो। उतरो, यह पवित्र सिंहासन तुम जैसे प्रजाघातक और देशद्रोहीके लिए नहीं है।

विक्रमादित्य—राजद्रोही बूढ़े भालू ! तेरी धृष्टताको अब क्षमा नहीं कियाजासकता। प्रजापर नियंत्रणरखने और विद्रोहियों को समुचित शिक्षादेनेकेलिए तुझ जैसे राजद्रोहीका बध करनाही होगा। [*सिंहासनसे उतरकर कर्मसिंहपर खड्गका प्रहारकरताहै साहीदास झट उसे अपने खड्गके ऊपर लेलेताहै। विक्रमादित्य वीरतापूर्वक युद्ध करताहुआ कई सामन्तोंको आहतकरके बन्दी बनायाजाताहै। सभा-मंडपमें खलबली मचजातीहै।*]

कर्मसिंह—लेजाओ, इस निरंकुश शासक, शिशोदिया-कुल-कलंकको कारागृहमें।

प्र० सभासद—मारो, मारो, इन महाराणाको बन्दी बनाने वालोंको।

द्वि० सभासद—शस्त्र उठाओ, दौड़ो, दौड़ो; अरे, महाराणा को छुड़ालो।

च० सभासद—अरे, यहाँ कोई नहीं जो राजद्रोहियोंको बन्दी बनाले ?

द्वि० सभासद—चुपरहो, ऐसे विप्लवके समय कुछ बोलउठना अपने प्राणोंको संकटमें डालना है।

प्र० सभासद—क्यों चुपरहो ? अन्याय होताहै और हम चुप रहें ?

द्वि०सभासद—यदि चुप नहीं रहसकते तो छुड़ाते क्यों नहीं ?

तृ० सभासद—अरे, यहाँ कोई ऐसा राजभक्त नहीं जो मेवाड़के महाराणाकी रक्षाकेलिए अपने प्राणोंकी बाजी लगादे ?

(*विक्रमादित्यको लेकर साहीदास और कर्णसिंहका प्रस्थान*)

कर्मसिंह—(*सिंहासन वाली ऊंची वेदीपर चढ़कर*) शान्त ! विक्रमादित्यको हम लोगोंने सिंहासनसे उतारकर बन्दी क्यों बनायाहै ? सुनिए।

प्र० सभासद—सुनो, सुनो।

तृ० सभासद—चुपरहो, चुपरहो, सुनो, सुनो।

च० सभासद—कहो, कहो, सेनापति कर्मसिंह ! महाराणा विक्रमादित्यको सिंहासनसे उतारकर क्यों बन्दी बनायागयाहै ?

कर्मसिंह—मेवाड़के परम हितैषी विज्ञ सभासदगण ! मातृभूमिकी रक्षाकेलिए मैंने इस वक्षस्थलपर यवनोंके भीषण भालोंके आठ आघात सहेहैं। यह घाव उसके प्रमाण हैं। (*घाव दिखाताहै।*) महाराणा संग्रामसिंहके साथ मेरा सारा जीवन युद्ध-स्थलमें मेवाड़ और हिन्दुजातिके मानकी रक्षाकरतेहुएही बीता है। कनुआके भीषण युद्धमें मैंने शत्रुव्यूहमें फंसेहुए अपने पुत्र का उद्धार न करके प्राणोंकी बाजी लगाकर किस प्रकार महाराणा संग्रामसिंहके प्राणोंकी रक्षा कीथी, यह सब आप जानतेहैं। मेरे

जीवनका एक-एक पल और मेरे शरीरके रुधिरकी एक-एक बूंद मातृभूमिकी सेवामें उत्सर्ग कीगईहै। मुझसे बढ़कर मेवाड़का हितैषी दूसरा नहीं होसकता।

प्र० सभासद—सत्य है। सत्य है।

द्वि० सभासद—सेनापति कर्मसिंह मेवाड़के सपूत हैं। हिन्दु जातिके उज्ज्वल रत्न हैं।

कर्मसिंह—मेवाड़की प्रजा सदासे बप्पा रावलके वंशजोंको भगवानका अंश समझकर सदा राजभक्त रहीहै, और उनके सम्मानकी रक्षा और उनकी सेवाकेलिए अपना प्राण अर्पित करतीरहीहै।

प्र० सभासद—हां, तबही तो हम पूछतेहैं कि महाराणा विक्रमादित्यके साथ ऐसा व्यवहार क्यों कियागया ?

कर्मसिंह—बप्पा रावलके पवित्रवंशसे सदासे मेवाड़की प्रजाके जन, धन और मानकी पूर्ण प्रकारसे रक्षाकरके अपना राजधर्म निभायाहै।

द्वि० सभासद—सत्य है, फिरभी क्यों……

कर्मसिंह—किन्तु विक्रमादित्यने राजकरोंद्वारा प्रजाका रक्त चूसतेहुएभी उसकी रक्षाकेलिए कुछभी प्रयत्न नहीं किया। माहीर लुटेरे निर्भयतासे नगरमें लूटमार मचातेरहे किन्तु हमारे महाराणा यवन मल्ल-पहलवानों के कौशल देखनेमेंही मस्त रहे।

प्र० सभासद—ठीक है। माहीर हमारी गाएं,भैसें,बकरियाँ हाँकलेगए।

तृ० सभासद—हमारे भांडे-बर्तन, सर्वस्व उठालेगए।

च० सभासद—मेरे तो आभूषण, धन, सम्पत्ति, सब लूट लेगए और घरपर अग्नि धधकागए।

द्वि० सभासद—सुनो, सुनो; सेनापति कर्मसिंहका भाषण सुनो।

कर्मसिंह—जब चित्तौड़पर आपत्ति आई, सुलतान बहादुर एक लक्ष सैन्य लेकर चढ़आया, हमारे महाराणा लीलामें मृगयामें मस्त रहे। जो राजा प्रजाकी रक्षा नहीं करसकता, उसकी धन-सम्पत्ति,पुत्र-कन्याओंकी रक्षा नहीं करसकता उसे बप्पा रावलके इस पवित्र सिंहासनपर बैठनेका कोई अधिकार नहीं है।

द्वि०सभासद—सत्य है, विक्रमादित्य सिंहासनके अयोग्य है।

तृ०सभासद—ठीक कियाहै, जो उसे बन्दी बनायाहै।

कर्मसिंह—इसीलिए उसे सिंहासनसे उतारकर बन्दी बनायागयाहै।

अखिलराव—भविष्यमें भारतके विभिन्न भागोंमें विभिन्न भाषाभाषी अभिनयमेंही न जाने कितने विक्रमादित्योंको सिंहासन-च्युत करेंगे।

कर्णसिंह—जब-जब वे ऐसा करेंगे उस समय हम लोगोंके नाम उन देशभक्त वीरोंके साथ लेंगे जिन्होंने निरंकुश नरेशोंके चुंगलसे अपनी मातृभूमिको स्वतंत्र किया।

कर्मसिंह—बप्पा रावलका पवित्र सिंहासन शून्य न रहेगा। इसपर वीराग्रणी पृथ्वीराजके पुत्र महाराणा बनवीर सुशोभित होंगे।

(शीतलसेनी और बनवीरका प्रवेश। सामन्तगण बनवीरको सिंहासनपर बिठाते हैं।)

समस्त सभासद—महाराणा बनवीरकी जय! शिशोदिया कुलकी जय!

बनवीर—सेनापति, सामन्तगण और वीर सभासदवर्ग!

आप लोगोंके आग्रहसे मैंने मेवाड़के सिंहासनपर बैठना स्वीकार कियाहै। मैं आज आप लोगोंके सन्मुख इस खड्गकी शपथ लेकर कहताहूँ कि अपनी संतानके समान प्रजाका पालन करूंगा और जबतक यह जीवन रहेगा तबतक आप लोगोंकी रक्षा और उन्नति केलिए प्रयत्नशील रहूँगा। भगवान एकलिंग मुझे चिरकाल तक मेवाड़की सेवा करनेका अवसर प्रदानकरें!

समस्त सभासद——महाराणा बनवीरकी जय!

शीतलसेनी——पुत्र! आज तुम्हें मेवाड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठित देखकर हृदय आनन्दसे विभोर है। मेरे पयोधरोंमें दूध भर आयाहै। चित्त प्रफुल्लित होगयाहै। भगवान एकलिंग मुझे चिरकालतक यही स्वरूप देखनेकेलिए जीवित रखें।

(पट)

दृश्य ५

स्थान - प्रधान राजप्रासाद

बनवीर——सिंहासन! निर्जीव धातुके सिंहासन! तेरी अपार शक्ति है। तुझ पर आरूढ़ होतेही सामान्यसे सामान्य मनुष्य लाखों-करोड़ों नर-नारियोंका भाग्यविधाता बनबैठताहै। उसके आदेशपर सैकड़ों-सहस्त्रों राजकर्मचारी कार्य करतेहैं। उसके इंगितपर सहस्त्रों सैनिक अपने प्राण अर्पण करनेको प्रस्तुतरहतेहैं। कल तक मैं एक साधारण राज-सेवक वीर पृथ्वीराजका पंचमपुत्र मात्र था। कोई मुझे देखकर न विशेष सम्मान करताथा न भयभीत होताथा। आज सारा मेवाड़ मेरे इंगितपर नाचताहै। सामन्त हाथजोड़े खड़ेहैं। प्रजा पैरोंको चूमनेकेलिए उत्सुक है। दरिद्र मेरी कृपादृष्टिकेलिए लालायित हैं। धनिक मेरी अनुकंपाके लिए तड़पतेहैं। मेरे एक-एक शब्दमें प्राणदेने और प्राणहरनेकी

शक्ति आगईहै। धन्य! सिंहासन! धन्य! आज मैं समझा कि सिंहासनकेलिए इतने छल-कपट, इतने प्रवंचना-जाल क्यों फैलाएजातेहैं। सचमुच सिंहासन! तू सहस्र-सहस्र प्राण देकरभी क्रयकरने योग्य वस्तु है। "महाराणा बनबीरकी जय।" अहा, कितनी मोहक शब्दावली है। भगवान एकलिंग! मैं चिरकालतक यह मधुर शब्दावली सुनतारहूँ।'

(*शीतलसेनीका प्रवेश*)

शीतलसेनी—कठिन है पुत्र! दो भीषण शत्रुओंके जीवित रहते तुम्हारेलिए चिरकालतक यह मधुर शब्दावली सुनतेरहना कठिन है। तुम्हारी इस सुखनिद्राको भंगकरनेकेलिए, तुम्हारे इस ऐश्वर्य को छीननेकेलिए अभी दो तस्कर जीवित हैं, विक्रमादित्य और उदयसिंह। जबतक तुम इनका विनाश नहीं करलेते तबतक अपनेको निष्कंटक न समझो।

बनवीर—क्या कहतीहो, माँ? मैं विक्रम और उदयके विरुद्ध खड्ग उठाऊं? असंभव। इतना महान पाप मैं स्वर्ग के सिंहासन केलिए भी नहीं करूंगा। मेवाड़का सामान्य सिंहासन तो वस्तुही क्या है?

शीतलसेनी—तो इस मधुर ध्वनि "महाराणा बनबीरकी जय" को चिरकाल तक सुननेकी लालसा त्यागदो। इन भव्य राजप्रासादों में आनन्द-क्रीड़ा करने, स्वर्ण सिंहासनपर विराजने, सहस्र-सहस्र अनुचरोंको अपने सन्मुख करबद्ध देखने और लक्ष-लक्ष नर-नारियोंका भाग्य-विधाता बननेकी तृष्णा त्यागदो। विक्रमादित्य और उदयसिंहके जीवितरहते तुम्हारे यह ऐश्वर्य, यह राजशक्ति, यह आनन्द-निद्रा किसीभी क्षण भंग होसकतेहैं। किसीभी क्षण सामन्तगण विक्रमादित्य या उदयसिंहका पक्षलेकर तुम्हें सिंहासन-च्युत करसकतेहैं।

बनवीर—किसकी सामर्थ्य है जो मेरे विरोधमें ऐसा पग उठासके ? क्या कलही समस्त सामन्तोंने मेरा साथदेनेकी शपथ नहीं लीहै ।

शीतलसेनी—शपथ ! भोले बनवीर शपथ कच्चे सूत्रसे भी दुर्बल, मुस्कराहटसेभी क्षणिक और जलरेखासेभी अनिश्चित है। शपथके भरोसे राज्य नहीं चलते ।

(*मालोजीका हांपते-हांपते प्रवेश*)

मालोजी—महाराणाकी जय ! राजमाता ! सब बना-बनाया कार्य चौपट होगया ।

शीतलसेनी—क्या कहतेहो ?

मालोजी—मेवाड़पर फिर भाग्य-विधाता रूठगया ! पपाबाई का राज्य आनेलगा ।

शीतलसेनी—क्यों ? क्यों ? क्या होगया ?

मालोजी—हमारा भाग्य फूटगया, चित्तौड़का भाग्य फूटगया, मेवाड़का भाग्य फूटगया, तुम्हारा भाग्य फूटगया ।

शीतलसेनी—क्या हुआ ? स्पष्ट कहो ।

मालोजी—बस, अब विनाश है । अब कोनेमें बैठकर रोओ। अब कोई उपाय नहीं । मालोजी और हरिसिंहका किया-कमाया व्यर्थ होगया ।

बनवीर—क्या होगया मालोजी ? स्पष्ट क्यों नहीं कहते ?

मालोजी—पन्नाधायने यहां पहुंचतेही कर्मसिंह आदि प्रमुख सामन्तोंको विक्रमादित्यके पक्षमें करलियाहै । महाराणा संग्राम-सिंहके नामपर सामन्तों और जनताको उकसायाजारहाहै ।

शीतलसेनी—महाराणा संग्रामसिंहके नामपर आजभी केवल मेवाड़कोही नहीं समस्त राजस्थानको उकसायाजासकताहै ।

(*हरिसिंह सोलंकीका प्रवेश*)

हरिसिंह सोलंकी—श्रीमहाराणाकी जय ! पन्ना धायने सारे राजस्थानमें खलबली मचादीहै । राव शूरस्थाणु आदि महाराणा संग्रामसिंहके मित्रोंने कर्मसिंहको लिखाहै कि शीघ्र विक्रमादित्य को कारागारसे मुक्तकरके सिंहासनपर प्रतिष्ठित करो, और बनवीर को कारागृहमें बन्दी बनादो ।

मालोजी—कर्मसिंह आदि सामन्त आज रात्रिको ही, नहीं तो कल प्रातःकाल तक विक्रमादित्यको सिंहासनपर बिठाकर आपको कारागृहमें डालदेंगे ।

बनवीर—मुझको कारागृहमें डालदेंगे ? देखूं, कौन मुझे कारागृहमें डालनेका साहस करताहै ? ऐसा सिंहनी-दुग्ध किसने पियाहै ?

शीतलसेनी—मैं कहतीथी न, बनवीर ! जबतक विक्रमादित्य और उदयसिंह जीवित हैं, जबतक तुम्हारे मार्गके कंटक—भीषण शत्रु, प्रतिक्षण उपस्थित हैं ।

बनवीर—वे जीवित नहीं रहेंगे, मां ! इस अन्धकार पूर्ण रात्रिमेंही उन्हें मैं यमलोक पहुंचाकर समस्त आपदाओंसे मुक्त-होजाऊंगा ।

शीतलसेनी—जाओ, मेरे दुग्धको सार्थक करो । वीर पृथ्वी-राजके वीर पुत्र ! अपने शत्रु विक्रमादित्य और उदयसिंहको मिटाकर चिरकालतक मेवाड़की राज्यलक्ष्मीका निर्विघ्न उपभोग करो । लो, यह तीक्ष्ण खड्ग दोनों शत्रुओंका रुधिर पान करनेपर ही कोषमें विश्राम करे । (*खड्ग देतीहै ।*)

बनवीर—(*खड्ग लेकर*) बहुत अच्छा, मां !

(*प्रणाम करके प्रस्थान*)

शीतलसेनी—तुम दोनोंने इतने सुन्दर ढंगसे अपने कार्यका

अभिनय कियाहै कि भविष्यमें चिरकालतक कूटराजनीतिज्ञ और भीषण षडयन्त्रकारी तुम्हारी गणेशवत् पूजाकरेंगे। विप्लवकारी अपने पुत्रोंका नाम मालोजी और हरिसिंह रखेंगे और अभिनेता तुम्हारी मूर्तियोंपर नित्य पुष्पमाला अर्पित करेंगे।

मालोजी—यह सब करनेकेलिए मुझे क्या मिलेगा?

शीतलसेनी—वही, तुम्हारा मनवांछित।

हरिसिंह—और मुझे?

शीतलसेनी—तुम्हें भी तुम्हारा मनवांछित। जाओ, दोनों वीरो! शीघ्र बनवीरके पद-चिन्होंका अनुसरण करतेहुए कारागृहमें चलेजाओ। यदि दुर्बलहृदय बनवीर ममताकी दुर्बलतासे संकल्पच्युत होजाए तो तुम उसके मार्गके कंटकोंका विनाशकरके बनवीर और अपनी उन्नतिका मार्ग निरापद बनादेना।

हरिसिंह-मालोजी—बहुत अच्छा। (प्रस्थान)

शीतलसेनी—मनुष्यकी दुर्बलताओंको पहचानकर जो मनुष्य उचित अवसरपर उचित पग उठाताहै, सफलतादेवी उसे अवश्य जयमाला पहनातीहै। बनवीर! आज तेरा वही खड्ग, जिसे तू विक्रमका रक्षक कहताथा, विक्रमका भक्षक बनाहै।

(प्रस्थान)

दृश्य ६

स्थान—चित्तौड़, कारागृह

विक्रमादित्य—इस अमावस्याकी रात्रिके भीषण अन्धकारमें मेघोंकी गड़गड़ाहट और वज्र-गर्जनके मध्यमें तड़िता क्षणभर तड़पकर चंचल मानव-भाग्यके समान अनन्तमें विलीन होरही है। स्वर्गभ्रष्ट नहुषके सौभाग्य-पतनपर आकाश अश्रु बरसारहाहै। अन्धकार ऐश्वर्यभ्रष्ट पुरुषोंके विषादको अपने अंकमें छिपाकर

लोकापवादके प्रकाशसे उनकी रक्षाकरनेमें संलग्न है। महाराणा संग्रामसिंहका पुत्र, मेवाड़का अधिपति विक्रमादित्य, कल जिसके संकेत-मात्रपर सहस्र-सहस्र जन प्राण देनेको प्रस्तुत रहतेथे, जिसे प्रतिक्षण शत-शत अनुचर करबद्ध घेरे रहतेथे, आज वही विक्रमादित्य कारागारकी कृष्णकोठरीमें एकाकी बन्दी बनकर बैठा है। अदृष्ट! यदि मानवकी दृष्टि तेरे जटिल पटलको भेदकर अंतर-तरमें झांकसकती तो उसे इस प्रकार भवितव्यताका दास बनकर न रहनापड़ता। (चौंककर) इस अन्धकारमें प्रकाश लेकर कौन आरहाहै?

(पन्नाका भोजन और दीपक लेकर प्रवेश)

पन्ना धाय—यह मैं हूँ महाराणा! हे भगवन्! क्या मैं यही दृश्य देखनेकेलिए बूंदीसे बालक उदयसिंहको लेकर आज यहां लौटीहूँ? जिस वीर चूकासेन ढुंढ़ेराने यवनोंके हाथोंसे बालक उदयसिंहकी रक्षाकरतेहुए प्राण देदिए, मैं भी उसीके साथ क्यों यमलोक न पहुंचगई? मेवाड़के सिंहासनकी शोभा, महाराणा संग्रामसिंहके औरसको बन्दीगृहमें डालनेवाले आततायियो! तुम्हारा विनाश हो। ओह! ऐसे कुटिल कर्म करतेहुए तुम्हारे हाथ क्यों नहीं टूटगए? महाराणा! धैर्य रखिए।

विक्रमादित्य—किसे महाराणा कहरहीहो, धाय माँ? आज मेवाड़का महाराणा पृथ्वीराजका पंचमपुत्र है, महाराणा संग्रामसिंहका औरस नहीं। अब कलिकालमें पंचमपुत्रही सिंहासनासीन होंगे। वर्णसंकरोंका राज्य होगा। शुद्ध वर्णजोंकी अब यही दशा हुआकरेगी।

पन्ना धाय—महाराणा! धैर्य रखिए। महाराणा संग्रामसिंहके नामपर आजभी समस्त मेवाड़ही क्यों समस्त राजस्थान विप्लव केलिए प्रस्तुत होसकताहै। मैंने यहाँ पहुंचतेही समस्त सामन्तों

और सम्भ्रान्त प्रजावर्गको आपके पक्षमें करनेका आन्दोलन आरंभ कियाहै । कर्मसिंह आदि सामन्त अपने कृत्यपर आपही पछतारहेहैं । अभी कुछ समय पश्चात् अर्द्धरात्रिमें स्वयं कर्मसिंह आकर आपको कारागृहसे मुक्त करदेंगे । आज रात्रिमें ही बनवीरको बन्दी बनाकर कलही आपको पुनः सिंहासनपर प्रतिष्ठित करदियाजाएगा । भविष्यमें आपको सामन्तोंके सम्मान और दीन प्रजाके हितका विशेष ध्यान रखनापड़ेगा ।

विक्रमादित्य—अवश्य रखूंगा, धाय माँ ! मुझसे जो त्रुटियां होगईहैं, मैं उनकेलिए बड़ा पश्चात्ताप करताहूँ । भविष्यमें मैं वीर संग्रामसिंहका योग्य वंशधर बननेका प्रयत्नकरूंगा ।

पन्ना धाय—भगवान् करे ! आपकी छत्रछायामें मेवाड़की प्रजा चिरकालतक शान्तिपूर्वक उन्नतिकी ओर अग्रसर हो । लो, यह भोजन खालो । मध्यरात्रिमें कर्मसिंह आकर आपको बन्धनमुक्त करेंगे ।

(प्रस्थान)

विक्रमादित्य—आज भोजनकी रुचि नहीं होती । अपनी भूलोंकेलिए मैं दो दिनसे पश्चात्तापके रूपमें उपवास तो करही रहाहूँ । आजकी रात्रिमें भी उपवास रखनाही उचित है । (गुनगुनाताहै । वायु के झोंकेसे दीपक बुझजाताहै ।)

हरि ! तेरी गति जानी न जाए ।
आज दीन जो हीन व्यथित अति भोजनको ललचाए ।
कल वह बने नरेश देशका मुकुटधार मुसकाए ॥ हरि० ॥
आज गीत भयभीत प्रजा जिसके घर-घरमें गाए ।
कल वह रंक, पंक-सा घर-घर पग घूमे, ललचाए ॥ हरि० ॥
आज मस्त यौवन-यमुना में जो गर्वित इठलाए ।
कल वह जीर्ण जरा-जर्जित हो कटि-कुंचित मुरझाए ॥ हरि० ॥
किसकी दुःखदशा निशिदिन ? किसको नित सौख्य हंसाए ?
चक्रनेमि-सा भाग्य-चक्र भी नीचे ऊपर जाए ॥ हरि० ॥

(बनवीरका प्रवेश, कारागारका द्वार खोलकर अन्दर प्रवेश करताहै ।)

विक्रमादित्य—सेनापति कर्मसिंह ! मुझे कुकृत्योंपर स्वयं पश्चात्ताप है । मेरा अपराध क्षमाकरो ! कल मैं सिंहासनपर बैठतेही सामन्तगण और प्रजावर्गके समस्त कष्टोंको दूर करनेका प्रयत्नकरूंगा और अपनेको महाराणा संग्रामसिंहका योग्य वंशधर सिद्धकरूंगा ।

बनवीर—ओह ! गहन षडयन्त्र ! यदि मुझे यथासमय सूचना न मिलगईहोती तो आज सारा कार्य विपरीत होगयाहोता षड-यन्त्र ! तू समुद्रकी लहरों-सा दुर्निवार, अग्नि ज्वाला-सा भीषण, और वायु-सा सर्वगामी है, तुझे कारागारकी अटूट लोह-शृंखलाएं भी नहीं रुद्धकरसकतीं ।

विक्रमादित्य—कौन बनवीर ! महाराणा बनवीर ? आपने स्वयं आनेका कष्ट क्यों किया ?

बनवीर—तुम्हारा बध करनेकेलिए, विक्रमादित्य ! तुम्हारे जीवितरहते मेरा सिंहासन निरापद नहीं है ।

विक्रमादित्य—सिंहासनपर तुमही सुशोभित रहो, बनवीर ! मुझे कारागृहमेंही रहनेदो । क्या महाराणा संग्रामसिंहके पुत्र को कारागृहमें जीवितरहनेकाभी अधिकार नहीं है ? क्या हथकड़ियों और बेड़ियोंसे जकड़ाहुआभी मैं कारागारके लौहद्वार को तोड़, तुम्हारे सिंहासनको उलटनेकेलिए बाहर निकल-सकताहूँ ?

बनवीर—सब कुछ सम्भव है, विक्रमादित्य, ? यदि मैं उचित समयपर न पहुंचपाता तो कल मैं तुम्हारे स्थानपर और तुम मेरे स्थानपर होते । मृत्युकेलिए प्रस्तुत होजाओ ।

विक्रमादित्य—बनवीर! तुम तो मेरे मित्र थे। तुमने तो समस्त सामन्तोंके विरोधी होजानेपरभी मेरी रक्षाकी शपथ लीथी। क्या स्वर्णमुकुट धारणकरतेही तुम्हारा निःस्वार्थ प्रेम द्वेषाग्निमें परिवर्तित होगया? नहीं, बनवीर! तुम इतने कठोर नहीं हो होसकते, इतने निर्दय नहीं बनसकते।

बनवीर—तुम्हारा एक-एक शब्द मेरे हृदयको पिघलारहाहै। मैं अधिक नहीं सुनूंगा। विक्रमादित्य! अन्तिम बार भगवानका स्मरण करलो। मैंने खड्ग कोषसे बाहर निकाललियाहै।

विक्रमादित्य—बनवीर! ऐसा न करो। अपने उन कृपालु हाथोंसे, जिनसे तुमने लैचाके युद्धमें मरणासन्न विक्रमादित्यके घावोंपर पट्टी बांधीथी, आज विक्रमादित्यका शिर न उड़ाओ। यदि मेरा बध करनाही अभीष्ट है तो मुझे किसी बधिकके पास सौंपदो। मुझे मृत्युका भय नहीं, मैं मृत्युका स्वागत करताहूँ। वह मनुष्योंकी कृतघ्नताके समान विषैले डङ्क नहीं मारती। किन्तु ऐसी मृत्यु, कारागारके भीषण अन्धकारमें, लौहशृंखलाओंसे बद्ध निःशस्त्रकी मृत्यु, युद्धधनी समरांगणके सतत खिलाड़ी महाराणा संग्रामसिंहके पुत्रके योग्य नहीं है।

बनवीर—बधिकके सन्मुख योग्य-अयोग्यका प्रश्न नहीं होता, विक्रम! लो, किसीकी पदध्वनि सुनाईदेरहीहै। लो, (*प्रहार करताहै।*) रुधिरका प्रपात फूट पड़ाहै। कारागारकी तिमिराच्छन्न कोठरीने ऊष्ण रुधिरसे प्लावितहोकर भीषण रूप धारणकरलिया है। राजसिंहासन! तू कितना दुर्बल है! ब्राह्मणोंके चौकेके समान तू दूसरेकी छाया देखकरभी काँपउठताहै! यही खड्ग, जिसको मैं विक्रमका रक्षक कहकर शपथ लियाकरताथा, आज विक्रमका भक्षक सिद्धहुआहै। विधाता! तेरी लीला अपार है।

(मालोजी और हरिसिंह सोलङ्कीका प्रवेश)

मालोजी—पश्चात्ताप करनेका अवसर नहीं है, महाराणा! कर्मसिंह आदि सामन्तगण शीघ्र यहां आनेवालेहैं। उनके यहाँ आनेसे पूर्वही दूसरे कंटक उदयसिंहको भी मिटाडालो। नहीं तो यह कुचिका सर्प एकदिन डसे बिना न छोड़ेगा। प्रजा जब विक्रमकी हत्याका समाचार सुनेगी तो उसका रक्त खौलउठेगा और वह आपको भीषण दण्ड देकर उदयसिंहको सिंहासनपर बिठादेगी!

बनवीर—ठीक है। यह दूसरा कंटक मिटानाहीहोगा। तुम-लोग कारागारका द्वार रुद्धकरके इधर देखतेरहो। जबतक मैं पन्ना के प्रासादसे लौटताहूँ तबतक किसीको उधर पग न बढ़ानेदेना।

(प्रस्थान)

मालोजी—बहुत अच्छा। विक्रमादित्य और उदयसिंहकी हत्यासे सारे राजस्थानमें विप्लवाग्नि प्रज्वलित होउठेगी। महाराणा संग्रामसिंहकी सन्तानके निरपराध रुधिरकी एक-एक बूंद केलिये राजस्थानमें रुधिरकी नदियां बहजाएंगी। डायन शीतल-सेनी जिसके कुचक्रपर इस भीषण अत्याचारको रचायागयाहै, अपने पुत्र बनवीरके साथ-साथ हम दोनोंको भी लेडूबेगी।

हरिसिंह—अब तो कल्याण इसीमें है कि हमलोग प्रच्छन्न रूपसे बनवीरके साथ मिलेहुये रहनेपर भी अपनेको इस नारकीय ताँडवसे दूर सिद्धकरें। और प्रकट रूपमें विश्वस्त बनकर कर्म-सिंह आदिसे मिलेरहें। तब ही हमारे और हमारे परिवारका निस्तार होसकेगा।

मालोजी—अबसे राक्षसी शीतलसेनीसे सारा संबन्ध त्याग-करनेमें ही कल्याण है।

हरिसिंह—यह राक्षसी हमें राजवंश-विच्छेदके इस भीषण पापाचार-गर्तमें लेडूबेगी, मुझे इसकी स्वप्नमेंभी आशंका न थी। अब तो मेरा शेष जीवन पश्चात्ताप और प्रायश्चित्तमें व्यतीत होगा। मैं भगवान एकलिंगकी शपथ खाकर कहताहूँ कि भविष्यमें उस राक्षसीसे कोई संबन्ध नहीं रखूंगा। *(कान पकड़कर शिर झुकाकर शपथ लेताहै।)*　　　　*(प्रस्थान)*

मालोजी—शीतलसेनीके प्रेमका प्रतिस्पर्धी आज दूर हट सकाहै। अब, जब कभी इसे शीतलसेनीके सुन्दर मुख, मधुर मुस्कान, और गोल काली बड़ी-बड़ी मदभरी आंखोंके संकेतोंका स्मरण होआयेगा उस समय मैं उसे राक्षसी कहकर इसके हृदयमें उदासीनता उत्पन्नकर अपना कार्य साधन करतारहूँगा। शीतलसेनीके जिस प्रेमालापकेलिए मैंने राजबध जैसे महापातकमें भाग लियाहै, उसका पूर्ण स्वादलिए बिना मालोजी अब न हटेगा। हरिसिंह-जैसे वृद्ध जटायुसेभी शीतलसेनी प्रणयलीला करनेलगी, यह बड़ा आश्चर्य है।

(पट)

दृश्य ७

स्थान—चित्तौड़, पन्नाका प्रासाद

पन्ना—शीतलसेनी! यह सब तेरा कुचक्र है। क्षुद्र दास-दासियाँभी अपने कुचक्रसे किसप्रकार महान् राजवंशको भी विपत्तिसागरमें डुबादेतीहैं, यह मन्थराके चरित्रसे स्पष्ट है। मंथरासेभी नीच इस दासी शीतलसेनीने जबसे चित्तौड़में प्रवेश कियाहै तबसे शिशोदियाकुलने शान्तिके दिन नहीं देखे। इसके आतेही संग्रामसिंह, पृथ्वीराज, जयमल्ल, सूर्यमल्लमें गृहकलह

आरम्भ होगया। पृथ्वीराजकी शोकपूर्ण ढंगसे मृत्यु हुई, महाराणा रायमल्लका परलोक वासहुआ। महाराणा संग्रामसिंहको एक दिनभी शत्रुने चैन नहीं लेनेदिया। और आज अन्तमें महाराणा विक्रमादित्यको बन्दी बननापड़ा, और पवित्र शिशोदिया-सिंहासन वर्णसंकरद्वारा अपवित्र कियागया। भगवान करे इस राक्षसीकी पापलीला यहीं समाप्तहोजाए और कल्ल पुनः महाराणा संग्रामसिंहके वंशधर विक्रमादित्य मेवाड़के सिंहासनपर सुशोभित हों। (*नेपथ्यसे रुदनकी मन्दध्वनि आतीहै*।) यह रुदन कैसा ?

(*बारीका प्रवेश*)

बारी—पन्ना! विक्रमादित्यका बनवीरने कारागृहमें बधकर डालाहै।

पन्ना—विक्रमादित्यका बध करडाला? तबतो उदयका जीवनान्तभी निकट है। बनवीर विक्रमका बधकरके चुप बैठने वाला नहींहै। बारी! तुम्हें शिशोदिया कुलकी रक्षा करनीहोगी। मैं उदयको चन्दके वस्त्र पहनातीहूँ। (*वस्त्र पहनातीहै*।) लो, उदयको इस टोकरीमें बिठाकर बेरिसानदीके तटपर लेजाओ। मैंभी शीघ्र आऊंगी। आज यह बड़ी देरतक रोतारहाहै, अस्तु मैंने इसे कुसुम रस चटाकर सुलायाहै। यह मार्गमें रोएगा नहीं, गम्भीर निद्रामें पड़ारहेगा।

बारी—महाराणा संग्रामसिंहके वंशजकेलिए—जिसका नमक खाकर मेरे सौ पीढ़ीके पूर्वपुरुषोंका पालन होतारहाहै, मैं अपना जीवनभी अर्पितकरनेको प्रस्तुत हूँ। पन्ना! शीघ्रता करो, मैं बाहर देखताहूँ।

पन्ना—(*टोकरीमें पत्तल बिछाकर उदयसिंहको लिटातीहै, और ऊपरसे फिर जूठे पत्तल बिछाकर*) मेवाड़के राजकुमार? महाराणा सांगाके एकमात्र वंशधर? जूठी पत्तलोंके आसनपर जूठी पत्तलों

मुकुट पहनो। (*पत्तलोंसे ढकतीहै।*) लो, इसे लेजाओ। (*बारीका टोकरीको लेकर प्रस्थान। उदयसिंहके वस्त्राभूषण अपने पुत्रको पहनाकर*) एक घड़ीकेलिए राजकुमार बनजाओ धायपुत्र! युवावस्था प्राप्तहोनेपर जिस महान् शिशोदियाकुलकेलिए तुम्हें अपने शरीरकी भेंट चढ़ानीथी, उसके एकमात्र वंशधरकेलिए आजही अपना जीवन अर्पित करके अपने पूर्वपुरुषोंको राजऋण से उऋण करो। (*मुख चूमतीहै।*) किसीके पैरोंका शब्द सुनाई देरहाहै। (*भूमिपर एक ओर बैठजातीहै।*)

(*रुधिरभरे खङ्गको लेकर बनवीरका प्रवेश*)

बनवीर—उदयसिंह कहां है, पन्ना?

[*पन्ना कांपतीहुई, अपने पुत्रकी ओर अंगुलीसे संकेत करतीहै।*]

बनवीर—(*खङ्गसे उदयसिंहका बधकरके*) बनवीरके सिंहासन के दूसरे कंटक! जा तूभी विक्रमके साथ जा। (*प्रस्थान*)

पन्ना—(*मरेहुए पुत्रके पास जाकर*) चन्द्र! तूभी उसी दिन इस वसुधापर आयाथा जिसदिन उदयसिंह। आज पांच वर्षकी आयुमेंही उदयसिंहकेलिए अपना रुधिर चढ़ाकर तूने मेवाड़के महान् राजवंशकी इस एकान्त गृहमें जो सेवा कीहै, वह बड़े-बड़े वीर पुरुषों द्वाराभी कठिनतासे कीजासकतीहै। किन्तु मेरे इस महान् त्यागकी सार्थकता इसी बातमें है कि यह सुअवसर आनेसे पूर्व किसीपर प्रकाशित न हो। महाराणी कर्मदेवी! तुमने जिस विश्वासपर उदयसिंहको मेरे हाथोंमें सौंपाथा, मैंने अपनेको उसके अयोग्य नहीं सिद्ध किया। पुत्र! मैं तेरेलिए शोक-विलाप नहीं करूंगी। जो मातृ-भूमिकी रक्षाकेलिए, स्वतन्त्रताकी बलि-वेदीपर, अन्यायका प्रतिकार करतेहुए, वृद्ध-दीन-बालक-अबला और गौ-ब्राह्मणकी रक्षामें, राजवंशके हितार्थ, अपने प्राणोंको

अर्पित करदेताहै, वह अशोच्य होताहै, उसकेलिए पश्चात्तापकी, रुदनकी, विषादकी आवश्यकता नहीं होती। बनवीर! करो, अब निष्कण्टक राज्य करो। तुम्हारा पाप-घट पूरा भरजानेपरही फूटेगा। (*शवको वस्त्रमें लपेटकर लेजातेहुए प्रस्थान*)

दृश्य ८

स्थान—बेरिसा नदीका तट

बारी—(*शिरपर टोकरी लिएहुए चलताहुआ*) अमावस्याके अन्धकार और मेघोंसे आच्छादित इस रात्रिमें किसीने मुझे नगरसे बाहर निकलते नहीं देखा। यदि नगरसे मेरे बाहर निकलतेही आकाश मेघमुक्त न होजाता और तारा नहीं उदित होजाते तो मेरा इतनी दूर चलाआना असंभव था। एक तो छः वर्षका बलक, फिर सोयाहुआ, उसपरभी टेढ़ा-टेढ़ा रास्ता और रात्रिका अन्धकार। इतने बड़े भारको शिरपर उठाकर रात्रिके अन्धकारमें मार्ग टटोलते-टटोलते मैं थकगयाहूँ। अब मैं एक पगभी आगे नहीं जासकता। (*बैठजाताहै*।) पूर्वकी ओर प्रकाश बढ़चलाहै। अन्धकार धीरे-धीरे लुप्तहोरहाहै। कुसुम-रस चाटनेसे उदयसिंह गंभीर निद्रामें मग्न है। यदि मार्गमें ही जागकर भयसे रोपड़ता तो सारा भेद खुलजाता। अब चारों ओर प्रकाश फैलगयाहै। निकटही बेरिसा नदी है। नदीतटपर पहुंचकर इस टोकरीको छिपादेनाचाहिए। (*प्रस्थान*)

(*पन्ना धायका वस्त्रमें लपेटेहुए शवको लेकर प्रवेश*)

पन्ना—नहीं, यह दुर्बलता कैसी? जब अपने हाथोंसे ही अपने हृदयके टुकड़े को मृत्यु शय्यापर लिटादिया, अपने नेत्रोंसेही उसके वक्षस्थलमें नरराक्षसको बर्बरतापूर्वक खड्ग घुसाते देखा और आह तक न की, एक आंसूतक न गिराया

तो फिर अब रुदन कैसा ? जिस महाराणा संग्रामसिंहके प्राणोंकी रक्षाकरतेहुए मेरे प्राणनाथने प्राण उत्सर्ग करदिएथे, उसी संग्रामसिंहके पुत्रकी प्राणरक्षाकेलिएही मेरे पुत्रने अपने प्राण अर्पितकरके अपना जीवन सफल कियाहै। वेरिसा का तट निकटही है। संभवतः बारी अबतक वहाँ पहुंचगयाहोगा। (*प्रस्थान*)

(*बारीका पुनः प्रवेश*)

बारी—वेरिसा नदिका तट आगयाहै, बैठजाताहूँ। पन्ना आनेहीवाली होगी, (*बैठताहै।*)

उदयसिंह—(*जागकर*) धाय मां! धाय मां! (*इधर उधर देखकर रोताहै, पत्तलें उठाकर फेंकताहै।*)

बारी—राजकुमार! रोओ नहीं, पन्ना आरहीहै।

उदयसिंह—मुझे टोकरीमें क्यों रखाहै? (*बाहर निकलताहै।*) मैं यहाँ कैसे आगया? धाय मां! बारी! धाय मां कहाँ है? (*रोताहै।*)

(*पन्नाका प्रवेश। उदयसिंह भागकर पन्नासे लिपटजाताहै।*) धाय मां! चन्द्र कहाँ है? तू कहां रही? मुझे टोकरीमें क्यों रखा? तेरे हाथोंमें क्याहै?

पन्ना—(*पुत्रके शवको धीरेसे भूमिपर रखकर*) उदयसिंहको गोदमें लेकर (*रोते-रोते*) मेरा चन्द्र तूही है, बेटा! बारी! शीघ्र लकड़ियां एकत्रित करो। चन्द्रको चितापर चढ़ाकर शीघ्र यहां से चलपड़नाहै। आज मेवाड़ राक्षसों, भेड़ियों और भालुओंका गढ़ है, उसमें महाराणा-पुत्रकेलिए स्थान नहीं। (*बारी लकड़ियां एकत्रित करताहै।*) मैं यहांतक तो चलीआई, अब कहाँ जाऊंगी? किस प्रकार शिशोदिया-कुलके वंशधरकी रक्षा होगी? कौन इसे शरण देगा? जिस वीर बाघजीरावलने पिछले वैरको भुलाकर

चित्तौड़की रक्षाकेलिए अपनेको राजबलिरूपमें अर्पित कियाथा उसीके पुत्र वीर सिंहरावके पास देवल जाऊंगी। वह अवश्य महाराणा संग्रामसिंहके वंशधरकी रक्षा करेगा।

बारी—पन्ना! चिता प्रस्तुत है।

पन्ना—उदयसिंह फिर सोगयाहै। लो, इसे पकड़ो। मैं अपना कार्य करतीहूं। (*बारी उदयसिंहको गोदमें लेताहै।*

पन्ना—(*अपने पुत्रको चितापर चढ़ाकर गातीहै।*)

शोक-अश्रु! मत छलको।
रोकेरहो विषम पीड़ाको धीरज धरकर पलको! ॥शोक०॥
हृदय-सिंधु! हो शांत, थामले लहरोंकी हलचलको।
दुख-सरिता! मत उमड़,रोकले कल-कलको, निजजलको॥शोक०
रहनेदो परमार्थ-दुग्धको, फेंको स्वार्थ-सलिलको।
भेंट चढ़ादो तन-मन-धन,लख देश-धर्म-मङ्गलको ॥शोक०॥

(*पट*)

दृश्य ९

स्थान—वनमार्ग

पन्ना—एक बार जिस महाराणा संग्रामसिंहकी छत्रछायामें मारवाड़, अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, राइसिन, काल्पी चंदेरी, बूंदी, गांगरोन, रायपुर आदि राज्योंके राजा, राव, रावल और रावत लोग आश्रय लेतेथे, आज उनके एकमात्र वंशधरको कहीं आश्रय नहीं मिलरहाहै। बनवीरके भयसे बाघजीका पुत्र सिंहराव उसे अपने राज्यमें आश्रय देनेका साहस न करसका। समृद्धिके दिनोंके साथी सबहैं, विपत्तिका कोई नहीं। महाराणा संग्रामसिंहके परम मित्र डूंगर नरेश यशाकर्णके पास बारीको

भेजाहै। यदि उन्होंनेभी अस्वीकार करदिया तो फिर उदयसिंह केलिए कहीं आश्रय न मिलसकेगा।

उदयसिंह—धाय मां! तू कहां, कहाँ मुझे लेजारहीहै? क्या यहांभी बनवीर आकर मुझे पकड़लेगा?

पन्ना—हाँ, बेटा! यदि उसे पता लगगया तो अवश्य यहां पहुंचकर हम सबको मारडालेगा।

उदयसिंह—नहीं धाय मां! हम तीन ही उसको मारडालेंगे।

पन्ना—बेटा! जब तुम बड़े होगे तो उस समय ऐसा करसकोगे। अभीतो तुम छोटे हो।

(बारीका प्रवेश)

बारी—पन्ना! डूंगरपुरमें आशा पूर्ण न हुई। बड़ी कठिनता से मुझे यशकर्णसे मिलनेका अवसर मिला। किन्तु जब मैंने उन्हें सारी कथा सुनाई तो उन्होंने अविश्वासकी हंसी हंसतेहुए कहा—यशकर्णके केश धूपमें श्वेत नहीं हुए। संसारकी गति देखते-देखते आज ये श्वेत बनेहैं। उदयसिंहका तो विक्रमादित्यके साथही बध करदियागयाथा। उस चतुर धायसे कहो कि कहीं अन्यत्र अपने पुत्रको उदयसिंह सिद्धकरनेका कपट-जाल बिछाये। यशकर्ण उसके छल-प्रपंचमें नहीं फंससकता। जाओ मेरे राज्यसे निकलजाओ नहीं तो अपना अनिष्ट समझो"।

पन्ना—यशकर्णने अविश्वासको कटारीसे मेरे हृदयपर आघात कियाहै, मेरे त्याग और देशभक्तिकी भावनापर पानी फेरदियाहै। और मुझे चालाक, प्रपंच-जाल बिछानेवाली धूर्त स्त्री ठहराया है। यदि महाराणाके परम मित्रही मेरी बातपर विश्वास नहीं करते तो अन्य कौन करेगा? संग्रामसिंहके पुत्रको धाय पुत्रमात्र रहकर अपना जीवन-निर्वाह करनापड़ेगा, और वह अपने पूर्वजों के सिंहासनसे वंचित रहजाएगा। भगवान्! क्या चन्द्रके जीवन की भेंट व्यर्थ चलीजाएगी?

बारी—सत्य अन्तमें सत्यही सिद्ध होगा, पन्ना! भगवानके यहाँ देर है, अन्धेर नहीं। एक दो बार और प्रयत्न कर देखें।

पन्ना—अब केवल एक स्थान और है। कमलनेरमें विपत्तिके समयमें कई बार मेवाड़-नरेशोंने आश्रयलियाहै। वहाँके अधिपति आशाशाहपर महाराणा संग्रामसिंहके अनेक उपकारोंका ऋणहै। एकबार उनके द्वारपर जाकर देखें, शरण मिलतीहै या नहीं।

बारी—कमलनेर पहुंचना सरल नहीं है, पन्ना! अरावलीकी दुर्गम पर्वतमाला और ईडरके विकट मार्ग-जालको पारकरके कमलनेर पहुचनेमें कई दिन लगेंगे। छः वर्षके बालक उदयसिंह को,जिसने कभी भूमिपर पैर नहीं रखा,सारे मार्ग गोदपर लेजाना कठिन है। फिर मार्गकेलिए कुछ भोजन-सामग्रीभी साथ बांधनी होगी। दो कम्बल यह पहलेही पीठपर बंधेरहतेहैं।

पन्ना—बारी! हमलोग इन सब कष्टोंको उठाकरभी यदि कृतकार्य होगए तो शिशोदियाकुल नष्ट होनेसे बचजाएगा। मेवाड़ पर उसके वास्तविक अधिपति शासन करतेरहेंगे। यदि हमारी असावधानीसे पृथ्वीसे इस महान वंशका लोप होगया तो वीरत्व देशप्रेम, धर्मप्रेम, त्याग और पराक्रमकाही वसुधासे लोपहो जाएगा।

बारी—यहतो ठीक है। किन्तु मुझेतो मार्गकाभी पता नहीं। इधर अरावलीपर मीणा-माहीर आदि अनेक लुटेरोंके दलके दल रहाकरतेहैं जिनकेलिए पथिकोंको लूटना और उनकी निर्दयता-पूर्वक हत्या करनाही दैनिक कृत्य है। जबतक कोई विश्वासपात्र साथी न मिले तबतक उस मार्गपर चलनेका साहसकरना मूर्खताहै।

पन्ना—तुम्हारा कथन सत्य है, बारी! इस पीपलकी छत्र-छायामें बैठजाओ। इसे न बनवीरके खड्गका डर है, न उसे संतुष्ट करके राजसम्मान प्राप्तकरनेकी लालासा। इसके शान्त-शीतल

आश्रयका द्वार सबकेलिए प्रतिक्षण खुलाहै। देखो अपने पत्रों द्वारा संकेतकरके वह हमें बुलारहाहै।

(तीनों पीपलके नीचे बैठतेहैं।)

बारी—पन्ना! देखो, वे तीन पथिक इधरही आरहेहैं। ये भील दिखाईदेतेहैं। क्यों भाई! कहां जाओगे?

प्र०भील—मैंतो ईडर जाऊंगा। पर मेरे ये दो भाई कमलनेरमें राजा आशाशाहके सेवकहैं, वहां जारहेहैं।

बारी—भाई! हमभी उधरही जाएंगे।

प्र०भील—तो चलो, साथही चलें। तुम्हारेपास कोई भार हो तो हमारे पास देदो। साथ-साथ गीत गाते चलेंगे।

बारी—बहुत अच्छा। यह मेरी बहिनहै। यह मेरा भानजा है। हमलोगभी राजा आशाशाहके पासही जारहेहैं।

(सबका प्रस्थान)

दृश्य १०

स्थान—कमलनेर, आशाशाहका प्रासाद

द्वारपाल—तुझे कहदिया न आज भूतपूर्व महाराजका वार्षिक श्राद्ध है, राजपरिवारमें महान उत्सव होरहाहै। सहस्रों अतिथि आएहैं। आज महाराज नहीं मिलसकते।

पन्ना—वार्षिक श्राद्धका नाम सुनकरहीतो मैं भिक्षा लेनेआईहूँ।

द्वारपाल—तो यहां क्यों खड़ीहै? जाओ, भोजनालयमें जाकर आनन्दसे हलवा-पूरी आदि मधुर-मधुर भोजन छको। वहां आज किसीकेलिए निषेध-प्रतिबंध नहीं है, जा, चलीजा।

पन्ना—मैं टुकड़ा मांगने नहीं आई, द्वारपाल! किसी विशेष कामसे आईहूँ।

द्वारपाल—टुकड़ा मांगने नहीं आई तो क्या राज मांगने

आईहै ? देखा, चटाईका लहंगा, नजर आसमानपर, निकलजा, यहांसे। मेरा शिर न चाट।

पन्ना—हम तीनों आशा लेकर बड़ी दूरीसे यहां आएहैं। अगर निराश होकर चलेजाएंगे तो तुम्हारे राजाका यश नष्ट होजाएगा और इस महापातकके भागी तुम धृष्ट द्वारपाल होगे।

द्वारपाल——आपकी धमकी ? तुझ जैसी कुत्तियोंके यज्ञसे चले जानेसे यज्ञ भ्रष्ट नहीं हुआकरते। समझी ? चलीजा, तुझे कह दिया, आज महाराजको मिलनेका अवसर नहीं है।

पन्ना——भले पुरुषोंके द्वारपाल बूचड़ोंके कुत्तोंकी अपेक्षा अधिक दांत मारनेवाले और लालची होतेहैं। इन्हें न अपने स्वामीके सौजन्यकी चिंता होतीहै, न आगन्तुकके सम्मानकी इच्छा। इन्हें तो बस राजदरबारमें आनेजानेवालोंके ऊपर अपनी प्रभुता प्रकटकरनेकी धुन सवार होतीहै ! जितना समय तुमने इस वादविवादमें नष्टकियाहै इतने समयमें तो तुम्हारे महाराजसे वार्तालाप करके मैं लौटभी आती।

(आशाशाहका प्रवेश)

पन्ना--महाराजकी दुहाई ! महाराजकी दुहाई ! मेरी एक प्रार्थना है।

आशाशाह—क्या प्रार्थना है ? कहो।

पन्ना—महाराज ! प्रार्थना एकान्तमें सुननेवालीहै। आपको कष्ट तो होगा। मैं बड़ी दूरीसे चलकर आईहूँ।

आशाशाह——आओ मेरे साथ अन्दर चलीआओ।

आशाशाह, पन्ना धाय, उदयसिंह और बारी अन्दर पहुँचतेहैं आशाशाह सिंहासनपर बैठताहै।)

पन्ना—(उदयसिंहको आशाशाहकी गोदमें बिठाकर) यह

आपके स्वामी महाराणा संग्रामसिंहका छोटा पुत्र उदयसिंह है। बड़ी कठिनाईसे मैं बनवीरके हाथोंसे इसके प्राण बचाकर इसे यहाँ लाईहूँ। इसे अपने आश्रयमें रखकर इसकी रक्षाकीजिए।

आशाशाह--(चौंककर) महाराणा संग्रामसिंहका पुत्र उदयसिंह ? असंभव ! इसका प्रमाण ? और यदि यह उदयसिंह हो भी तो मैं इसे आश्रय देकर बनवीरका कोपभाजन नहीं बनसकता। (गोदसे उतारनाचाहताहै ।)

(रुक्मणीका प्रवेश)

रुक्मणी–नहीं पुत्र ! इसे गोदसे न उतारो। यह सचमुच महाराणा संग्रमसिंहका पुत्र है। देखतेहो वही तेजस्वी मुख,वही काली काली विशाल भौंहे, वही गहरे, नीले नेत्र, वही लम्बी, सीधी नाक, वही काले-घुंघराले केश। अहा ! एक दिन इसी रूपसे सारे भारतके यवन थर-थर काँपतेथे। पुत्र ! इस दिव्य मूर्तिका महाराणा संग्रामके औरसका तिरस्कार न करो। यह बीजमें छिपा विशाल बटवृक्ष है जिसकी छत्रछायामें एक बार फिर हिन्दु जातिको आश्रय मिलेगा। यह प्रशान्त ज्वालामुखी है, जो एक बार फिर भभककर हिन्दुजातिके शत्रुओंपर वज्रांगार बरसादेगा।

आशाशाह—किन्तु बनवीरका··· ···

रुक्मणी—बनवीरके कोप से मत घबराओ, पुत्र ! महाराणा संग्रामसिंहने जो तुम्हारे ऊपर अनेकों उपकार किएहैं, हिन्दुजाति की रक्षाकेलिए जो अपार त्याग कर्म किएहैं, उन्हें उनकी मृत्यु होतेही भुलादेनेकी कृतघ्नता न करो। आज कालचक्रके प्रभावसे तुम्हारे स्वामीका पुत्र तुम्हारी शरणमें आयाहै। अपना अहोभाग्य समझकर उसकी रक्षाकरो। शुभ कार्यका अन्त अशुभ नहीं होता। इस बेचारीको देखो, अपने स्वामिपुत्रकी रक्षाकेलिए अनेक

कष्ट उठाकर यहाँतक पहुंचीहै । क्या राजा होकरभी तुम इस अनाश्रित बालकको अपने यहाँ आश्रय नहीं दे सकते ? बनवीर का भय न करो। यदि स्वामीके हितार्थ तुम्हारेऊपर कोई संकटभी आगया तो कोई चिन्ता नहीं ।

आशाशाह—माँ ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। किन्तु अभी यह छः सात वर्ष का है। जबतक यह युवा होताहै तबतक इसे छिपारखना कठिन है ।

रुक्मणी—चिन्ता न करो, पुत्र ! इसे राजसी वस्त्र पहनाकर अपने भानजेके नामसे प्रचलित करदो। आओ उदयसिंह ! मेरे साथ चलो ।

उदयसिंह—और धाय मां ?

पन्ना—बेटा ! मैं थोड़ी देरमें आकर तुमसे मिलूंगी। तुम इनके साथ जाओ। ये तुम्हारी नानी हैं ।

(*उदयसिंहका रुक्मणीके साथ अन्तर्द्वारसे प्रस्थान*)

पन्ना—महाराज ! अब हम दोनोंका यहाँसे चलाजानाही उचित है। नहीं तो कोई हमलोगोंको यहां देखकर उदयसिंहका पता लगालेगा ।

आशाशाह—इसमेंतो कोई सन्देह नहीं। तो तुमलोग भोजन करलो, और अपने मार्गव्यय, भोजनादिकेलिए यह एक सौ मुद्रा लेजाओ। जब फिर आवश्यकता हो तो मेरे पास आकर लेजाना। (*सौ मुद्राएं देताहै ।*)

पन्ना—मेरे पास अपने निर्वाहकेलिए पर्याप्त है, महाराज ! किसीकी सेवाकरके जीवन व्यतीतकरलूंगी। मेरे पति महाराणा संग्रामसिंहकी रक्षा करतेहुए कनुआके युद्धमें वीरगतिको प्राप्तहोगए थे। एक पुत्र था वह भी कुछ दिन हुए ··· चल बसा। अब मैं अकेली हूँ, किसी प्रकार जीवन-यापन करहीलूंगी। स्वामिपुत्रके

जीवनकी रक्षाकी चिंता थी, उसे आपके आश्रयमें सौंपकर अब चिंतामुक्त होगईहूँ। भगवान! आपका कल्याण करें।

(पन्ना और बारी द्वार तक आतेहैं।)

द्वारपाल—मेरा अपराध क्षमाकरना। मैंने आपको पहचाना नहीं।

पन्ना—(*दो मुद्रा देकर*) लो, उस समय मेरे पास यह नहीं थे, इसलिए पहचानना कठिन था।

द्वारपाल—(*इधर-उधर देखकर, पिछली ओर हाथ मोड़कर मुद्राएं लेताहै।*) अब जब आओगी तो आपको कष्ट न होगा।

[पन्ना और बारीका प्रस्थान। रुक्मणीका पुनः प्रवेश)

रुक्मणी—वह बालक तो बड़ा उद्दंड है, आशाशाह! उसमें युवा राजकुमारकी-सी निर्भीकता और साहस है। अभी भोजन करते समय जब दही परोसनेवाला आया तो उसने तो बड़ी निर्भयतासे दहीका पात्र छीनलिया। परोसनेवाला अनेक यत्न करनेपरभी उससे दहीका पात्र वापिस न लेसका। छः सात वर्ष के बालककी यह धृष्टता देखकर सब अभ्यागत चकित होगए। किसी-किसीने तो यहां तक कहडाला कि ऐसा तेजस्वी बालक आशाशाहका भानजा नहीं होसकता। इतने तेजस्वी बालक को गुप्तरखना सूर्यको चिथड़ोंसे ढकनाहै।

आशाशाह—उस बालकके संबन्धमें जो सन्देह हारहाथ वह इस घटनासे दूर होगया। यह अवश्य महाराणा संग्रामसिंह का पुत्र है। किसी दिन अवश्य अपने पिताके समान तेजस्वी होगा। मैं अपने प्राण, राज्य और सर्वस्वको भी संकटमें डालकर इसकी रक्षाकरूंगा।

—पट—

अङ्क ३

दृश्य १

स्थान—चित्तौड़, राजमार्ग

(मालोजी और हरिसिंह सोलंकी मार्गमें चलरहेहैं। सामनेसे तीन नागरिकोंका प्रवेश)

प्र० नागरिक—*(मालोजी और हरिसिंहकी ओर संकेत करके)* देखा, यही हैं वे, जिन्होंने उच्चपदोंकी लालसासे विक्रमादित्य और उदयसिंहकी हत्यामें बनवीरका साथ दियाहै।

द्वि० नागरिक—इन महानीचोंके तो मुख देखने और नाम लेनेसेभी राजद्रोह लगताहै।

तृ० नागरिक—जबतक हिन्दुस्थानमें ऐसे नीच राजद्रोही हैं, तबतक हिन्दुस्थानका कल्याण नहीं होसकता !

(नागरिकोंका प्रस्थान)

मालोजी—सुना, हमें जनता किस दृष्टिसे देखतीहै ?

हरिसिंह—हां, यही सुनकर तो मैं प्रति दिन सूखताजारहा हूँ। मालोजी ! घरमें इसी बातको लेकर नित्य कलह होताहै। मेरे स्त्री-पुत्र-भाई कहतेहैं तुमने जो राजद्रोहका महापातक किया है उसके फलस्वरूप हमारा भी सर्वनाश होजाएगा।

मालोजी—क्या कहूँ, हरिसिंह ? मेरी स्त्री तो बार-बार मुझे यह कहकर डंसतीरहतीहै कि तुमने अपनी प्रेमिका शीतलसेनी की संतुष्टिकेलिए इस पापाचारमें योग दियाहै।

हरिसिंह—सामन्तगणोंने भी यद्यपि विक्रमादित्यको राज्य-भ्रष्ट करके बन्दी बनानेमें पूर्ण सक्रिय भाग लियाथा, किन्तु वे सारा दोष हमारे शिरपरही फेंकतेहैं।

मालोजी—यह तो संसारका नियम ही है, भाई ! शुभ कार्य के यशमें हाथ बंटानेकेलिए प्रत्येक व्यक्ति उत्सुक होताहै, किन्तु अशुभका उत्तरदायित्व लेनेको कोई प्रस्तुत नहीं होता।

(दोनोंका प्रस्थान । कर्मसिंह, साहीदासका प्रवेश)

कर्मसिंह—साहीदास ! जिस दिन विक्रमको सिंहासनच्युत कियाजारहाथा, उस दिन मेरा अन्तस्तल कहताथा कि हम लोग जो कार्य कररहेहैं, उसका फल मेवाड़केलिए शुभ न होगा।

साहीदास—यह बनवीर तो विक्रमादित्यसेभी अधिक आततायी है जिसको विक्रमादित्यका बन्दी रूपमें जीवित रहना भी असह्य होगया। मेवाड़के पवित्र शिशोदियाकुलमें यह प्रथम अवसर है जब राजसिंहासनके वास्तविक अधिकारीको इसप्रकार सिंहासनच्युतकरके उसकी इस प्रकार बद्ध पशुकी भांति अंधकोठरीमें हत्या कीगईहै।

कर्मसिंह—इससेभी दारुण कार्य बेचारे छः वर्षके अबोध बालक उदयसिंहकी हत्या है। मेवाड़के पवित्र शिशोदियाकुलको निर्मूलकरके आज एक पंचमपुत्र सिंहासनपर आसीन है। करभार और कर्मचारियोंके अत्याचारसे प्रजा व्याकुल है, उसके कष्ट दूरकरनेकेलिए बनवीरने जो प्रतिज्ञाएं कीथीं, वे सब भुला दीगईहैं।

साहीदास—कौन नहीं जानता कि बनवीरने जिस खड्गको छूकर विक्रमकी रक्षाकरनेकी शपथ लीथी, उसने उसी खड्गसे उसकी बद्धपशुके समान हत्या कीहै। जिसने अपने चचेरे भाई विक्रमसे किएहुए प्रणको क्षणभरमें भुलादिया वह प्रजासे किएहुए प्रणको कब स्मरण रखता ?

कर्मसिंह—विक्रमादित्यके शवको लेकर तो उसकी छोटीरानी सती होगई किन्तु सुनाहै उदयसिंहके शवका कुछ पता न चला।

साहीदास—कोई कहतेहैं कि बनवीरने उसे जीवितही मान-सरोवर में डालदियाथा, कोई कहतेहैं उसे कहीं गाड़ दियाहै। किसी-किसीका यह कहना है कि पन्ना धायने बेरिसके तट पर उसका दाह संस्कार किया और उसके पश्चात् वह अपने पुत्रको लेकर न जाने कहाँ चलीगई।

कर्मसिंह—जितने मुँह उतनी बातें हैं। पर बनवीरसे कोई प्रसन्न नहीं। सब इसके विनाशकी घड़ीकी प्रतीक्षामें हैं। मेरे ये जरा-जीर्ण बाहु, जिन्होंने विक्रमको सिंहासनसे उतारनेका कुकृत्य कियाथा, बनवीरको भी सिंहासनसे उतारकर पिछले कृत्यका परिमार्जन करसकतेहैं।

साहीदास—किन्तु बनवीरके पश्चात् सिंहासनपर किसे बिठाओगे?

कर्मसिंह—यहीतो विषम समस्या है। यदि आज विक्रम या उदयमेंसे एक भी जीवित होता तो आजही हम इस अत्याचारी को हटाकर वास्तविक उत्तराधिकारीको सिंहासनपर बिठादेते।

(एक राजसेवकका प्रवेश)

राजसेवक—सामन्तश्रेष्ठ साहीदासजी! चलिए, अपने घर पधारिए। आपकेलिए श्री महाराणाने यह दूना भेजाहै।

साहीदास—दूना भेजाहै? मेरेलिए? सामन्त साहीदासके-लिए? लेजाओ इसे वापिस। यदि महाराणा संग्रामसिंहके पवित्र वंशधरके भोजनागारसे दूना आता तो मैं उसे अत्यन्त आदर-पूर्वक अपने सिरपर चढ़ाता। किन्तु पंचमपुत्रके दूनाको ग्रहण करनेकेलिए कोई सामन्त प्रस्तुत नहीं है। जाकर अपने महा-राणासे कहदो।

(राजसेवकका प्रस्थान)

कर्मसिंह—देखी इस पंचमपुत्रकी धृष्टता ? यह नीच महाराणा संग्रामसिंहके पवित्र सिंहासनपर आरूढ़ होकर अब अपने को शुद्धरक्तसंभवभी समझनेलगाहै !

साहीदास—इस नीच पंचमपुत्रने मेरेलिए दूना भेजकर मेरे महान पावनकुलका जो अपमान कियाहै उसका मैं प्रतिकार किए बिना न रहूँगा । जबतक मैं इस महानीचको राज्यच्युत न कर लूंगा तबतक दाढ़ी-मूंछ न मुंडाऊंगा । आह ! यदि बिक्रमादित्य या उदयसिंहमेंसे आज कोई जीवित होता तो मैं अकेलाही इस नीचको राज्यच्युतकरके महाराणा संग्रामसिंहके वंशधरको सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरदेता ।

(*अखिलरावका प्रवेश*)

अखिलराव—(*इधर-उधर देखकर साहीदासके कानके निकट*) महाराणा संग्रामसिंहका वंशधर उदयसिंह जीवितहै, साहीदास । अत्याचारी बनवीरका खड्गभी उसे यमलोक नहीं भेजसकाहै ।

साहीदास—कर्मसिंह ! क्या सच ? सच ? सच ?

अखिलराव—यह बातें राजमार्गमें करनेकी नहीं हैं । चलो, मेरे साथ । एकान्तमें मैं तुम्हें सारी बातें बताऊंगा ।

(*सबका प्रस्थान*)

दृश्य—२

स्थान—कमलनेर, आशाशाहका राजप्रासाद

आशाशाह—आपलोगोंने बड़ा अनुग्रह कियाहै, सामन्तगण ! जो आप यहां पधारेहैं । मैं सारे सामन्तोंसे परिचित नहीं, अखिलराव ! बतलाइए कौन-कौन सज्जन पधारेहैं ?

अखिलराव—कमलनेर-नरेश ! आज यहां चण्डके प्रतिनिधि शालुम्ब्रापति साहीदास, कैलवापति जागो, गौरनाथ सांगा आदि

चन्दावत गोत्रके सामन्तगण, कोटारिया और बैदलाके चौहान-गण, बिजौलीके परमारगण, सचोरपति पृथ्वीराज, और जैतावत लूणकरण आदि अनेक सामन्तगण पधारेहैं। इन सबकी राजकुमार उदयसिंहपर परम श्रद्धा है। और महाराणा संग्राम-सिंहके पुत्रकेलिए अपना रुधिर अर्पितकरनेको प्रस्तुतहैं। किन्तु संभवहै किसीको अभीतक राजकुमारके संबंधमें किसी प्रकार संदेह हो उसका निराकरण किस प्रकार कियाजाए?

पन्ना—सन्देहकेलिए स्थान नहीं है, वीर सामन्त! अभी मैं और यह बारी दोनों जीवितहैं। उस भयङ्कर कालनिशामें अभागे विक्रमादित्यकी हत्यासे जब सहसा अन्तःपुरसे क्षीण क्रन्दन ध्वनि आई तो मैंने बारीको भेजकर पता लगाया कि विक्रमादित्यकी हत्या होचुकीहै। मैंने तत्काल यह विचार करके कि बनवीर उदयसिंहकोभी जीवित न छोड़ेगा। चटपट उदयसिंहके वस्त्र अपने पुत्र चन्द्रको, जो उसीकी अवस्थाका था, पहनादिए और उसे उदयसिंहकी शय्यापर लिटादिया। कुसुमरस चटानेसे उदयसिंह गंभीर निद्रामें मग्न था। उसे फलोंके टोकरेमें पत्तलोंसे ढककर उसीसमय बारीके शिरपर रखदिया। और बारीको रातही रात बेरिस नदीके तटपर जानेकेलिए कहा।

साहीदास—फिर क्या हुआ?

पन्ना—बारी घरसे बाहर निकलाहीथा कि विक्रमके रुधिरसे भरेहुए खड्गको लेकर बनवीर मेरे गृहमें आपहुंचा और उसने कठोर स्वरसे कहा—'उदयसिंह कहाँहै?' मैंने अंगुलीसे अपने पुत्रकी ओर संकेत किया। उसी समय उस राक्षस ने वह खड्ग मेरे इकलौते पुत्रके वक्षस्थलमें··· (*रोतीहैं*।) मैंने अपने नेत्रोंसे अपने इकलौते बालकको तड़प-तड़पकर मरतेहुए देखा, किन्तु

भेद खुलजानेके भयसे आह तक न की। आंसू तक न डाला। उसके रुधिर चूतेहुए शवको वस्त्रमें लपेटकर रातहीरात बेरिसके तटपर पहुँची और उसका अपने इन्हीं दग्ध हाथोंसे दाह-संस्कार किया। (रोतीहै।)

आशाशाह—अपने इस महान त्यागसे पन्नादाई! तुमने केवल खीचीकुलको नहीं उज्ज्वल किया वरन समस्त हिंदुजाति की प्रतिष्ठा बढ़ाईहै। जबतक हिन्दुजातिकी नारियोंमें इस प्रकार बलिदान करनेकी शक्ति है, तबतक विधर्मी अत्याचारियोंके सौ-सौ अत्याचारोंसेभी इस जातिका विनाश न होसकेग।

अखिलराव—पन्नादाई! तुमने अबला होतेहुएभी परम प्रतापी महान् वीरोंके समान कार्य कियाहै। जबतक मेवाड़में शिशोदियाकुलका अस्तित्व रहेगा, जबतक हिंदुस्थानमें हिंदु-जाति रहेगी, जबतक गंगा और यमुना अपना पवित्र जल बहाती रहेंगी, तबतक पन्नाधाय! तुम्हारा नाम सदा अमर रहेगा।

साहीदास—तुमने अपने इस महान् त्यागसे हम सबको अन्यायके प्रतिकार और न्यायकी रक्षाकेलिए अपने प्राण, संतान, सर्वस्व अर्पितकरदेनेका उच्च आदर्श दिखायाहै। जो कार्य हम सब न करसके वह तुमने असहाय अबला होतेहुएभी करदिखाया। हमलोग अपना रुधिर बहाकरभी उदयसिंहको मेवाड़के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करेंगे।

सामन्तगण—धन्य! धन्य! अवश्य, अवश्य।

अखिलराव—उदयसिंहकी रक्षा और उसे मेवाड़के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करदेनेकेलिए मैं इस खड्गकी शपथ लेताहूं, कि यदि शीघ्र इस कार्यमें सफलता न प्राप्त करूंगा तो इस खड्गसे अपना शीश उड़ादूंगा। अपने हृदयकी सत्यताका प्रमाण देनेके-

लिए मैं आज आप समस्त उपस्थित सामन्तोंके सन्मुख उदय-सिंहको अपनी कन्या देनेका प्रण करताहूं ।

सामन्तगण—धन्य ! धन्य !

उदयसिंह—आप समस्त सामन्तोंने जो मेरी सहायताकरने की प्रतिज्ञा कीहै, उसकेलिए मैं आप सबका धन्यवाद करताहूँ । इस समय मेरेपास कोरे धन्यवादके अतिरिक्त और क्या है ?

प्र०सामन्त—अहा! पूर्णरूसे महाराणा संग्रामसिंहका स्वरूपहै!

द्वि० सामन्त—वही रूप, वही रंग, वही मुख, वही नाक, वही भौं, वही वाणी ।

तृ० सामन्त—कितना सुडौल, कितना दृढ शरीर है ! अभी चौदह वर्ष की आयुमें ही यह युवा सिंहकी भांति ओजस्वी, प्रभावशाली और मनोहर दिखाईदेताहै । पूर्ण यौवन प्राप्तहोनेपर यह वीर समस्त राजस्थानका मुख उज्ज्वल करेगा ।

उदयसिंह—झालोरके शोनगड़े सरदार अखिलरावका मैं विशेषरूपसे कृतज्ञ हूं जिन्होंने मुझसे इतना अधिक प्रेम दिखलाया है । मैंने राजमाता रुक्मणीदेवीसे अपने महान् कुलका कुछ इतिहास सुनाहै । मैंने सुनाहै कि महाराणा हम्मीरने नियम करदिया था कि भविष्यमें कोई गिल्हौट शोनगड़े गोत्रके साथ विवाह न करसकेगा । फिर मैं पूर्व पुरुषोंकी आज्ञाका उल्लंघन किस प्रकार करूं ।

आशाशाह—मालदेवके दुर्व्यवहारसे खिन्न होकर राणा हम्मीरने अवश्य ऐसा नियम बनायाथा । किन्तु आज उस नियम की अवहेलना करनेमेंही राजकुमार ! आपका कल्याण है । सारे मेवाड़के सामन्त शोनगड़े वीर अखिलरावके साथी हैं । इनकेप्रेम का भाजन बननेसे आपको मेवाड़के सिंहासनकी प्राप्तिमें बड़ी सुविधा होगी ।

उदयसिंह—आप लोगोंकी आज्ञा मेरेलिए शिरोधार्य है।

सामन्तगण—धन्य ! धन्य !

साहीदास—मेरी एक प्रार्थना है। यदि उपस्थित सामन्तगण अनुचित न समझें तो आजही मध्यान्हमें बड़ी धूमधामसे राजकुमारका राजतिलक करदियाजाए। और हम समस्त सामन्तगण महाराणा संग्रामसिंहके वंशजके प्रति स्वामिभक्तिकी शपथ ग्रहण करें।

सामन्तगण—ठीक है। धन्य ! धन्य ! साधु ! साधु !

पन्ना—सामन्तगण ! अब मैं आप लोगोंके हाथोंमें आपके स्वामी महाराणा उदयसिंहको समर्पित करतीहूं। मेरा अब इस वसुधापर कोई नहीं। अब मैं शान्तिपूर्वक भगवान्‌का भजन करतीहुई कहीं एकान्तमें अपना जीवन व्यतीतकरूंगी।

उदयसिंह—धाय माँ ! मुझे इसप्रकार त्यागकर न चलीजाओ।

पन्ना—बेटा ! अब कोई चिंता नहीं। समस्त राजस्थान और विशेषत: मेवाड़के सामन्तोंने तुम्हारी रक्षा और सेवाका प्रण कियाहै। दुर्बल पन्ना धायसे अब तुम्हारी रक्षा-सेवा न होसकेगी। जिस दिन तुम चित्तौड़में अपने पूर्वजोंके पवित्र सिंहासनपर प्रतिष्ठित होगे, उस दिन तुम्हारे दर्शनकरने आऊँगी। (प्रस्थान)

—पट—

दृश्य ३

स्थान—चित्तौड़, शीतलसेनीका प्रासाद

मालोजी—शीतलसेनी ! अपना कार्य सिद्धकरनेके पश्चात् साधनको इस प्रकार ठुकरादेना उचित नहीं। तेरे सौन्दर्यपर मुग्ध होकर, तेरे प्रेमके आश्वासनसे मैंने अन्यायका पथ ग्रहणकिया। विक्रमके विरुद्ध कर्मसिंह आदि सामंतोंको

उकसाया, उसे बंदी बनाकर मेवाड़के सिंहासनपर तेरे पुत्रको प्रतिष्ठित करवाया। और अंतमें सबसे महाभयंकर पाप महाराणा संग्रामसिंहके पुत्रकी हत्यामें भी तुम्हारे पुत्रका साथ दिया। इतनी सेवाएं करनेपरभी, शीतलसेनी! तुमने कभी मुझे सच्चे हृदयसे प्यार नहीं किया। अपना शरीर मुझे अर्पितकरना तो दूर रहा अभीतक मुझे अपने अरुण-अरुण मादक अधरों तकको······

शीतलसेनी—क्या बातें करतेहो, मालोजी? राजमाताके सन्मुख इस प्रकारकी अश्लील बातें करते तुम्हें लज्जा नहीं आती? आज शीतलसेनी गोबर एकत्रितकरके उपले बनानेवाली ग्रामीण लड़की नहीं है। न वह आज पृथ्वीराजकी सामान्य दासी या प्रधान परिचारिका है। वह है आज मेवाड़के महाराणा परम प्रतापी बनवीरकी माता, जिसके इंगितपर आज समस्त मेवाड़का शासन चलताहै। जिसके कथनमात्रसे आज सहस्रोंको जीवनान्तका दण्ड और सहस्रोंको जीवनदान दियाजासकता है। तुम जैसे कामुक कुत्तोंको प्रेमका टुकड़ा दिखलाकर अपने शत्रुओंके पैर कटवानेवाली शीतलसेनी पृथ्वीराजकी विधवा परिचारिका थी, मेवाड़की राजमाता शीतलसेनी नहीं।

मालोजी—मेरे प्रेमकी कठिन परीक्षा होचुकीहै, शीतलसेनी! अब अधिक परीक्षा न लो, एक बार, बस एक बार, मानजाओ। मुझे अधिक न तड़पाओ। इस हृदयको फाड़कर देखो, उसमें तुम्हारेलिए कितना प्रेम है!

शीतलसेनी—बस, बस, संभलकर बात करो, समझतेहो किसके सन्मुख बात कररहेहो? चलेजाओ। भविष्यमें कभी मुझसे ऐसी बातें न कहना, नहीं तो जिह्वा उखड़वादूंगी।

मालोजी—अच्छा, शीतलसेनी! तेरे इंगितपर पापको पुण्य समझकर, रातको दिन समझकर, शत्रुको मित्र, और मित्रको शत्रु समझकर मैंने अपने इहलोक और परलोक दोनों नष्ट किएहैं, अब अन्तिम बार तू जिह्वाभी उखड़वाले।

(प्रस्थान)

(हरिसिंह सोलंकीका प्रवेश)

शीतलसेनी—एक मूर्खको अभी बड़ी कठिनाईसे निकाला, लो यह दूसरा आमरा! क्यों? क्या बात है? क्यों आएहो?

हरिसिंह—शीतलसेनी! तुम सदा शांत-शीतल ढङ्गसे प्रेमपूर्वक बातचीत कियाकरतीथी, आज······

शीतलसेनी—शीतलसेनी तप्तांगारके समान ऊष्ण भी बन सकतीहै, समझे? क्या हुआ प्रेमपूर्वक? देखा, इस बुड्ढे खुर्रांट को, बाल पकगए, गाल पिचकगए, फिर भी बोलता है 'प्रेमपूर्वक-बातचीत'।

हरिसिंह—शीतलसेनी! आज तुम······

शीतलसेनी—तुमने सभ्यता नहीं सीखी? नहीं देखते किसके सन्मुख बोलरहेहो? राजमाताका नाम लेकर पुकारनेका दुस्साहस करतेहो? फिर ऐसा कहा तो जिह्वा उखाड़डालूंगी। समझे?

हरिसिंह—राजमाता! इतना न चिढ़ो। मैं तुमसे केवल इतना कहने आयाथा कि उदयसिंह जीवित है और मेवाड़के समस्त सरदारोंने कलही उसका राजतिलक कियाहै।

(बनवीरका प्रवेश)

बनवीर—क्या कहा? उदयसिंह जीवित है?

हरिसिंह—हां, महाराणा! पन्ना धायने उसे कमलनेरके राजा आशाशाहके पास जाकर छिपायाथा। वहीं उसका पालन हुआ

और कल उसका राजतिलक भी होगयाहै, जिसमें मेवाड़के सामन्त सम्मिलित हुए।

बनवीर—असंभव ! श्वेत झूठ, उदयसिंह और विक्रमादित्य इस हाथसे इस खड्गके द्वारा यमलोक पहुंचेहैं। शय्यापर तड़प-तड़पकर मरतेहुए उदयसिंहको मैंने इन्हीं नेत्रोंसे देखाहै। फिर किसके पास ऐसा अमृत है जिसने उदयसिंहको फिरसे जीवित करदिया ?

हरिसिंह—उदयसिंह जीवित है, महाराणा ! जिसकी आपने अपने खड्गसे हत्या की वह पन्नाका बालक चन्द्र था। पन्नाने विक्रमका हत्याका समाचार पाकर उदयसिंहको छिपादिया और उसके वस्त्र अपने समवयस्क पुत्र चन्द्रको पहनाकर उदयसिंह की शय्यापर लिटादिया।

शीतलसेनी—इतना महान् धोखा ! पन्ना ! कूटनीतिमें तू शीतलसेनीसे भी आगे बढ़गई ! तूने अपने पुत्रको उदयसिंह बतलाकर मेवाड़का सिंहासन हस्तगत करने और अपने लिए अमर गौरव प्राप्तकरनेका अच्छा मार्ग निकालाहै।

बनवीर—तुम्हारे कथनपर विश्वास कैसे करलूं, हरिसिंह ? मैं यह कैसे मानलूं कि जिसका मैंने इस खड्गसे बधकिया वह धायपुत्रमात्र था, उदयसिंह नहीं ?

शीतलसेनी—तुम्हारे अविश्वास करनेसे क्या बनताहै, बनवीर ? जबकि मेवाड़के समस्त सामंत पन्नाकी इस कूट-कहानी पर विश्वास करनेलगेहैं ? सिंहासन ! तुझे प्राप्त करनेकेलिए कितनी रानियां लोहेके तसले उदरपर बांधकर गर्भवती बनतीहैं ! रानियाँ सेवकोंके पुत्रको अपना औरस बतलाकर सिंहासनके वास्तविक किंतु सपत्नीजात उत्तराधिकारियोंको वंचित करतीहैं। पन्ना ! तेरी कूटनीतिकेलिए नमस्कार है। जिसे पन्ना उदयसिंह

कहरहीहै, वह उदयसिंह हो न हो, पर वह उदयसिंह अब बन गयाहै, उसे बनवीर और पन्नाका सन्देह या और विश्वास धायपुत्र नहीं बनासकता।

(कर्मसिंहका प्रवेश)

कर्मसिंह—सन्देहकेलिए स्थान नहीं है, महाराणा! पन्ना धायके महान् त्यागने जिस उदयसिंहको मृत्युमुखसे बचायाहै, उसे मेवाड़के समस्त सामन्तोंने कल कमलनेरमें अपना महाराणा स्वीकारकियाहै। चण्डके प्रतिनिधि शालुम्ब्रापति साहीदास, कैलवापति जागो, गौरनाथ साँगा आदि चन्द्रावत सामन्तगण कोटोरिया और बैदलाके चौहानगण, बिजौलीके परमारगण संचोरपति पृथ्वीराज, जैतावत, लूणकरण तथा शोनगड़े सरदार अखिलराव सहस्रोंकी उपस्थितिमें कल कमलनेरमें उदयसिंहके राजतिलकमें सम्मिलितहुयेहैं।

बनवीर—क्या इन सबने पन्नापुत्रको उदयसिंह स्वीकार करनेमें किसी प्रकारका संदेह या अविश्वास नहीं प्रकट किया?

कर्मसिंह—सन्देह और अविश्वासके स्थानपर उन्होंने राजभक्ति और श्रद्धा प्रकटकी और उदयसिंहको मेवाड़के सिंहासनपर बिठानेकेलिए अपना तन-मन-धन-सर्वस्व अर्पितकरदेनेकी शपथ ली। श्रद्धासे गद्गद होकर शोनगड़े सरदार अखिलरावने उदयसिंहके साथ अपनी कन्याका विवाह करदेनेकी भी घोषणा की।

बनवीर—तबतो निस्सन्देह महान विपत्ति आईहै। इसका प्रतिकार करना सरल नहीं है। अब क्या होगा? यह समस्त उत्पात साहीदासने मचायाहै।

शीतलसेनी—विपत्तिमें घबरानेसे कार्य नहीं चलता, बनवीर! मैं दीन दास-दासियोंकी पुत्री हूँ, फिर भी मुझमें इतना धैर्य और साहस है। तुम्हारी बाहुओंमें तो वीर पृथ्वीराजका रक्त है।

शत्रुके सम्बन्धमें दूरसेही सुनकर अपनी हिम्मत खोबैठना पुरुषत्वकी हीनता प्रकट करनाहै। अब भी हमारे पास पुराने, विश्वस्त तथा परखेहुये कर्मचारी वीराग्रणी कर्मसिंह, मालोजी और हरिसिंह सोलंकी हैं।

हरिसिंह—मालोजी मुझे इसी प्रासादके द्वारपर मिलेथे उनके वार्तालापसे प्रकटहोताथा कि वे भी उदयसिंहसे मिलने जारहेहैं! संभवतः वे अबतक चलेगयेहोंगे। रहे कर्मसिंह और मैं—हम दोनों वृद्ध हैं। हम बुड्ढे खर्राटोंसे, जिनके बाल पक गए, गाल पिचकगए, अब क्या होसकताहै।? हमें महाराणाकी आज्ञापालनसे अनिच्छा नहीं। पर हमसे कुछ हो न सकेगा।

(रुधिरसे लथपथ एक सैनिकका प्रवेश)

सैनिक—महाराणाकी जय हो! मैं उन एक सहस्र गहरवाल सैनिकोंमेंसे एक बचाहुआहूँ जो आपकी पुत्रीके यौतुककेलिए कच्छदेश से लाईजानेवाली बहुमूल्य सामग्रीके साथ थे। जब हमलोग अरावलिगिरिके मार्गपर चलरहेथे तो सहसा अनेकों सशस्त्र सामन्त सिंहोंके समान हमलोगोंपर टूटपड़े। और समस्त गहरवाल सैनिकोंको यमलोक पहुंचाकर पाँच सौ घोड़ों और दस सहस्र बैलोंपर लदीहुई समस्त सामग्री लूटकर उदयसिंहके अभिषेकमें कमलनेर लेगए। उनके कथनसे प्रतीत होताथा कि यह सामग्री उदयसिंहके विवाहमें प्रयुक्तहोगी।

शीतलसेनी—जाओ, विश्राम करो। *[सैनिकोंका प्रस्थान]* परिस्थिति सचमुच बहुत बिगड़चुकीहै। जिस समय मित्रोंकी संख्या अत्यन्त न्यून हो, और शत्रुओंकी संख्या बढ़चलीहो, विपत्तिके बादलोंने उमड़कर चारों ओरसे घेरलियाहो, उसीसमय तो मनुष्यके साहस, बुद्धि और कर्त्तव्यपरायणताकी परीक्षा होतीहै। बनवीर! वीर कर्मसिंहकेसाथ मिलकर युद्धकी आयो-

जना करो। जाओ ! एक-एक क्षण महा अमूल्य है। विलम्ब करनेसे शत्रुओंकी धृष्टता औरभी बढ़ जाएगी।

(कर्मसिंह और बनवीरका प्रस्थान)

शीतलसेनी—*(हरिसिंहके गलेमें बाहु डालकर)*वीर सोलंकी ! तुम इतने शीघ्र रुष्ट होगए ! यहतो तुम्हारे प्रेमकी परीक्षा थी। बिना परीक्षालिएभी कोई किसीको अपना हृदय अर्पित करता है ? तुम्हारे अतिरिक्त बनवीरका हितैषी दूसरा नहीं है। मैं तुम्हारी हूँ। इसमें तुम कुछभी सन्देह न करो।

हरिसिंह—शीतलसेनी ! तू मायाविनी है। तेरे हृदयका पता लगाना दुष्कर है। अभी-अभी तू मेरी जिह्वा उखाड़ फेंकनेकी धमकी देतीथी, अब इतने प्रेमपूर्ण आलाप करनेलगीहै ! मैं तेरे उस पूर्वरूपको सत्य समझूं या इस नवीनको ?

शीतलसेनी—जो रूप अभी थोड़े समय पहले तुमने देखा वह कपटरूप था, हरिसिंह ! आरम्भसे ही तुम शीतलसेनीको जिस रूपमें देखरहेहो, वही उसका सत्य रूप है। दुर्बल नारी हृदय यदि थोड़ी देर मानकरके उग्ररूप धारण करनेका अभिनय करना चाहताहै तो सहसा उसकी नवनीत-भावनाएं द्रवितहोकर उसका वास्तविक स्निग्धरूप प्रकटकरदेतीहैं ! जाओ। मालोजी रुष्ट होकर चलेगएहैं, शीघ्र उनको, जिसप्रकार भी होसके, मनाकर लेआओ। आज रात्रिको आप दोनों केलिए भोजन राजप्रासादमेंही प्रस्तुत होगा।

हरिसिंह—अच्छा *(प्रस्थान)*

—पट—

दृश्य ४

स्थान—कमलनेर, विवाह-मंडप

साहीदास—महाराणा उदयसिंहका विवाह विधिपूर्वक सम्पन्न होगया। सारे राजस्थानके राजवंशोंने बहुमूल्य उपहार-सामग्री भेजकर महाराणा संग्रामसिंहके पुत्रकी अभ्यर्थना कीहै। मेवाड़के समस्त सामन्तगण यहाँ उपस्थित हुएहैं। आजही पंचमपुत्र बनवीरको सिंहासनसे उतारकर मेवाड़के वास्तविक अधिपति महाराणा उदयसिंहको सिंहासनपर प्रतिष्ठितकरनेका आयोजन होजानाचाहिए।

कर्णसिंह—केवल मालोजी, हरिसिंह सोलंकी और कर्मसिंह ही इस शुभ विवाहमें सम्मिलित नहीं हुएहैं, साहीदास। कर्मसिंह तो हमारे पक्षमें हैं, इसमें सन्देह नहीं। वे प्रकटरूपमें बनबीरके सहायक होनेपरभी प्रच्छन्नरूपसे हम से मिलेहुएहैं और उचित समय आनेपर हमारी सहायताभी अवश्य करेंगे। किन्तु मालोजी और हरिसिंह सोलंकी हमारे विरोधी और बनवीरके कट्टर समर्थक हैं। उनके साथ क्या व्यवहार कियाजाए?

अखिलराव—महाराणा संग्रामसिंहके पुत्रके विवाहमें सम्मिलित न होनेसे मालोजी और हरिसिंह सोलंकीने राजद्रोहका भयंकर अपराध कियाहै। बनवीरपर आक्रमण करनेसे पूर्व इन दोनों राजद्रोही सरदारोंको प्राणदण्ड देना आवश्यक है।

कर्णसिंह—यह खड्ग तबतक कोषमें विश्राम नहीं लेगा जब-तक मालोजी और हरिसिंह सोलंकीका रुधिरपान न करलेगा।

समस्त सामन्त—साधु! साधु!

अखिलराव—विलम्बकी आवश्यकता क्या है? अभी कुसुमरस पान करके इन दोनों सामन्ताधमपर आक्रमण करदेनाचाहिए।

महाराणा उदयसिंहकी विजययात्राका श्रीगणेश आजसेही आरंभ होजानाचाहिए।

समस्त सामन्त—धन्य! धन्य!

(*अखिलराव एक विशाल पात्रमें अहिफेन घोलता है और समस्त सामन्त एक-एक गिलास अहिफेन पान करतेहैं।*)

साहीदास—(*हुँकारकरके*) कुसुमरसकी संजीवनी घूंट पीलेनेपर अब मेरे हृदयमें कार्तिकेयका-सा विक्रम, वीरभद्रका-सा साहस, भीमसेनका-सा उत्साह और जामवन्तकी-सी शक्ति आ-गईहै। देखरहेहो मेरी भुजाएँ किस प्रकार फड़कनेलगीहैं? मूछोंपर कैसे ताव आगयाहै। भौंहें कैसे चढ़गईहैं। अत्याचारी बनवीर! तेरा विनाश निकट आगयाहै। तेरे शरीरके टुकड़े-टुकड़े करके मैं कुत्तोंकेलिए डालदूंगा। मालोजी और हरिसिंह सोलंकी की मैं चटनी बनाडालूंगा। लाओ, मेरी ढाल और खड्ग। चलो, राजद्रोहियोंका मानमर्दन करनेचलो। (*हुँकारताहै।*)

कर्णसिंह—चलो, चलो। आज वीरपदभारसे भूमि कंपित होउठेगी। आज मालोजी और हरिसिंह सोलंकीका भाग्य नक्षत्र अस्ताचलकी ओर चलपड़ाहै। आज बनवीरका सिंहासन डोलने लगाहै। चलो! अब राजद्रोहियोंका निस्तार नहीं। यदि स्वयं भगवान् भास्कर भी आकर उनकी रक्षा करें तोभी वे उन्हें हमारे खड्गसे न बचासकेंगे।

रुद्र—

बढ़ो, बढ़ो हे वीरजनो! कर सिंहों-सा हुंकार!
कंपित करदो वसुधातल,
कंपित करदो जल औ थल,
कंपित करदो शत्रुजनोंको फैला हाहाकार ॥बढ़ो०॥

बढ़ो बढ़ो हे वीरजनो ! ले करमें खर तलवार ।
अरिगण मूली-सा काटो,
गिरि-कन्दर - घाटी पाटो,
शत्रु जनोंके रुंड-मुंड से । करदो अरि-संहार ।।बढ़ो०।।
रुद्रगणों-सा विकट वेशधर गरज-गरज हर बार ।
जयचंदोंको नष्ट करो,
वेन राज पद-भ्रष्ट करो,
नभमंडलमें, ,वसुधातलमें, फैले जयजयकार ।।बढ़ो०।।

(दूतका प्रवेश)

दूत—सामन्तशिरोमणि अखिलराव ! मुझे सेनापति कर्मसिंहने भेजाहै ! उन्होंने कहाहै कि आप दो सहस्र सुशिक्षित चुनेहुए सैनिक प्रस्तुत रखें। मैं किसी न किसी बहानेसे उन्हें दुर्गमें प्रविष्ट करवादूँगा ।

अखिलराव—बहुत अच्छा ! विजययात्राके पूर्व ही कितना उत्तम सन्देश मिला है ! हमारी विजययात्रा पूर्ण सफल होगी। भगवान् एकलिंगकी जय ! महाराणा उदयसिंहकी जय !

सब—भगवान् एकलिंगकी जय। महाराणा उदयसिंहकी जय।

(सबका जयजयकार करतेहुए प्रस्थान)

दृश्य—५

स्थान—चित्तौड़, शीतलसेनीका प्रासाद

मालोजी—मैं कैसे विश्वास करलूं कि शीतलसेनी ! तुम मुझे धोखा नहीं देरहीहो ? अन्यायका पक्ष समर्थन करने, विक्रमादित्यको सिंहासनसे उतारकर बनवीरको मेवाड़का

सम्राट बनाने, विक्रमादित्य और उदयसिंहकी कायरतापूर्वक हत्या करके, सबमें मैंने तेरे प्रेमकेलिए बनवीरका साथदिया। किन्तु जब अन्तमें तुम्हारा कार्य सिद्ध होगया, तुम्हें अपने मार्गमें कोई संकट न दिखाईदिया तब तुमने मुझे दूधकी मक्खीकी भाँति बाहर निकालफेंका। इतना ही नहीं तुम मेरी जिह्वातक उखाड़नेको प्रस्तुत होगई!

शीतलसेनी—यह सब तुम्हारे प्रेमकी परीक्षा थी, मालोजी! उस दिनसे पूर्व क्या तुमने कभी शीतलसेनीके मुखसे ऐसे कठोर शब्द सुनेथे? तुम्हें सोचनाचाहिएथा कि आज शीतलसेनी के मुखसे जो ऐसे कठोर शब्द निकलेहैं तो अवश्य इनका कुछ न कुछ कारण होगा।

मालोजी—कारण तो था ही। राजमाता बनजानेपर फिर तुम्हें मालोजीकी क्या आवश्यकता रहगईथी? छतपर चढ़ते समय जिस सोपानकी आवश्यकता होतीहै, छतपर चढ़जानेपर फिर कौन उसकी ओर दृष्टि डालताहै? अब फिर तुम्हारे ऊपर संकट आयाहै। एक-एक करके समस्त सरदार उदयसिंहसे जामिलेहैं। फिर मैंही क्यों तुम्हारा साथ देकर अपने प्राण संकटमें डालूं?

शीतलसेनी—तुमतो विश्वासही नहीं करते, मालोजी!

मालोजी—विश्वास कैसे करूं, राजमाता? अपने प्रेमकी परीक्षा देतेहुए कई वर्ष होगए, प्रत्येक कार्य करवाते समय तुम मुझे 'कल, कल' कहकर टालतीरही और मुझ मूर्खानन्द से अपना कार्य सिद्ध करवातीरही। अब मैं तुम्हारे झूठे प्रपंचोंमें पड़कर अपना विनाश नहीं करूंगा।

शीतलसेनी—फिर वही बात? न जाने हरिसिंह सोलंकी भी आज अबतक क्यों नहीं आया?

मालोजी—हरिसिंहतो अबतक उदयसिंहसे मिलने चलपड़ा होगा, शीतलसेनी ! उसने मुझे यहाँ भेजते समय कहाथा—'वायुकी गति देखकर कार्य करनाही बुद्धिमत्ता है। प्रवाहके प्रतिकूल जानेवालेकी सदा दुर्गतिही होतीहै।'

शीतलसेनी—हरिसिंहभी चलागया। जाओ मालोजी ! तुमभी चलेजाओ। मैंने अपने जीवनमें केवल तुम्हींसे प्रेम कियाथा। तुम्हींको अपना हृदय अर्पित कियाथा। जाओ, तुमभी जाओ। अभागिनी शीतलसेनीको जिस वीर मालोजीने राजमाता बनाया था वही वीर आज अपने कियेपर पानीफेरकर शत्रुसे मिलने जारहाहै। जाओ। उदयसिंहके डरसे अपने किएहुए उपकारको मिट्टीमें मिलादो, जाओ। (*आंसू डालतीहै*।)

मालोजी—तुमतो रूठ चलीहो, शीतलसेनी ? मैंने बनवीरका साथ दियाहै, प्राणान्त तक देतारहूँगा। अब प्राणोंके मोहसे स्त्री-पुत्रके कल्याणकेलिए शत्रुसे जामिलूंगा। अपने प्राणोंकी बाजी लगाकरभी बनवीरके सिंहासनकी रक्षा करूंगा; चाहे शीतलसेनी तुम मुझे अपना प्रेमपुष्प दो या न दो।

शीतलसेनी—हिंदुस्थानकी गौरवगाथामें तुम्हारा नाम सदा अमर रहेगा, मालोजी ? समृद्धिके समयमें जब वायु अनुकूल बहतीहो। स्वामीका साथदेनेवालोंकी कमी नहीं होती, किन्तु विपत्तिके समयमें जब वायु प्रतिकूल हो, सफलताके मार्गमें अनेकों कठिनाइयाँ पर्वतके समान अड़ीहों, जो स्वामीका साथ नहीं त्यागते उन्हींका जीवन श्रेयस्कर है।

(*बनवीरका प्रवेश*)

बनवीर—मां! अभी गुप्तचरद्वारा समाचार मिलाहै कि विद्रोहियोंकी विशाल वाहिनी अखिलरावकी अध्यक्षतामें मेवाड़के

जनपदोंपर अधिकार करतीहुई आगे बढ़रहीहैं। भोलेभाले ग्रामीणोंको संग्रामसिंहके नामपर बहकाकर शत्रु अपने पक्षमें कर रहेहैं। विद्रोहियोंकी सेनाका सर्वत्र आनन्दपूर्वक स्वागत किया जारहाहै। अब क्या कियाजाए ?

शीतलसेनी—घबरानेका कार्य नहीं, बनवीर! विपत्तियोंके मस्तकपर जो साहसपूर्वक पदार्पणकरके अग्रसर होतेरहतेहैं, सफलता उन्हींके चरण चूमतीहै। विपत्तिके सन्मुख न आनेपरभी जो उसकी छायामात्रसे ही कंपितहोकर साहस खोकर किंकर्तव्य बिमूढ़ होबैठतेहैं, उन कायरोंकेलिए वीरभोग्या वसुन्धरामें कोई स्थान नहीं। यदि जनपदोंपर विद्रोहियोंका अधिकार होभी गया तोभी चित्तौड़का दुर्ग तुम्हारे पास है, जिसमें बीस वर्षके लिए समस्त आवश्यक सामग्री संग्रहीत है। शत्रुके अनेक यत्न तुम्हारा बालभी बांका नहीं करसकते। दुर्गकी रक्षाका भार वीर श्रेष्ठ कर्मसिंहको सौंपो और विद्रोहियोंसे जनपदोंकी रक्षाकेलिए वीर मालोजीको दस सहस्र सैन्यके साथ भेजदो।

बनवीर—ठीकहै माँ! इस भयंकर कालनिशामें, मंझधारमें पड़ीहुई मेरी भाग्यनौका एकमात्र तुम्हारी कूटनीति नक्षत्रके आश्रयपर ही अवलम्बित है। (सबका प्रस्थान)

दृश्य ६

स्थान—मेवाड़का एक भाग, उदयसिंहका शिविर

अखिलराव—महाराणा उदयसिंहके दर्शनके लिए प्रजा श्रावणकी सरिताकी भाँति उमड़ीचलीआरहीहै। इतनी राज-भक्ति, इतना प्रेम, इतनी श्रद्धा, इतना उत्साह, इतना समारोह पहले कभी नहीं देखा। कई वर्ष पूर्व जब महाराणा संग्रामसिंहने राजस्थानके दलबलको लेकर विदेशी, विधर्मी बाबरको हिन्दु-

स्थानसे बाहर निकालकर देश-जातिको स्वतंत्र करने की इच्छासे कनुआकी ओर प्रस्थान कियाथा, उस समय जितने उत्साह, प्रेम और श्रद्धासे जनता उनके दर्शन करनेको उमड़ीथी उसी प्रकार आजकल जनता उमड़तीआतीहै। धन्य है उस नरेशका जीवन जो प्रज्ञाके इतने श्रद्धाप्रेमका भाजन बनताहै !

[नेपथ्यसे—'एकलिंग भगवानकी जय !' 'शिशोदियाकुलकी जय !' 'महाराणा उदयसिंहकी जय!'का तुमुल नाद। वाद्य-ढोल-शंखादिका शब्द]

(दो तीन ग्रामीणोंका प्रवेश)

प्र० ग्रामीण—भगवान् एकलिंगकी जय हो। मेवाड़के पचास गाँवोंकी पांच सहस्र जनता आबालवृद्धवनिता अपने श्रीमहाराणा का दर्शन करने आईहै। उनकी असीम श्रद्धाका ध्यान रखतेहुए उन्हें अवश्य दर्शन देनेकी कृपा करें, और अपनी श्रद्धानुसार जो तुच्छ भेंट ग्रामीण जनता लाईहै उसे स्वीकार करके अनुगृहीत करें। सहस्रों ऐसे स्वयंसेवक आएहैं जो श्रीमहाराणाकी ओर से युद्ध करनेको प्रस्तुत हैं।

उदयसिंह—अपनी प्रजाके इस अपार प्रेमको देखकर मेरा हृदय गद्गद् होगयाहै। प्रेमसे शरीर पुलकायमान होगयाहै। और नेत्रोंसे अश्रुधारा छूटनेलगी है। भगवान मुझे आप लोगोंके महान् प्रेमका भाजन बनाए रक्खे।

अखिलराव—महाराणा शिविरके बाहर सिंहासनपर विराजमान होतेहैं, जिन्हें दर्शन करनेहों, दर्शन करसकतेहैं, श्रद्धानुसार भेंट चढ़ासकतेहैं।

(सिंहासन लेकर सेवकका; उसके पीछे चार सैनिकोंके मध्य उदयसिंहका प्रस्थान। ग्रामीणोंका प्रस्थान।)

अखिलराव—कल दिनभर ग्रामीणजनता दस-दस, बीस-बीस सहस्रकी टोलियोंमें महाराणाके दर्शनको आतीरही। कल पांच लाख मुद्राएं तथा समस्त सैनिकोंकेलिए वर्षभरके लिए भोजन-सामग्री भेंटमें चढ़ीथी। सहस्त्र नवयुवकोंने स्वयंसेवकोंके रूपमें महाराणाके पक्षमें युद्ध करनेकेलिए अपनी सेवाएं अर्पितकीं। आजभी कई लक्ष भेंट चढ़ेगी। मालोजीके साथ युद्ध करनेकेलिए जो बीस सहस्त्रों सैनिक भेजेथे, उनका कुछ पता नहीं मिला।

(रुधिरसे लथपथ आहत कर्णसिंहका प्रवेश)

कर्णसिंह—अखिलराव! बड़ा भयंकर युद्ध होरहाहै। शत्रुके दस सहस्त्र सैनिक मालोजीकी अध्यक्षतामें प्राणोंका मोह त्यागकर भीषण युद्ध कररहेहैं। स्वपक्ष और विपक्षके सैनिकोंके शवोंसे रणप्रांगण आच्छादित होगयाहै। महाराणा संग्रामसिंहके जीवनकालमें जैसे प्रचंड युद्ध देखेथे उसी प्रकारका-सा प्रचंड युद्ध होरहाहै। किस पक्षकी विजय होगी कहा नहीं जासकता।

अखिलराव—अभी प्रातः मैंने दो सहस्त्र ग्रामीण स्वयंसेवक भेजेथे, उन्होंने रणप्रांगणमें क्या किया?

कर्णसिंह—उनके कार्यकी बात न पूछो। ग्रामीण और युद्धसे विशेष परिचित न होनेपर भी उन्होंने ऐसी प्रचंड वीरता दिखलाई कि शत्रुपक्षमें भगदड़ मचगई। उन ग्रामीणोंको खड्गका आघात और बाणोंकी वर्षा तो मच्छरके डंकसे अधिक कष्टदायी नहीं प्रतीतहुई। सर्वांगसे गिरतीहुई रुधिरधाराकी उपेक्षा करतेहुए वे रणस्थलमें मत्त मातगों-से घूमतेरहे।

(उदयसिंह, और सैनिकोंका, तथा सिंहासन लेकर सेवकका प्रवेश)

सेवक—सामन्तशिरोमणि अखिलराव! लगभग दो लाख

मुद्रा, अनेकों रत्न और सुवर्ण भेंटमें चढ़ेहैं। सहस्र नवयुवकोंने महाराणाकी ओरसे शत्रुसे युद्ध करनेका प्रण किय है।

अखिलराव—उस समस्त द्रव्यको राजकोषमें जमा करदो।

सेवक—बहुत अच्छा। *(प्रस्थान)*

(मालोजीका शिर लेकर हुँकारतेहुए साहीदासका प्रवेश)

साहीदास—*(मालोजीका शिर उदयसिंहके चरणोंमें चढ़ाकर)* यह लीजिए महाराणा! आपके शत्रुके एकमात्र सहायक वीर मालोजीका शिर है। इस वीरकी वीरताको देखकर हमारे पक्षके समस्त सैनिक आश्चर्यचकित होगये। इसने आजके युद्धमें हमारे पक्षके लगभग सौ वीरोंको धराशायी कियाहै।

अखिलराव—और वह सोलंकी कुलकलंक हरिसिंह कहाँ गया?

साहीदस—गुप्तचरोंसे ज्ञातहुआहै कि उसनेभी बनवीरका पक्ष त्यागदियाहै और महाराणाके पक्षमें युद्ध करनेकी इच्छा प्रकट कीहै।

(हरिसिंह सोलंकीका प्रवेश)

हरिसिंह—भगवान एकलिंगकी जय! *(उदयसिंहके सिंहासनके सन्मुख जाकर खड्गसे प्रणाम करताहै।)* मैंने बनवीरका पक्ष त्यागदियाहै, महाराणा! मैं आपके शुभ विग्रहमें उपस्थित न होसका, मेरा अपराध क्षमाकरो।

अखिलराव—इसका क्या प्रमाण है कि तुम सच्ची भावनासे हमारे पक्षमें आरहेहो, हरिसिंह?

हरिसिंह—इसका प्रमाण यह वीर कर्मसिंहका पत्र है, अखिलराव!

अखिलराव—(पत्र पढ़ताहै।) श्रीमहाराणके चरणोंमें कर्म-सिंहका अभिवादन। मैंने नवीन सैन्यसंग्रह करनेकलिए बनवीरकी स्वीकृति प्राप्त करलीहै। बनवीर चित्तौड़ दुर्गका द्वार रुद्धकरके घेरेकेलिए प्रस्तुत है। दुर्गमें कमसे कम बीस वर्षके लिए पर्याप्त सामग्री है, और दुर्गपर अधिकारकरना सामान्य कार्य नहीं है। कल मध्यान्हको मैं नवीन सैन्यके प्रवेशके बहाने दुर्गका द्वार खोलूंगा। उस समय आपने अपने चुनेहुए दो सहस्त्र वीरोंको दुर्गमें प्रविष्ट करादेना, और निकट ही अपना शेष सैन्य छिपाकर प्रस्तुत रखना। भगवान एकलिंग अवश्य सफलता देगा।

निवेदक

शिशोदियाकुल-सेवक कर्मसिंह

उदयसिंह—यह तो अति सुन्दर युक्ति है। सामंतवीरो! आज ही सारी आयोजना होजानी चाहिए।

अखिलराव—जो आज्ञा।

(पट)

दृश्य ७

स्थान—चित्तौड़, दुर्गका एकभाग

शीतलसेनी—मालोजी! मेरे कपटप्रेमका विचार न करके तुमने अपने प्रेमकी सत्यताको सिद्ध करतेहुए मेरे और बनवीरके हितकेलिए अपने अमूल्य प्राणोंका विसर्जन करदिया। तुम-जैसा उदारहृदय,स्वामिभक्त और निस्वार्थ प्रेमी हिन्दुस्थानभरमें दूसरा नहीं हुआ। अभागिनी शीतलसेनीने तुम्हारे जीवनमें तुम्हारे महत्व को नहीं समझा। वह स्वार्थके तराजूपरही तुम्हारे कार्य और प्रेम का, त्याग और वीरत्वका, साहस और सत्यताका मूल्य आंकती रहीहै। आह! यदि मैं तुम्हें एक बार जीवित पाजाती तो मालोजी!

कभी तुम्हारे हृदयको निराश न करती। हाय! मालोजी! मुझे अपने कपटाचारका फल आपही मिलगया। (*रोतीहै।*)

(*बनवीरका प्रवेश*)

बनवीर—मां! तुम रोरहीहो।

शीतलसेनी—हां पुत्र! बनवीर! मालोजीके अपूर्व त्यागका स्मरणकरके मेरी छाती फटतीहै। जब प्रत्येक सामन्तने शीतल-सेनी और बनवीरका पक्ष त्यागदिया, जब मेवाड़के प्रत्येक जनपद की जनता उत्साहपूर्वक विद्रोहियोंसे जामिली, जब बनवीरका पक्षलेनेका अर्थ स्पष्टरूपसे अपना पतन निकट बुलाना होचुकाथा, उस समय मालोजीने बनवीरकी ओरसे रणभूमिमें पदार्पण करके वीरतापूर्वक शत्रुओंका विनाशकिया और अपने स्त्रीपुत्रोंके भविष्यका विचार न करतेहुए अपने स्वामीके हितार्थ अपने प्राणों की भेंट चढ़ादी।

बनवीर—मालोजी-सा निःस्वार्थ, स्वामिभक्त सामन्त मिलना कठिन है, मां! अब अकेला कर्मसिंह क्या करेगा?

शीतलसेनी—धैर्य रखो, बनवीर! विपत्ति-बादल-पटलसे आच्छादित होजानेपर भी केवल भास्करही अपने तेज-प्रकाशको अक्षुण्ण बनाएरखसकताहै। दुर्गके फाटकोंको दृढ़तापूर्वक बन्द करवादो। दुर्गकी प्राचीरोंपर चारों ओर सुदृढ़ तोपोंको लगाकर विश्वासपात्र सैनिकोंको बिठादो, और निःशंक होकर दुर्गमें रहो। दुर्गमें कमसे कम बीस वर्षतककेलिए पर्याप्त सामग्री है। भूमिके नीचे गुप्त धनागारोंमें असंख्य द्रव्य पड़ाहुआहै। आनन्द से बीस वर्ष बितालो। तबतक न जाने कितने उलटफेर आतेहैं, जो मूर्ख जनता आज बरसाती मक्खियोंकी भांति दूर-दूरसे भाग-कर उदयसिंहको घेरकर उसकेसाथ चली आरहीहै, बीस वर्षके लम्बे अवसरतक वह उसका साथ न देसकेगी। जनता दूधकी

ऊफानकी भांति क्षणिक आवेशमें आकर अर्थ-अनर्थ कर बैठतीहै, ऊफान-आवेशके शान्त होतेही फिर वह शीतलमधुर दुग्धकी भांति सुस्वादु बनजातीहै। जनताकी भेड़चालको देखकर जो क्षणमें घबराबैठतेहैं वे अन्तमें हाथ मल-मलकर पछताते हैं। इस दुर्गम, सुदृढ़ दुर्गममें निर्भय होकर बैठेरहो। आनन्द उड़ाओ। पराजय या अनिष्टकी आशंकाभी निकट न आनेदो। एक उदयसिंह क्या, सौ उदयसिंह तुम्हारा बालभी बांका नहीं करसकते।

(*नेपथ्यमें 'एकलिंग भगवानकी जय! शिशोदियाकुलकी जय! मातृभूमि मेवाड़की जय!'का तुमुलनाद।*)

शीतलसेनी—यह प्रचण्ड जयघोष कौन कररहाहै?

बनवीर—कर्मसिंहने दो सहस्र नई सेना भरती कीहै। उसने आज मध्यान्हको दुर्गमें प्रविष्ट होनाथा। यह वही सैन्य है। नवीन सैन्यके आजानेसे हमें पर्याप्त सुविधा रहेगी।

(*नेपथ्यमें 'एकलिंग भगवानकी जय! 'महाराणा उदयसिंहकी जय!' 'अत्याचारी बनवीरका नाश हो' का तुमुलनाद।*)

शीतलसेनी—यह तो शत्रुओंका जयनाद है, बनवीर! सुनो तो।

(*नेपथ्यमें 'महाराणा उदयसिंहकी जय! अत्याचारी बनवीरका नाश हो।'*)

बनवीर—तो मां क्या शत्रु दुर्गमें प्रवेश करगए? अब क्या उपाय होसकताहै?

(*नेपथ्यमें 'यही बनवीरका प्रासाद है।' 'भस्म करडालो।' 'मारडालो। 'वन्दी बनालो' का तुमुलनाद।*

शीतलसेनी—भगवान! क्या तुम्हे एक विधवा अबलासेभी ईर्ष्या होगई? (*भागकर द्वार बन्दकरनेका प्रयत्न करतीहै। विद्रोही*

सैनिक धक्का देकर द्वार खोलदेतेहैं ।) बनवीर ! बनवीर ! क्या देखतेहो ? खड्ग, खड्ग ? क्या सोच रहेहो ? उठाओ खड्ग ।

(*बनवीर खड्गलेकर विद्रोही सैनिकोंपर आक्रमणकरके तीन-चारका बध करडालताहै ।)*

(*अखिलराव और साहिदासका प्रवेश*)

अखिलराव—व्यर्थ प्रयत्न न करो, बनवीर ! अल्पकालके लिए मेवाड़के सिंहासनका प्रतिनिधि बनाएजानेपर बर्बरतापूर्वक कारागारमें निशस्त्र विक्रमादित्यकी हत्या करनेवाले पामर ! और माताके सन्मुख उसके अबोध बालकके वक्षस्थलमें खड्ग घुसाने वाले आततायी राक्षस! तुझे उसी कारागृहमें बन्दी बनाकर डालाजायगा, जिसमें विक्रमादित्यको डालागयाथा ।

(*बनवीरको बन्दी बनाताहै ।*)

साहीदास—राजमदसे अन्धे होकर प्रजापर अत्याचार करने वाले दम्भी ! पंचमपुत्र होकर शुद्धरक्तोत्पन्न सामन्तोंको दूना भेज-कर तिरस्कृत करनेवाले नरपिशाच ! तेरे कुकृत्योंका फल तुझे आजही प्राप्तहोगा।

कर्णसिंह—और ऊच्च शिशोदियाकुलमें गृहकलहकी अग्नि धधकानेवाली कुटिल मंथरा ! महत्वाकांक्षाके मदमें गर्वित शीतल-सेनी ! तुझे जीवितही कुत्तोंसे कटवायाजायगा ।

हरिसिंह—प्रेमका पाखंड रचकर नवयुवकोंको पथभ्रष्ट करने वाली चांडालिनी ! तुझे तेरे अभिमानका प्रतिफल चखानेकेलिए अभी हरिसिंह जीवत है । देखले, वह बुड्ढा खुर्राट, जिसके बाल पकगए और गाल पिचकगए क्या करसकताहै । (*शीतलसेनीके वक्षस्थलमें खड्ग घुसा देताहै ।*) उखाड़, इसकी जिह्वा उखाड़ !

शीतलसेनी—देखलिया। और दिखादिया कि उपले बनाने वाली निर्धन असहाय अबला भी कुछ करसकती है । निस्सहाय

विधवा अवलाके सतत प्रयत्नोंसे सृजित सुखस्वप्नको नष्ट करने वाली! पृथ्वीराजके अग्नितेजको हटाकर आज तुम जिस धायपुत्र को चित्तौड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठित कररहेहो, उस कार्यके स्पर्शपापसे वीरभूमि चित्तौड़ सदाकेलिए पावन शिशोदियाकुलसे छिनजाएगी। जाओ। (मृत्यु)

(उदयसिंहका प्रवेश)

उदयसिंह—और तू नरपिशाच! देख, जिसकी हत्याकरनेके लिए तू अर्द्धनिशामें खड्ग उठा चुपके-चुपके अन्तःपुरमें प्रविष्टहुआ था, वह तेरे अत्याचारोंका प्रायश्चित्त करनेकेलिए, विक्रमादित्य और चन्द्रकी निर्मम हत्याका प्रतिशोध लेनेकेलिए, अबभी जीवित है। प्रस्तुत होजा अपने अन्यायोंका फलपानेकेलिए। यह तेरा खड्ग जिसे तूने विक्रम और चन्द्रके वक्षस्थलमें घुसेड़ाथा, आज तेरेही वक्षस्थलमें उतनीही निर्दयतापूर्वक घुसेगा और त्रैलोक्यमें कोईभी तेरी रक्षा न करसकेगा।

बनवीर—एक भूल, केवल एक क्षुद्र भूल जिसने मेरा और मेरी माताका सारा बनाबनाया खेल बिगाड़दिया। आह! यदि मैं उस दिन इस सारे उत्पातोंकी जड़ पन्नाका शिर भी उड़ादेता तो आज······

उदयसिंह—देखा, इस बलिके पशुको! अपने शिर उड़नेकी बात भुलाकर पन्नाके सिर उड़ानेकी कल्पना? प्रस्तुत होता।

(खड्ग उठाताहै।)

(तपस्विनीके वेश में पन्नाका प्रवेश)

पन्ना—(*उदयसिंहका खड्ग पकड़कर*) क्षमा करो, उदय! आततायी अपने जीवनभर अपने कुकृत्यका प्रायश्चित्त करे! इसे मुक्तकरदो। आज अपने राजतिलकोत्सवके अवसरपर अपने हाथसे इस शिशोदियाकुलांगारका रक्त न बहाओ।

उदयसिंह—माँ! इसने विक्रमादित्य और चन्द्रकी निर्मम हत्या कीहै।

पन्ना—तबही तो इसे क्षमा करना चाहिए, पुत्र! आततायी को क्षमाकरना सबसे बड़ा दंड है, उदय!

उदयसिंह—मां! आपकी आज्ञा नहीं टालसकता। बनवीर! जाओ, तुम मेवाड़से निर्वासित हो।

पन्ना—

न्याययुक्त गो-ब्राह्मण-वसुधा-पालक नृपजनका कल्याण।
हो, सुवृष्टि धनधान्यपूर्णहो देश, क्लेशसे हीन, महान्॥

(उदयसिंह और बनबीर पन्नाके चरणोंमें झुकतेहैं। पन्ना दोनोंके सिरपर हाथ रखतीहै।)

(पटाक्षेप)